

प्रेत मञ्जरी

॥ अथ भाषाटीकासहिता प्रेतमञ्जरी प्रारभ्यते ॥

संस्करण : जनवरी २००६, सम्वत् २०६२

मूल्य : ५० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass, Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.



संस्करण : जनवरी २००६, सम्वत् २०६२

मूल्य : ५० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass, Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.



मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविश्वनाथाय नमः ॥ रामानुजं नमस्कृत्य जगदीशं जगद्गुरुम् ॥ क्रियते बालबोधाय भाषा च प्रेतमञ्जरेः ॥ १ ॥ छोटुमिश्र हयग्रीवभगवानको नमस्कार करिकै प्रेतमञ्जरी जो है उसको संक्षेपमें अनेकप्रकारकी स्मृति जे हैं तिनके अनुबन्धको विचार करिके बालकोंके बोधके लिये

श्रीगणेशाय नमः ॥ नमस्कृत्य हयग्रीवं जगत्कारणकारणम् ॥ क्रियते छोटुमिश्रेण संक्षिप्ता प्रेतपद्धतिः ॥ १ ॥ नानास्मृतिनिबंधानां मतमालोक्य धीमताम् ॥ लिखामि बालबोधाय श्राद्धपद्धतिमुत्तमाम् ॥ २ ॥ अथ प्रेताधिकारिणः कथ्यंते ॥ पुत्रः पौत्रः प्रपौत्रो वा भ्राता वा भ्रातृसंततिः॥सपिंडसंततिर्वापि क्रियार्हो नृप जायते ॥ ३ ॥ तेषामभावे सर्वेषां समानोदक

उत्तमश्राद्धकी विधि जो है तिसको कहतेहैं ॥ २ ॥ अब प्रेतकर्मका अधिकार कहतेहैं । हे राजा ! पुत्र पौत्र पनातीभी होय अथवा भाई होय भाईकी कन्या पुत्र होय अथवा सपिंडकुलका होय तो प्रेतक्रियाके योग्य है ॥ ३ ॥ तिनसबके अभावमें समानगोत्र भी क्रि

याके योग्य है सात पुस्तितक पिंडदानके योग्य हैं सात पुस्तिसे पिंडदान न देनाचाहिये ॥ ४ ॥ चौदह पुस्तितक जलकी क्रिया करना चाहिये पुत्रको उचित है कि, पिंडदान अरु तर्पण बापका करै ॥ ५ ॥ पुत्र नहीं होय तो उसकी स्त्री करै स्त्री न होय तो सगा भाई

संततिः ॥ सपिंडता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते ॥ ४ ॥ समानोदकभावस्तु निवर्तेताचतुर्दशात् ॥ पितुः पुत्रेण कर्तव्या पिंडदानोदकक्रिया ॥ ५ ॥ पुत्राभावे तु पत्नी स्यात्पत्न्यभावे सहोदरः ॥ उच्छिन्नत्यक्तबंधूनां कारयेदवनीपतिः ॥ ६ ॥ तथा च मनुः ॥ पित्रोर्मरणकाले तु न चेत्स्यात्सन्निधौ सुतः ॥ अन्यः कुर्याद्दशाहं च न च सर्वं कदाचन ॥ ७ ॥ अथ प्रेतमेधवि

और भाईबन्धु नहीं होंय तो धर्म है कि, राजा उसकी क्रिया करवादे ॥ ६ ॥ तथा मनुस्मृतिका प्रमाण कहताहूँ पिता अरु माताके मरणसमयमें जो पुत्र समीप न होवे तो अन्य पुरुष दशाहांत कर्म करै और सब कोई सबदिन न करै ॥ ७ ॥ अथ प्रेतविधि

कहते हैं ॥ जो मेध कहीजाती है ॥ तिसका विवरण कहताहूं ॥ वह वैतरणी
नदी तरनेके वास्ते यह दानविधि कहतेहैं ॥ तत्र विधिः ॥ अब जानना कि मरनेके योग्य पु
रुष होगया तो गऊके गोबरसे पृथ्वीको लिपाइके ऊपर कुश बिछाइके उसके ऊपर पौढायदेय

धिस्तत्कृत्यकर्तव्यता च लिख्यते॥तत्र प्राणप्रयाणसमये वैतरणीनदीतरणदानम्॥तस्य वि
धिः॥तत्र सन्निकृष्टमरणं ज्ञात्वा गोमयोपलिप्तायां भूमौ कुशैराच्छादितायां तदुपरि निदध्या
त् ॥ उत्तरशिरस्को दक्षिणहस्तेन कुशं नीत्वा वैतरणीतरणाय गां दद्यात् ॥ तत्र प्राङ्मुखः
कृताचमनः ॥ देवब्राह्मणान्संपूज्य ॥ कुशत्रयमादाय ॥ अद्येत्यादीतिवाक्यमुच्चार्य वैत
रणीनदीतरणकामः इमां कृष्णां गां रुद्रदैवतां यथालंकारसहिताममुकगोत्रायामुकश

और उत्तर दिशाको शिर करिके दहिने हाथमें कुश देइ वैतरणीनदी तरनेकेवास्ते उसके हाथसे
गऊका दान देवाइदेय और पूर्वमुख आचमन करिके देवता और ब्राह्मणनकी पूजा करिके

प्रे. मं. तीनि कुशोंको लेके अद्येत्यादिवाक्यको पढिके ब्राह्मणको दक्षिणा देना फिर कृष्णागौ इति इस मंत्रको पढिके भा. टी.
सांगता देय तब गऊका दानलेनेवाला 'कोदात्' यह मंत्रको पढै फिर उष्णेवर्षेति यह मंत्र पढिके वैतरणीको स्मरण
॥ ३ ॥ र्मणे ब्राह्मणायाहं संप्रददे ॥ अथ दक्षिणादानम् ॥ कृष्णागोदानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं दक्षिणां
हिरण्यमग्निदैवतं तन्मूल्योपकल्पितं द्रव्यं वा तुभ्यमहं संप्रददे ॥ उभयत्र स्वस्तीति
पठेत्॥ततो गोग्रहीता कोदादिति मन्त्रं पठेत्॥उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वातिवर्षति॥दुर्गं
तारयतेयस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृता ॥१॥ यमद्वारपथे घोरे घोरां वैतरणीं नदीम् ॥ तर्तुकामः
प्रयच्छामिकृष्णां वैतरणीं चगाम्॥२॥दक्षिणयासहदद्यात्॥मोक्षं देहि हृषीकेशमोक्षं देहिज
गत्पते ॥ मोक्षधेनुप्रदानेन श्रीकृष्णस्तु प्रसीदतु॥३॥ अन्यदपि यथाशक्ति गोहिरण्यादिकं
च दद्यात्॥एवं निरूप्य पुत्राद्यधिकारी गतप्राणं शवं ज्ञात्वा दहेत ॥ तत्र दाहप्रक्रिया॥ततो
करे और गऊ सोना पृथ्वी जो कुछ बनिपरै सो ब्राह्मणकोदेय इसप्रकारसे विचारिके तो प्रेतको दग्ध करै मरिजावै ॥ ३ ॥

तब क्रियाकी विधि कहतेहैं मरे पीछे देहको धोवै माटी लगावै तौ सोनेके सात कुटका लैकै मुँहमें एक १ नासिकामें २ नेत्रमें २ कर्णमें २ धरना उसके बाद कपडा पहिराइ चन्दन माला फूल आदि शरीरमें लगाइके

गतप्राणस्य मृत्तिकातोयाभ्यां देहं प्रक्षाल्य स्नापितस्य सप्तकनकखंडानि मुखे कर्णद्वये नेत्रद्वये नासापुटद्वये च सप्तसु छिद्रेषु प्रक्षिप्य सुवर्णखंडं मुखे प्रक्षिपेदिति वा॥परिधापित वस्त्रं ब्राह्मणस्य सोपवीतं स्रक्चंदनादिभिर्विभूषितं तच्छरीरमाज्येनाभ्युक्ष्य पुत्रादि भिः पवित्रभूभागे चंदनोत्तमादियज्ञियकाष्ठैश्चितां रचयित्वा तस्योपरि पुरुषमधोमुखमुद क्छिरसं च निदध्यात्॥नारीं तूत्तानदेहामुत्तरशिरस्कां च स्थापयेत्॥तत्र पुत्रादिः स्नानं कृ त्वा नूतनवस्त्रादि परिधायापसव्येनाग्निमादाय दक्षिणमुखोमंत्रमुदीरयेत् ॥ कृत्वासुदु

उसके शरीरको घृत लगावना और उसको उत्तम पवित्र जमीनमें उत्तम काठकी लकडीकी चिता

 बनाइ उसके ऊपर नीचेको मुँहकरिकै पुरुषको और स्त्रीका ऊपरमुँह करिकै स्नान करिके
 वस्त्रधारण करिके अग्निलगाइदेइ जो दारिद्री होइ तोभी विना वस्त्र दग्ध नहीं करना को

ष्करंकर्म जानता वाप्यजानता ॥ मृत्युकालवशं प्राप्य नरं पंचत्वमागतम् ॥१॥ धर्माधर्म समायुक्तं लोभमोहसमावृतम् ॥ दहेयं सवर्गात्राणि दिव्याँल्लोकान्सगच्छतु॥२॥अस्मात्त्व मभिजातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः ॥ असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहाज्वलति पावके॥३॥ एवमुक्त्वा शिरःस्थाने वह्निं दद्याद्विचक्षणः॥दारिद्रोपिनदग्धव्यो नग्नः कस्यांचिदापदि॥४॥ केनापिवस्त्रखंडेनच्छादितव्यः प्रयत्नतः ॥ यत्र तत्र भवेद्दुःखी यदिनग्नस्तुदह्यते ॥५॥ निःशषस्तुनदग्धव्यः शेषंकिंचित्त्यजेत्ततः ॥ असौस्वर्गलोकाय स्वाहा ॥ द्वितीयमंत्रः ॥

ईभी वस्त्र पहिराइकै दग्ध करावना यह धर्म हैं नहीं तो जहां जन्मैं तहां दुःखी हो इ ॥ ५ ॥ संपूर्ण दग्ध न करिकै किंचित शेष रहिजाय तो छोडदेना और यह मंत्रकरिके

और द्वितीयमन्त्र करिकै ज्वलदग्निकदान जो शेष बचे सो जलमें फेंकिदेई फिर क्रव्यादाय य
ह मन्त्रकरिकै मृतकको प्रदक्षिणा करिकै सात लकडी चितामें छोडदेई फिर तृण काष्ठ घृत

क्रव्यादमग्निंप्रहिणोमिदूरंयमराज्यंगच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहैवायमितरोजातवेदादेवेभ्योह
व्यंवहतुप्रजानन्स्वाहा ॥ तूष्णींवा ॥ इमंमंत्रमुदीर्यशीघ्रंप्रदक्षिणांविधायाशिरोदेशे
ज्वल दग्निदानम् अवशिष्टंशरीरभागमंभसिक्षिपेत् ॥ ततः ॥ क्रव्यादायनमस्तुभ्यमितिमंत्रे
णशवंप्रदक्षिणीकृत्यचितायां सप्तसामिधः क्षिपेत ॥ ततः तृणकाष्ठादि घृतंपरिक्षिप्य
दग्ध्वाकिंचिदवशेषयेत् ॥ अथ पर्णशरदाहविधिः ॥ अथाचारान्निरग्नेरस्थिपर्ण
शरदाहः ॥ दाह्यशरीरालाभे तदस्थि घृतेनाभ्यज्य वस्त्रेणाच्छाद्य दहेत्पूर्ववत् ॥

छांडिके जरेसे जो कुछ शेष बचगई उसको फिर पर्णशर दाहविधि कहते हैं अब आचारपूर्वक अग्नि
करिकै पूर्णदग्ध भस्मसे बची जो ह तिसको घृतसे सींचके वस्त्रसे आच्छादितकरि प

हिले मुजब दग्ध करि जो हड्डी न होय तो ३६० पलाशके पत्ता पुरुष आकार बनाइके यंह मंत्रसे दग्ध करि प्रथम तो शिरको निवेश्य फिर दोनोंजंघा शरखंड करिके और कृष्णसारमृगके

अस्थ्यलाभेषष्ट्यधिकपलाशपत्रशतत्रयेण ॥ ३६० ॥ पुरुषाकृतिंविन्यस्यासौस्वर्गाय लोकायस्वाहेतिदहेत् ॥ प्रथमतः शिरोनिवेश्य शरखण्डद्वयेन जंघाद्वयं कृष्णसारचर्मोपरि ऊर्णासूत्रैर्ग्रथितैः पलाशपत्रैर्वृन्तैर्वाविेष्ट्य शिरः यवचूर्णेन विलिप्य कृष्णसारचर्मणाच्छा द्यपूर्ववद्दहेत् तद्विन्यासप्रकारस्तु शिरस्यशीत्यर्द्धंदेयाद्ग्रीवायांचदशैवतु ॥ बाह्वोश्चैवशतं दद्यादंगुलीषुतथादश ॥ उरसित्रिंशतंदद्याद्विंशतिंजठरेतथा ॥ अष्टार्द्धंशिश्नकेदद्याद्द्वादशा र्द्धंचमुष्कयोः ॥ ऊर्वोश्चैव शतं दद्यात्रिंशतं जानुजंघयोः ॥ पादांगुलीषुदशदद्यादेत

चर्मसे और ऊनवस्त्र करिके पलाशके पत्तासे वेष्टित करि शिरमें जवको आटा लेपितकरि कृष्णसारके चर्मसे आच्छादन करिके पहिले मुजब दग्ध करि शिरमें ४० ग्रीवामें १० बाहूमें १००

अंगुलीमें १० छातीमें ३० उदरमें २० शिश्नमें ४ मुष्कनमें ५ ऊरुवोंमें १०० जानु और जंघामें ३० पादकी अंगुलिनमें १० यह प्रेतके विकल्पन कहते हैं एही प्रकारसे पर्णशर दाहको करिके तीनरात्री में शुद्ध होना योग्य है यह पर्णशरदाहविधि है और चिताको न देख जलाशयको जाके

त्प्रेतविकल्पनम्॥एवंपर्णशरंदग्ध्वात्रिरात्रमशुचिर्भवेत्।इतिपर्णशरदाहविधिः॥ अथचिताम पश्यञ्जलाशंय प्रति सर्वबालानग्रेनीत्वायमगाथांगायमानागच्छेयुः॥ यमगाथायथा--अहर हर्नीयमानोगामश्वंपुरुषंपशून्॥ वैवस्वतोनतृप्येतसुराभिरिवदुर्मतिः, इति। तज्जलांतरेसर्वे एकवस्त्रा एकवारं निमज्जेयुस्तत्र स्नात्वाचम्यापसव्यं कृत्वा द्विगुणभुग्नकुशत्रयेणपितृती

सब बालकोंको आगे लेके यमके चरित्रोंको गाते हुये स्वस्थानको चलें यमके चरित्र यथा अहरहरिति। इसगाथाको कहकर जलके मध्यमें एक वस्त्रसे एकवार जलमें डूबजावे तहां स्नान कर आचमन करिकै अपसव्यहोके तीन कुश लेके पितृघटमें प्रेतको ध्यान करिकै अमु

कगोत्रं तर्पयामि ऐसा पढिकै तर्पण करना और भिन्न प्रयोग कहते हैं, तिलयुक्तहोके तर्पण करना योग्य है पुत्र आदि सर्व जननको उचित है. क्रम करिके अमुकगोत्रेति यह मन्त्र पढिके दक्षिणमुखहोके तिलयुक्त जलांजलि सब कोई देई तदंतमें

थैंनप्रेतमनुध्यायन् अमुकगोत्रममुकशर्माणंप्रेतंतर्पयामीतिप्रयोगः ॥ अथभिन्नप्रयोगः ॥ तिलसहितांजलिं दद्युः सर्वेपुत्रादयःक्रमादिति अमुकगोत्रामुकप्रेत एषतिलतोयांजलि र्मद्दत्तस्तवोपातिष्ठताम् ॥ दक्षिणाभिमुखाएकैकंसातिलमुदकांजलिंसर्वेदद्युःततोजलादुत्तीर्य वस्त्रंपरिधाय गृहंप्रविशेत् ॥ अथ गृहाभ्यंतरेबाह्येवा दीपदानवाक्यंसघृतेनातिलतैलेन वा अपसव्येन अद्यामुकगोत्रामुकप्रेत यममार्गानुसंतरणघोरांधकारनिवारणकामोऽद्यारभ्य

फिर जलके बाहर होके वस्त्रको धारण करिके अपने गृहको प्रवेश करै फिर गृहके अभ्यंतर या बाह्य दीपदान करना तिसका वाक्य घृत या तिलका तेल भरिके अपसव्य होके अमुकगोत्रेति यह

मन्त्र पढिके द्वितीय दिनसे दश रात्रिपर्यंत प्रातः सायंकालमें पिप्पलके समीप जल और दीपक का दान देना योग्य है और पिप्पलकी शाखामें जल करिकै पूरित घडाको राखै तिसका वाक्य अमुकगोत्रेति पढिके जल अर्पण करै फिर सायंकालमें दीपदानमें वाक्य पढै अद्याशौ-

दशदिनपर्यंतमनिशंतिलतैलबोधितवर्तिसंयुक्तएषदीपः प्रज्वालितोमद्दत्तस्तवोपातिष्ठताम् ॥ अथ द्वितीयदिनमारभ्यदशरात्रावच्छिन्नप्रातःसायंकालेपिप्पलसमीपेजलदीपदानंदद्यात् ततोऽश्वत्थशाखावलंबितजलपूर्णघटवाक्यम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेत एष त्वद्गताध्वताप श्रमनिवर्तकोऽशौचांतादिनपर्यंतमश्वत्थशाखावलंबितजलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीय ते तवोपतिष्ठताम् ॥ सायंकालिकवाक्यम् । अद्याशौचान्तदिनपर्यंतममुकगोत्रामुकप्रेतय ममार्गानुसंतरणघोरमिश्रांधतमःसंतरणकामः पिप्पलसमीपेएषदीपोमद्दत्तस्तवोपाति

चान्तेति इस वाक्यको पढिके पिप्पलकेसमीप दानकरै और भाइयोंको उचित है कि, साथमें

प्रे. मं. ॥ ७ ॥

जायँ नदी हो अथवा तलाव हो उहाँ जाके दशरात्र आत्मशुद्धिके लिये दिनदिन स्नान करै जलक्रियाकरैं विना लोनका एकवार भोजन करैं अपने हाथका ॥ अथ पिंडदानप्रक्रिया ॥ और अन्य गोत्र हो या स्वगोत्र हो स्त्री हो अथवा पुरुष हो प्रथम दिन जो पिंडदान दिया उसको दश

ष्टताम् ॥अथ बांधवैः सहतडागेनद्यादौवागत्वादशरात्रमात्मशुद्ध्यर्थंप्रत्यहं स्नानं च कुर्यात्। क्रियामुपविशेत् अलवणमेकवारमेकभुक्तंस्वयंपाकम्॥अथ पिंडदानप्रक्रिया ॥ अन्यगोत्रः सगोत्रोवा नारीवायदिवापुमान्॥प्रथमेहनियोदद्यात्सदशाहंसमावपेत् ॥ शालिनासक्तुभिर्वा पिशाकैर्वापिचानिर्वपेत् ॥प्रथमेहनियद्द्रव्यं तदेवस्याद्दशाहिकम् ॥२॥ षोडशश्राद्धानितुपुत्रे णैवकर्तव्यानीतिसिद्धम्॥प्रथमेचतृतीयेवापंचमेसप्तमेतथा ॥नवमेदशमेचैवपिंडदानंप्रकीर्ति

दिनपर्यंत देना योग्यहै शाली जडहनके चावल हों वा सक्तु हो या शाकहो जिसका प्रथम दिन पिण्ड दे उसीसे दशदिनपर्यंत करना योग्य है और षोडशश्राद्ध तो पुत्र करिकै कर्तव्य हैं

भा. टी. ॥ ७ ॥

स्त्री और पुरुष दोऊको जो एक चितामें दग्ध किया होय तो उसकी क्रियाका पाक तो एकत्र बनाना अरु पिंडदान पृथक्पृथक् करना योग्य है अन्नको सिद्ध करिके पवित्र भूमिमें कुशके ऊपर पिंडदान करि अद्यामुक गोत्रेति यह मन्त्रको पढिके पिंडदानकी प्रतिज्ञाको करिके इसी

तम् ॥ १ ॥ वृद्धगार्ग्यः ॥ पतिंपत्नीसमायुक्तंदहत्येकहुताशने ॥ पाकमेकंप्रकुर्वीतपिंडं दद्यात्पृथक्पृथक् ॥ सिद्धमन्नंकृत्वाशुचौभूभागेकुशोपरिपिंडंदद्यात् ॥ अद्यामुकगोत्रस्या मुकप्रेतस्यप्रथमादिनसंबंधिशिरःपूरकपिंडदानादिक्रियामहंकरिष्ये एवं सर्वमंत्रप्रतिज्ञांकृत्वा शिरस्त्वाद्येनापिंडेनप्रेतस्यक्रियतेसदा ॥ द्वितीयेनतुकर्णाक्षिनासिकाश्चसमासतः ॥ गलां

प्रकारसे लिखित जो मन्त्र है उसको पढिके प्रथमदिन शिरपूरक १ कर्णाक्षिनासिकापूरक २ गल अंस भुजा वक्षस्थलपू० ३ नाभि लिंग गुदापू० ४ जानुजंघापादपू० ५ सर्वमर्मपू० ६ सर्व

नाडीपूर० ७ दन्त लोम नखपू० ८ वीर्यपू० ९ संपूर्ण गात्र क्षुधा पिपासा उलटा पलटा पूरक १०

सभुजवक्षांसितृतीयेनतथाक्रमात् ॥ चतुर्थेनतुपिंडेननाभिलिंगगुदानिच ॥ जानुजंघेतथा पादौपंचमेनतुसर्वदा ॥ सर्वमर्माणिषष्ठेनसप्तमेनतुनाडयः ॥ दंतलोमाद्यष्टमेनवीर्यंतुनवमेनच ॥ दशमेनतुपूर्णत्वंक्षुत्पिपासाविपर्ययात् ॥ इति ॥ प्रथमः शिरःपूरकपिंडःकर्णाक्षिनासिकापूरको द्वितीयः गलांसभुजवक्षसांपूरकस्तृतीयः नाभिलिंगगुदपूरकश्चतुर्थः जानुजंघापादपूरकःपंचमःसर्वमर्मणांपूरकःषष्ठः सर्वनाडीपूरकःसप्तमः नखलोमदंतपूरकोऽष्टमः वीर्यपूरकोनवमः संपूर्णगात्रक्षुत्पिपासाविपर्ययपूरकोदशमः । तृतीयेहनिपिण्डत्रयं सप्तमेहनिचत्वारः दशमेहनित्रयः । अथ सव्यं दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुःअद्यामुकगोत्रामु

३ रे दिन पिंड ३ सातवेंदिन पिंड ३ फिर सव्य होके दक्षिणमुख होके वामजं

घाको जमीनमें मोरके अद्यामुकेति यह मंत्रको पढिके अवनेजनका कुशासन देई पुनः अद्यामु

कप्रेतइदंशिरःपूरकपिंडासनावनेजनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेत एषाशिरःपूरकपिंडस्तेमयादीयतेतवोपातिष्ठताम् ॥ ततः प्रत्यवनेजनजलंदद्यात् । अद्या मुकगोत्रामुकप्रेतइदंशिरःपूरकपिंडेप्रत्यवनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ अथ पिंड पूजनम् । ऊर्णासूत्रम् उशीरचंदनं भृंगराजपत्रं धूपदीपादिभिः पिंडमर्चयेत् ऊर्णासूत्रंद द्यात् उशीरचंदनंदद्यात् भृंगराजपत्रंदद्यात् रालधूपंदद्यात् । अमुकगोत्रामुकप्रेतएष दीपोमदत्तस्तवोपातिष्ठताम् ॥ यमद्वारेमहाघोरेअंधेनतमसावृते ॥ तत्रावलोकनार्थायदीपो यमुपतिष्ठताम् ॥ अमुकगोत्रामुकप्रेतएतन्नैवेद्यम्मदत्तन्तवोपतिष्ठताम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुक

केति लिखितमन्त्रको पढिके अवनेजनको देई पुनः अद्यामुकेति मन्त्रको पढिके प्रत्यवनेजन करै पुनः

 पिंडोंका पूजन करै लिखित विधिसे फिर तिलतोयपात्रका दान देना क्षुधा पियास निवृत्तिकेवास्ते

प्रेतएतेऊर्णासूत्रोशीरचंदनभृंगराजपत्ररालधूपदीपास्तेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ अथ तिलतोयपात्रदानम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतक्षुत्पिपासानिवृत्तिपूर्वकमिदंतिलतोय पात्रंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ प्रथमपिंडएकतिलतोयपात्रम् ॥ द्वितीयेतिलतोय पात्रद्वयम् ॥ एवंतृतीयादिषुप्रत्यहमेकंतिलतोयपात्रंवर्द्धयेत् ॥ ततस्त्रिकाष्ठिकाया मद्यामुकगोत्रामुकप्रेतअत्रस्नाहि इदं पिब । श्मशानानलदग्धोसिपरित्यक्तोसिबांधवैः । इदं क्षीरमिदंनीरमत्रस्नाहिइदंपिब । तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । इदमन्नंभुंक्ष्व इदंमाल्यंपरि धेहि अथवा संध्याकालेगोमयोपलिप्तायांभूमौत्रिकाष्ठिकायांसमारोप्यतदुपरिमृन्मय पात्रद्वयेपत्रपुटेवाजलंक्षीरंचनिधायमाल्यंदीपंचघृत्वासंकल्पयेत् ॥ पूर्ववाक्येनप्रथमेहानि

प्रथम पिंड १ तिलतोयपात्र १ तिलजलपात्र १ ॥ २ ॥ ति० तो० पा० २ । ति० ज० २ ॥ ति० जल २ ॥ ३ ॥ दिन दिन

एकएक फिर त्रिकाठी अद्यामुकेति इस मंत्रको पढिके प्रस्तावना करना धूप दीप नैवेद्य माला पुष्प वस्त्र अर्पणकरि अथवा सायंकालमें गोमयसे लेपित भूमिके विषे त्रिकाठीमें समारोपण

एकस्तिलांजलिःद्वितीयेद्वौतृतीयेत्रयः चतुर्थादिषुएवंवर्द्धमानांस्तिलांजलीन् दद्युः ॥ अद्या मुकगोत्रामुकप्रेतएषतिलतोयांजलिस्तेमयादीयतेतवोपातिष्ठताम् ॥ एवंद्वितीयेकर्णाक्षिना सिकापूरकपिंडस्तेमयादीयतेतवोपातिष्ठताम् ॥ सर्वं पूर्ववत् ॥ तृतीयेगलांसभुजवक्षःपूरक पिंडः चतुर्थेनाभिलिंगगुदपूरकपिंडः पंचमेजानुजंघापादपूरकपिंडःषष्ठेसर्वमर्मपूरकपिं डःसप्तमेसर्वनाडिकापूरकपिंडःअष्टमेदंतलोमनखादिपूरकपिंडःनवमेवीर्यपूरकपिंडः दशमे ऽह्निक्षुधातृषापूरकपिंडस्तेमयादीयतेतवोपातिष्ठताम् ॥ एवंक्रमेणपूर्ववद्दद्यात् एवंदशादिना निअवनेजनं पिंडदानम् पुनरवनेजनंवर्धमानतिलतोयपात्रदानतिलतोयांजलिंचक्षीरनीरपा

करिके तिसके ऊपर मृत्तिकाको दो पात्र अनुवर्तन या दोनियोंमें जल दुग्धको भरिके मालापुष्प दीपक धरिके संकल्प पढि पूर्वहीकीनाईं प्रथम दिनको १ तिलांजली २ दिन दुइ ३ दिन ३

चतुर्थदिन ४ तिल जल दिन दिन बढाइके देई अद्यामुकेति इस वाक्यको पढिके तिल मिलाइ जलांजली पहिलेकी मुजब देई इसी प्रकारसे दशदिनतक अवनेजन और पिंडदान फिर अवनेजनतिलपात्र तिलजल सहित बर्त्तन तिल सहित जलयुक्त अंजली दूध जल पात्रका दान

त्राणिचदद्यात् दाक्षिणादानंच ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतशिरआदिसर्वांगपूरकपिंडसांगता सिद्ध्यर्थं दाक्षिणां पलमेकं लोहंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यंवायथानामगोत्रायब्राह्मणायमहृ त्तंतवोपतिष्ठताम् ॥ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः । अक्षयःपुंडरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्र दोभव । कुलधर्मंसमाचरेत् बालानग्रेकृत्वाग्रामंप्रविशेयुःतत्रद्वारेनिंबपत्राणिस्पृष्ट्वाचम्य ॥ जलमग्निंस्पृष्ट्वाब्राह्मणः शुद्ध्येत् ॥ क्षत्रियोवाहनायुधम् ॥ वैश्यःप्रतोदम् ॥ शूद्रोयष्टिंस्पृ

करै और दक्षिणा देई अद्यामुकगोत्रेति यह मंत्रको पढिके १ पल लोह, वा तवनेक मोल द्रव्य प्रकल्पना करिके वा नामगोत्र पढिके ब्राह्मणको देना भाग है. अनादिनिधनेति इस वाक्यको पढे कुलका जैसा धर्म हो ऐसा आचरण करै बालकनको आगे करके ग्रामको आवे तब नीमके पत्रको स्पर्श

॥१०॥

करके आचमन करके जलाग्निको स्पर्श करके ब्राह्मण शुद्ध होताहै क्षत्रिय आयुध अरु वाहन वैश्य प्रतोद शूद्र हराती ये शुद्धहोतेहैं उस रात्रिमें रसोई न करै किंतु बालक वृद्ध अतिक्षुधातुर

ष्ट्वाशुद्धयेत् तस्यांरात्रौनपाकः कर्तव्यः बालवृद्धातुरान्वर्जयित्वा उपवासः सर्वेषां त्रिरात्रमक्षारलवणम् । एवंदशदिनानि । तत्रब्राह्मणस्यदशमदिनेदशमपिंडोदेयः । क्षत्रियस्यद्वादशदिनेवैश्यस्यपंचदशदिने शूद्रस्यपूर्णेमासेदशमः पिंडोदेयः ॥ येनैवप्रकारेणप्रथमःपिंडोदत्तस्तेनैवोत्तरोत्तरंदद्यात् ॥ त्र्यहाशौचेप्रथमदिवसेत्रयः द्वितीयदिने चत्वारः तृतीयदिने त्रयः अथवा प्रथमे एकः द्वितीयेचत्वारः तृतीयेपञ्चपिंडादेयाः सद्यःशौचेत्वेकाहेनैवपाकसंपत्तौफलमूलपयःशाकगुडशालिसक्तुष्वेकतमेनपिंडादेयाः येन

के विना सर्वजन उपवास करैं तीनरात्रि सेंधालोन खावैं एहीप्रकार दशदिनतक रहै दशवें दिन १० पिंडादेना ब्राह्मणको उचित है क्षत्रियके १२ दिन वैश्यके १५ दिन और शूद्रके ३० दिनपर पिंडदा

न देना योग्य है जिस प्रकारसे पहिले पिंडदेना उसी प्रकारसे उत्तर देना तीनदिनके अशौचमें एक दिन ३ दूसरे दिन ४ तिसरे दिन ३ अथवा तुरंत शौचमें एकै दिनमें पाकद्रव्य फल मूल दुग्ध शाक गुड जडहन सक्तुक पिंड देना योग्यहै जिसका१ पिंड देना अन्यदिनभी उसीका देना अरु दश रात्रि माता

द्रव्येणप्रथमः पिंडोदीयते तज्जातीयेनैवान्येपिदेयाः ॥ रात्रौमृतेसूर्योदयेदिवामृतेनक्षत्रोदयेबहिर्मार्गादौब्राह्मणानुमत्यासर्वानपिबालपुरःसरान् गृहद्वारमानीयतत्रैवनिंबस्यपत्राणिदंतैश्छित्वाऽऽचम्य ततोवेश्मनिपदन्यासंकृत्वाऽऽचम्योदकंगोमयगौरसर्षपाग्निदूर्वाप्रवालवृषान्संस्पृश्यगृहंप्रविशेयुः दशरात्रंमहागुरुषु वसेयुःमातापिताचार्यएतेमहागुरवः शस्त्रपाणयश्चोपसेविनः पृथक्क्षितौ शायिनः प्रथमतृतीयपंचदशमदिनेषुसर्वेषामेवसपिंडानांबहिः स्नानंतिलोदकदानंचात्रिःप्रक्षालनंसहभोजनम् ॥चतुष्पथश्मशानगृहेषुदीपदानमंगवाह

पिता गुरुके समीप रहना योग्यहै पहिले तीसरे पाँचवें दशवें दिन सर्वसगोत्रीनको गांवके बाहर स्नान तिलोदक दानादि करना उचित है. अब अस्थिका संचय कहतेहैं. तहां हड्डीके बटोरवेमें एकोद्दिष्ट श्राद्ध

विधिको करके पुत्र और अपना स्वजाती और भाई बंधु साथमें स्नान करके शुद्ध होके नानाप्रकार के फल मूल और ऊखके रसको और पान अपने जातिके अनुरूप करके वर्तनको भर करके गंध फूल धूप दीपादिक लेकरके जिस जगहमें मृतको दग्ध किया उस जगहमें जाके जलदीसे भस्मको

नंप्रेताप्यायनकरम् ॥अथास्थिसंचयनम्॥तत्रास्थिसंचयननिमित्तमेकोद्दिष्टं विधायपुत्रोज्ञा तिबंधुसहितः स्नात्वाशुद्धः । नानाविधफलमूलेक्षुपानादिभिः स्वजात्यनुरूपैः पात्राणिपूर यित्वागंधपुष्पधूपादिकंचगृहीत्वाश्मशानसमींपगत्वात्वरान्वितः अस्माकमायुरारोग्यंसुखं चददातुमेइतिमंत्रेणदेवताभ्योबालिंदत्त्वा क्षीरेणाभ्युक्ष्यश्मशानस्थानंगच्छेत् । इतिदेवतां विसृज्य क्षीरेणवा चितास्थानमभ्युक्ष्यशमीपलाशंधृत्वाभ्युक्ष्यगंधवारिणासिक्का कृता

इस मंत्रको पढके पूजादे दूध करके श्मशानस्थानको सींचि तब फिर चलाआवे देवतानको विसर्जन करके उदक वा दूध करके चितास्थानको अभ्युक्षण करके शमी और पलाशको लेके और

सुगंध युक्त जल करके सिंचनकरे वामतरफसे दाहने तरफ यज्ञोपवीत दक्षिणमुख होके अंगुरामें उठा
यके और कनगुरियामें करके पहिले शिरके हड्डीको लेके पंचगव्य-करके सुगंध जलसे सींचके पला
सकी दोनियामें धरके रेशममें बांधै मृत्तिकाके नूतन याने नये बर्तनमें ढांपिके तिस पात्रको

पसव्योदक्षिणामुखोंगुष्ठकनिष्ठिकाभ्यांप्रथमांशिरोस्थिगृहीत्वा पंचगव्येन सुगंधवारिणा
सिक्त्वापलाशपुटेनिक्षिप्य क्षौमवस्त्रेणसंवेष्ट्य मृन्मयनूतनभांडे आच्छाद्यतद्भांडमारोप्य
वृक्षमूलेनियतगर्तेवाधारयेत् चिताभस्मादितोयेनिक्षिपेत् अथकश्चित्पुत्रपौत्रसहोदरादिषुस्त्रा
त्वातदस्थिपंचगव्येप्रक्षिप्य हिरण्यमध्वाज्यतिलैः संयोज्य मृत्पिंडपुटेनिनीयदक्षिणांदिश
मपश्यन् नमोस्तुधर्मायेतिवदेत जलंप्रविश्य प्रेतस्यस्वर्गगमनकामोदक्षिणाभिमुखः समेप्री

वृक्षके निकट खाडा खोदके उसमें धरै, चिताकी भस्म उसीमें छोडिदेई और कोई पुत्र भाई
आदिक स्नान करिके हड्डीको पंचगव्यमें छोडिके सोना मधु घी तिलमिश्र मृत्तिकाके नये पात्रमें

धरके दक्षिणमुख होके देखताहुवा. नमोस्तु धर्मायेति इसको पढै जलमें धसके प्रेतको स्वर्गकी इच्छा दक्षिण मुखहोके समे प्रीयतां इसको पढके गंगाके जलमें छोडदेय तब उठके सूर्यको

यतामित्युक्त्वागंगांभसिनिक्षिपेत् । ततः स्नात्वोत्थायसूर्यमवेक्ष्यास्थिनिक्षेपकर्मप्रातिष्ठार्थं ब्राह्मणायदक्षिणांकिंचिद्द्यात् ॥ गंगातोयेषुयस्यास्थिप्लवतेशुभकर्मणः ॥नतस्यपुनरावृत्ति र्ब्रह्मलोकात्कथंचन ॥ एवंकृतेप्रेतपुरस्थितस्यस्वर्गेगतिःस्यात्तुमहेंद्रतुल्या ॥ अस्थियावन्म नुष्यस्यगंगातोयेषुतिष्ठति॥तावद्वर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ॥ पितृमातृकुलंवापिवर्जयि त्वानराधमः ॥अस्थीन्यन्यकुलोत्थानिनीत्वाचांद्रायणंचरेत्।दशमदिनेनखलोमादिकं वाप

देखै फिर ब्राह्मणको दक्षिणा देय जितने दिन तक मनुष्यकी हड्डी गंगामें रहतीहै तितने हजारवर्ष

स्वर्गमें पूजित होताहै और मातापिताको त्यागके औरकी क्रिया करताहै सो चांद्रायण व्रतकरै

यित्वातिलतैलेनगौरसर्षपकल्केनशिरश्चोन्मृज्यस्नात्वाचम्यशुद्धवस्त्रंपरिधायआदित्यंगां-
सुवर्णं ब्राह्मणंच नत्वागोरोचनंदधिमृत्तिकासितसर्षपंचातिलकंदद्यात्ब्राह्मणोऽग्निं क्षत्रिय
आयुधम् वैश्यः प्रतोदं शूद्रोयष्टिंसंस्पृशेत्॥मंगलानिचसंस्मृत्यसंकीर्त्यब्राह्मणःस्वस्तिवा
चयित्वागृहंप्रविशेत् ततोदशमादिनेपिंडदानानंतरं प्रेतकनीयसांवपनंनखलोमत्यागोबहिरेव
तैलेनाभ्यंगःप्रक्षालितवस्त्रः त्यक्तवस्त्रमाश्रितायदेयम् ॥ आचम्यगृहमागत्याग्निंस्पृशेत्॥दश
मेहनिसंप्राप्तेस्नानंकुर्याद्बहिर्जले ॥ तत्रत्याज्यानिवासांसिकेशश्मश्रुनखानिचेतिपराशरः
तत्रसामुद्रसैंधवलवणानियवमुद्गकलायगव्यक्षीरदधिघृतखंडान्नाश्नीयात् । मधुमांसस्त्रीव
र्जिताभवेयुः सपिंडाएकवारंभुंजीरन् ॥ इतिदशाहक्रियासमाप्ता ॥ अथैकादशाहकृत्यम् ॥

तब शुद्ध होय और पुण्य वहीकी मुजब जानना ॥ इति दशाहक्रियासमाप्ता ॥ अथ एकादशाहविधिः ॥

आशौचके आगेके दूसरे दिन शय्या देना योग्यहै और अनेकप्रकारके भूषण वस्त्र रत्न चन्दन दर्पण आदि स्त्री पुरुषको भूषित करै और कपिलागौ दान करना, वृषोत्सर्ग करना तब एकोद्दिष्ट

आशौचांते द्वितीयेह्निशय्यांदद्याद्विचक्षणः॥ नानावर्णैर्वितानैश्चहेमपट्टैरलंकृतैः॥पुष्पाद्यैर्भूषणैराढ्यांदर्पणादिसमन्विताम् ॥कांचनंपुरुषंतद्वत्फलवस्त्रसमन्वितम्॥पूजयेद्द्विजदांपत्यंनानाभरणभूषणैः ॥ वृषोत्सर्गंप्रकुर्वीतदेयाचकपिलाशुभा ॥ एकोद्दिष्टंततः श्राद्धं ततःसान्नोदकंतथा ॥ मासिकञ्च ततः श्राद्धं सपिंडनमतः परम् ॥ अथवृषोत्सर्गे वेदीप्रमाणम् ॥ तत्रादौषोडशहस्तव्यायामविस्तीर्णांचतुरस्रांहस्तोच्छ्रितांवेदिकांकुर्यात् । तस्योपरिकदलीकाष्ठस्तम्भैश्चचतुर्द्वारंमण्डपंकुर्यात् । तत्रोत्तरार्द्धेचतुरस्रैकहस्तोच्छ्रितांविष्णुवेदींनिर्माय

श्राद्ध करके जल अन्नदान देना फिर मासिक श्राद्धकरै पिंडदानकरै ॥ अब वृषोत्सर्गकी वेदीके प्रमाण कहतेहैं ॥ तहां १६ हाथ बडी चारिउ कोना विस्तृत एक हाथ ऊँची वेदी बनावै तिसके ऊपर

केला लगावै और मण्डप बनावै चारिद्वार करके उत्तर आधेमें चारिउ कोण १ हाथ ऊँची वेदी बनावना विष्णुकी अरु ईशानकोणम रुद्रकलशके अर्थ वेदी रचना नैर्ऋत्य पश्चिमके मध्यमें मृतकमा ताकी वेदी रचना मध्य उत्तरादिशि हवन वेदी रचना तदन्तमें सव्यहोके पंचगव्यसे

ऐशान्यां रुद्रकलशार्थवेदिकां कुर्यात् । नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्येप्रेतमातृसंस्थापनार्थवेदीं रचयेत् ॥ मध्योत्तरादिशिहवनवेदिंचतुरस्रैकहस्तोच्छ्रितांनिर्माय ततः सव्यं कृत्वापञ्चग व्येनकुशोदकेनवेदिंमण्डपञ्चसंप्रोक्ष्यपूजयेत् ॥प्रथमतोऽष्टौद्वारपालान्दशदिक्पालान्संस्था प्यपूजयेत् ॥ अथ पूर्वादिदिक्षु इन्द्रादिदिक्पालानांकलशान्संस्थाप्यतदुपरिपूजयेत् । ततो यजमानः पूर्वद्वारमागत्य प्रतिमापूजनं चारभेत् । अद्येत्यादीतिवाक्यं पठित्वावे दिमण्डपयोः पूजनमहंकारिष्ये॥इति वेदिमण्डपौ संपूज्यद्वारपालान्पूजयेत् ॥ तत्रादौपूर्व

कुशजलसे वेदीको सींचै और पूजै. पहिले ८ द्वारपाल १० दिक्पालनको पूजन करै फिर पूर्व

आदि दिशा इंद्र आदि देइके दिक्पालनको कलशसंस्थापन करिके पूजन करै, तब यजमान

द्वारपालान्पूजयेत् पूर्वद्वारे द्वारपालेभ्योनमः इति नाममंत्रेणध्यात्वाऽक्षतैरावाहनंकृत्वा शुद्धोदकेनस्नात्वागंधादिभिः पूजयेत् एवंसर्वेषांपूजांकुर्यात् ॥ अस्ययागस्यनिष्पत्तौभवंतो भ्यर्थिता मया॥सुप्रसन्नैश्चकर्तव्यंकर्मेदंविधिपूर्वकम् ॥ इति॥ततइंद्रादिदिक्पालानावाह्यपीता दिपताकासतोयमाषान्नभक्तबलिभिः पूर्वादिषुप्रत्येकंपूजयेत् । अद्येत्यादीतिवाक्यंपठित्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्मायजमानः अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गलो कप्राप्तिकामनयास्मिन्नेकादशाहकृत्ये वृषोत्सर्गकर्मणितदंगत्वेन अमुकदिशि अमुकदिक्पा लपूजनमहं करिष्ये॥ततः कलशकरणम् इंद्रायनिर्जरेशायसहस्राक्षायतेनम इतिपूर्वकलशे ए ह्येहिसर्वामरसिद्धसंघैरभिष्टुतोवज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसांगणेनरक्षाध्वरंनोभगवन्न

पूर्वद्वार आइके प्रतिमाके पूजन करै । अद्येत्यादि इस मंत्रको पढिके वेदी मंडपको पूजन करै

सबकी पूजा करै फिर अद्येत्यादीति अमुकगोत्रेति इस वाक्यको पढिके संकल्प करै फिर कुश

मस्ते॥२॥इतिध्यात्वा॥गजस्कंधसमारूढंवज्रहस्तंपुरंदरम् ॥ आवाहयामितमहंसुरराजंशची पतिम्॥२॥इत्यावाहनम् ।इंद्रःसुरपतिःश्रेष्ठोवज्रहस्तोमहाबलः॥शतयज्ञाधिपोदेवस्तस्मैनित्यं नमोनमः ॥इतिपाद्यादिभिःपूजयेत् ॥त्रातारमिंद्रेतिवा सजोषाइन्द्रेतिमंत्रेणपीतपताकांदद्यात् ॥ तत्रकुमुदाक्षंपूजयेत् ॥इंद्रस्तुसहसादीप्तःसहदेवाधिपोमहान् । वज्रहस्तोमहाबाहुस्तस्मै नित्यंनमोनमः॥इंद्रादिसुराधिपतयेइमंसतोयंमाषभक्तबलिंनमःबलिंभक्षकतुरक्षयजमानस्य कुशलं कुरु॥१ ॥ ततः आग्नेयकलशे शक्तिंपू०॥एह्येहिसर्वामरहव्यवाहमुनिप्रवीरैरभितोपि जुष्टः॥संवीज्यमानोप्सरसांगणेनरक्षाध्वरंनोभगवन्नमस्ते॥इतिध्यानम् ॥शक्तिहस्तंज्वलद्रूपं छागारूढंसुरोत्तमम् ॥आवाहयामिज्वलनंपूजेयंप्रतिगृह्यताम् इत्यावाहनम् ॥ सर्वतेजोमय श्चैवरक्तवर्णोमहाबलः॥शक्तिहस्तोमहावीर्योवैश्वानर नमोस्तुते ॥ इतिपाद्यादिभिःपूजयेत्॥

स्थापन करै इन्द्रायेति इस मन्त्रको पढिके उसका ध्यान करै, गजस्कंधेति मन्त्र पढिके आवाहन

वैश्वानरेतिपूजनम् अग्निर्मूर्धेतिरक्तपताकांदद्यात् तस्मिंश्चकुमुदाक्षंपूजयेत् ॥ आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥ अग्नयेसर्वतेजोधिपतयेइमं सतोयंमाषभक्तबालिंनमः बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्यकुलशंकुरु॥२॥दक्षिणकलशेदण्डपूजा॥ एह्येहिवैवस्वतधर्म्मराजसर्वामरैरर्चितधर्ममूर्ते ॥ सुरासुराणामधिपप्रजेशशिवायतुभ्यंसततं नमोनमः॥इतिध्यानम्॥महामहिषमारूढंदण्डहस्तंमहाबलम्॥आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्र तिगृह्यताम्॥इत्यावाहनम्॥दण्डहस्तःकृष्णवर्णोधर्माध्यक्षोमहाबलः॥प्रेताधिपतयेनित्यंयम राजायतेनमः॥इतिपाद्यादिभिःपूजयेत्॥यमेनदंडमितिपूजनम्॥असियमइतिकृष्णपताकांद द्यात् पताकायांपुंडरीकाक्षंपूजयेत् ॥यमश्चोत्पलवर्णाभःकिरीटीदंडधृक्सदा॥धर्माध्यक्षोवि शुद्धात्मा तस्मैनित्यंनमोनमः॥यमायमहिषवाहनाय इमंसतोयंमाषभक्तबलिंनमःबलिंभक्ष

क्रतुंरक्ष यजमानस्यकुशलंकुरु ॥३॥ नैर्ऋत्यकलशेखड्गंपूजयेत्॥एह्येहिरक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसंघः॥ ममाध्वरंरक्षशुभाधिनाथलोकेश्वरत्वं भगवन्नमस्ते॥इत्यावाहनम्॥ योवै यक्षाधिपोदेवोनैर्ऋतोनीलविग्रहः।महाखड्गधरोनित्यंतस्मैनिर्ऋतयेनमः॥इतिध्यानहनम् ॥एषतेनिर्ऋतेभागइतिपूजनम् ॥इयंदेवीतिनीलपताकादद्यात् तस्मिन्वामनंपूजयेत्॥ निर्ऋतिस्तुपुमान्कृष्णः सर्वरक्षोधिपोमहान्॥ खड्गहस्तोमहासत्त्वस्तस्मैनिर्ऋतयेनमः॥निर्ऋतयेसर्वरक्षोधिपतयेइमंसतोयंमाषभक्तबलिंनमःबलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्य कुशलं कुरु ॥ ४ ॥ पाश्चिमकलशेपाशिनंपूजयेत् ॥ एह्येहिपाथोगणनायकस्त्वंगणेशपर्जन्यसहाप्सरोभिः॥विद्याधरेंद्रोरगगीयमानपाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते॥इतिध्यानावाहनम्॥वरुणस्योत्तंभनमितिपूजनम्॥इमंमेवरुणेतिश्वेतपताकांदद्यात्।तत्रशंकुकर्णंपूजयेत् ॥वरुणःसोचलोविष्णुःपुरुषोनिम्नगाधिपः ॥पाशहस्तोमहातेजस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥वरुणायनिम्नगाधिपतयेइ

करै ॥ २ ॥ इंद्रसुरपतेति मंत्रपढै और पूजन करै, लिखित मंत्रनकरि तवने तवने देवकी पूजा करै दक्षिणकलशमें दंडपूजा एह्येहीति इस मंत्रको पढ़िके धर्मराजका ध्यान करै लिखित विधिसे

मंसतोयंमाषभक्तबलिंनमःबलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्यकुशलंकुरु॥ ६ ॥ वायव्यकलशे अं कुशंपूजयेत्॥एह्येहियज्ञेममरक्षणायमृगाधिरूढःसहसिद्धसंघैः ॥ प्राणाधिपः कालकवेशहा यगृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ इतिध्यानम् ॥सर्वप्राणाधिपोनित्यंसर्वजंतुव्यवस्थितः॥ ध्वज हस्तोमेघवर्णस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥ इत्यावाहनम्॥वातोवातेतिपूजनम्॥ वायोरग्नेगायेति धूम्रपताकां दद्यात् तत्रसर्वनेत्रंपूजयेत् ॥ वातस्तुसर्ववर्णोयः सर्वगंधवहः शुचिः ॥ पुरुषोध्व जहस्तश्चतस्मै नित्यंनमोनमः॥वाताधिपायसर्वप्राणाधिपतये इमंसतोयंमाषभक्तबलिंनमः॥

पूजन करै ॥ ३ ॥ करिया पताका देना और नैर्ऋत्यके कलशमें खड्गपूजा० पश्चिमकलशमें पाशीकी पूजा, एह्येहीति इस मंत्रकरिके गणेशका आवाहन ध्यान करै ॥ ४ ॥ वरुणस्येति इस मंत्र कारिके पू० श्वेतपताकादेना फिर लिखित विधि करिके पूजन करै ॥ ५ ॥ वायव्यकलशमें अंकुशपूजै वाता

वातेति पू० उत्तरकलशमें गदापू० एह्येहीति इस मंत्रको पढिके ध्यान करै फिर यक्षस्कंधेति
इस वाक्यको पढिके धनदका आवाहन पूजन करै श्वेतपताका दान देइ तहाँ सुमुखको पूजन

बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्यकुशलंकुरु ॥६॥ उत्तरकलशेगदांपूजयेत्॥एह्येहियज्ञेश्वरयज्ञरक्षां
विधत्स्वनक्षत्रगणेनसार्द्धम्॥सर्वौषधीभिःपितृभिःसहैवगृहाणपूजांभगवन्नमस्ते॥इतिध्यानम्॥
यक्षस्कंधसमारूढंगदाहस्तंमहाबलम्॥आवाहयामिधनदंपूजेयंप्रतिगृह्यताम्॥इत्यावाहनम्।
सर्वनक्षत्रमध्येयः सोमोराजाव्यवस्थितः ॥ शुक्लवर्णोगदाहस्तस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥ इमंदेवे
तिपूजनंकुर्विदंगइतिश्वेतपताकांदद्यात् तत्रसुमुखंपूजयेत्॥ गौरस्त्वंचयुगेजातः सर्वौषधिस
मन्वितः॥ नक्षत्राधिपतिः सौम्यस्तस्मैनित्यंनमोनमः ॥ कुबेरायधनाधिपतयेइमंसतोयं
माषभक्तबलिंनमःबलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्यकुशलंकुरु॥७॥ईशानकलशेशूलम्॥ एह्येहिसर्वे

करै ॥ ६ ॥ ७ ॥ गौरेति इस वाक्यको पढि ईशानकलशमें शूल० एह्येहीति वाक्यको पढके

यज्ञेश्वरको ध्यान पूजन करै ॥ ८ ॥ नैर्ऋत्य वरुणके मध्य कलशके समीपमें चक्रको पूजन करै

श्वरसिद्धसंघैस्त्रिशूलखट्वांगधरेणसार्द्धम्॥यज्ञेजययज्ञेश्वरयज्ञसिद्धौगृहाणपूजां भगवन्नमस्ते॥
इतिध्यानम्।वृषस्कंधसमारूढंशूलहस्तंमहाबलम्॥आवाहयामिचेशानंपूजेयंप्रतिगृह्यताम्॥
इत्यावाहनम्॥सर्वदेवाधिपोदेवईशानःशुक्लविग्रहः॥शूलपाणिर्विरूपाक्षोरुद्राधिपतयेनमः॥ई
शावास्येतिपूजनम् ॥ अभित्वाशूरनोनुमेतिश्वेतपताकांदद्यात् । तत्रसुप्रतिष्ठितमीशानं पूज
येत्। ईशानःपुरुषःशुक्लः सर्वदेवाधिपोमहान्॥शूलहस्तोविरूपाक्षस्तस्मैनित्यंनमोनमः॥ईशा
नायसर्वदेवाधिपतयेइमंसतोयंमाषान्नभक्तबलिंनमः बलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्यकुशलंकुरु
॥८॥नैर्ऋत्यवरुणयोर्मध्येकलशेचक्रंपू० एह्येहिपातालधराधरेंद्रनागांगना॥किन्नरगीयमान॥य
क्षोरगेंद्राप्सरलोकसंघैरनंतरक्षाध्वरमस्मदीयम्॥इतिध्यानम्॥निःशेषजगदाधारमशेषसुरपूजि
तम्॥आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यताम्॥इत्यावाहनम्॥पन्नगाधिपतिर्देवअनंतोनामधृ

फिर शेषका ध्यान पूजन करना। निःशेषजगदाधारेति इस वाक्यको पढिके आवाहन ध्यानसे

भ्रकः॥पातालेवसतेनित्यमनंतायनमोनमः॥नमोअस्तुसर्पेभ्यइतिपूजनम्।येदोरोचनोतिधूम्रप
ताकांदद्यात्॥ तत्रधातारंपूजयेत् ॥ इदंयोनंतरूपेणब्रह्मांडंसचराचरम्॥ पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नित
स्मैनित्यंनमोनमः । अनन्तायसर्वयज्ञाधिपतयेइमंसतोयंमाषभक्तबलिंनमःबालिंभक्षक्रतुर
क्षयजमानस्यकुशलंकुरु ॥ ९॥ इंद्रेशानयोर्मध्येकलशेपद्मंपूजयेत् ॥ एह्येहिविश्वाधिपतेसु
रेशलोकेशसार्द्धंपितृदेवताभिः॥सर्वस्यधातास्यमितप्रभावोविश्वाध्वरंनःसततंशिवाय ॥ श्वेत
हंससमारूढंपद्मयोनिंजगद्गुरुम्॥आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यावाहनम्॥
पातालकुसुमाकारो ब्रह्मसवार्थसूत्रधृक्।सर्वलोकपतिर्ज्येष्ठस्तस्मैनित्यंनमोनमः। आब्रह्मन्नि
तिपूजनम् ॥ ब्रह्मयज्ञानामितिसर्ववर्णपताकांदद्यात् तत्र विधातारंपूजयेत्॥पद्मयोनिश्चतुर्मूर्ति

पूजन करै. पूर्वईशानके मध्यमें कलशके समीप कमलकी पूजा करै ॥ ९ ॥ एह्येहीति इस मन्त्रको
पढके फिर श्वेतहंससमारूढेति वाक्यको पढिके ध्यान आवाहन करै फिर पातालकुसुमाका

रेति यह वाक्य पढै आब्रह्मन् इस वाक्यको पढके पूजन करै सर्वरंगकी पताका धरै तहां ब्रह्मा

वेंदाधारःपितामहः॥यज्ञाध्यक्षश्चसततंतस्मैनित्यंनमोनमः॥ब्रह्मणेसर्वलोकाधिपतयेइमंसतो
यंमाषभक्तबलिंनमःबलिंभक्षक्रतुंरक्षयजमानस्यकुशलंकुरु॥इतिदिक्पालपूजनम्॥अथचतुर्दश
यमान् आग्नेयनैर्ऋत्यांतंचतुर्दशकलशोपरिसंस्थाप्य॥यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकायच॥
वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच ॥औदुंबरायदध्नायनीलायपरमेष्ठिने ॥ वृकोदरायचित्राय
चित्रगुप्तायवैनमः ॥ इतिनाममंत्रैरावाह्यपाद्यादिभिःपृथक्पृथक्पूजयेत्इतिचतुर्दशयमपूजा ॥
त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच॥ब्रह्माविष्णुशिवैःसार्द्धंरक्षांकुर्वंतुतानिवै॥इतिप्रथम
प्रार्थनांपठेत् ॥ ततोमंडपाभ्यंतरेयजमानः गृहीतपुष्पांजलिः पूर्वाभिमुखः प्रविश्य देवदा

का पूजन करै पद्मयोनेति इस वाक्य करिके प्रार्थना करै दिक्पालनकी पूजा यहांतक समाप्त

हुई। अब चौदह यम आग्नेय अरु नैर्ऋत्यके मध्यमें चौदह कलशके ऊपर स्थापन करिके चौदह नाम पढिके आवाहनपूर्वक पृथकपृथक् पूजन करै. इति चौदह यमकी पूजा। त्रैलोक्येति इस वाक्यको पढिके प्रार्थना करै. तदन्तमें फिर यजमान मंडपमें प्रवेश करिके फूल अक्षत लेके

नवगंधर्वायक्षराक्षसपन्नगाः॥ ऋषयोमुनयोगावोदेवमातरएवच॥सर्वेममाध्वरेरक्षांकुर्वंत्वेतेमुदान्विताः॥ इतिसर्वेभ्यःपुष्पांजलिंत्यजेत्॥अथैकादशाहेश्राद्धार्थंपात्रब्राह्मणनिमंत्रणादि॥ दशाहानंतरंविप्रोवृषोत्सर्गादिपूर्वकमितिकर्मकुर्यात् ॥ ततः पूर्वदिनेनिरामिषमेकवारंभुक्त्वा अस्तंगतेदिनकरेरात्रौश्राद्धकर्ताविप्रनिवेशनंगत्वा सर्वभुक्तजनगृहेगोमयोपालिप्तायांदक्षिणनिम्नवत्यांभूमौब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवेश्य कृतापसव्योदक्षिणाभिमुखः पातित

पूर्वमुख होके देई देवदानवेति वाक्यको पढिके पुष्पांजलिको त्यागकरै और सबका विसर्जन करै। अथ एकादशाहमें श्राद्धके अर्थ सत्पात्र ब्राह्मणको नेवता देना तथा दशदिनके अभ्यंतर

ब्राह्मण वृषोत्सर्ग आदिकर्म करे पहिलेदिन एकदफे भोजन करे सूर्य अस्त होजावे तब श्राद्ध करनेवाला रात्रिके समयमें ब्राह्मणके घर जाइके गोमय लेपित भूमिमें दक्षिणमुख ढाल भूमिकेविषे ब्राह्मण उत्तरमुख बैठे अपसव्य करके दक्षिणमुख वामजंघाको नवायके पानको लेके प्रेतब्राह्मणको नेवता देना आशौ

वामजानुः तांबूलमादायप्रेतब्राह्मणं निमंत्रयेत् ।आशौचान्ते द्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्यैकादशाहश्राद्धकृत्ये भवंतंप्रेतब्राह्मणमेभिरुपनीतद्रव्यैस्तांबूलेनचत्वामहंनिमंत्रये ॥ गतोसिदिव्यलोकांस्त्वंकृतांतविहिते पथि ॥ मनसावायुपूतेन विप्रत्वाहंनिमंत्रये ॥ आमं त्रितोस्मीतितेनोक्ते अक्रोधनैरितिपठित्वाविप्रमुद्दिश्य इतिब्राह्मणंनिमंत्र्यपूर्वदिनेतदाह्निवा यद्यविघ्नेनरजनीयास्यतिताहँश्वः काले सर्वमेतत्करिष्यामीति तेनोक्ते सूर्योदयेपा त्रब्राह्मणस्यकेशश्मश्रुकर्मनखच्छेदं कारयित्वा ताम्रपात्रेण तैलोद्वर्तनोपकरणम् । आशौ

चांते इस वाक्यको पढके नेवतादेई ॐ गतोसि इस मंत्रको पढे पाहिलेदिन दूसरे दिन तबनेही दिन सूर्यके उद यमें ब्राह्मणके केश डाढी नख छेदन करके तांबेके वर्तनमें तेल राखै फिर दूसरे दिन नदीकेतीर वा घरमें

शुद्धजमीनमें रचिके पंचगव्यसे लीपिके बरतन अग्निसे सोधै सपेद मट्टीसे तिल सरसों छींटि देई पाक जग

चतिद्वितीयेह्निनदीतीरेगृहेवान्यशुद्धभूमौवाश्राद्धभूमिंप्रकल्प्यपंचगव्येनोपलिप्यज्वलदंगारैः
संशोध्य गौरमृत्तिकयाच्छाद्यातिलसर्षपैश्चप्रविकिरेत् । पाकस्थानेतिलान्विकीर्य ततः
स्त्रीद्वारा स्वयंवापिंडार्थं नूतनभांडे पाकमारभेत् । ततः पाद्यार्घ्यपात्रदानम् ॥
इदंपाद्यमितिपात्रंदत्त्वा द्विजंनमस्कृत्य प्रेतहितमुद्दिश्यतिलतैलेनजानुनीपादौब्राह्मणस्य
प्रक्षालयेत् ॥ ततस्तिलजलैः पादार्घ्यमापूर्यब्राह्मणचरणंप्रक्षाल्य पादार्घ्यं प्रदापयेत् ।
अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य एकादशाहकृत्ये एष पादार्घ्योमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । ततः
पादार्घ्यांचमनीयंस्वयमाचम्यपाकस्थानंगत्वा ततः आसनंनिवेश्य प्रथमतः ब्राह्मणायश
य्यांदद्यात् शय्यास्थापनंदानसंग्रहे॥ देवशय्याशिरः प्राच्यां मखशय्यातुदक्षिणे ॥पश्चिमेती

हमें तिल छींटै तब स्त्रीके द्वारा व आपही पिंडके अर्थ नवीन पात्रमें खीर बनावे लिखितविधिसे करै और
ब्राह्मणको शय्यादान देना ॥

फिर ब्राह्मणका वरण करना अद्य कर्तव्येति वाक्यको पढके दानदेना. फिर अपसव्य होके ३ कुश यव तिल जलको लेके अद्येति कालको ज्ञान करके लिखित विधिसे

र्थशय्यायाःप्रेतशय्याशिरोत्तरे॥अथ ब्राह्मणवरणम् ॥अद्यकर्तव्यशय्यादानादिदाननिमित्त कममुकशर्माणंब्राह्मणमेभिरुपनीतद्रव्यैस्त्वामहंवृणे। वृतोस्मीतिप्रतिवचनम् ॥ततःपूर्वाभि मुखउदङ्मुखोवाशय्यांदद्यात् सोपकरणायैशय्यायैनमः' इतिचतुर्थ्यंतेन पूजयेत् ॥ फल वस्त्रसमन्वितगंधादिभिः ब्राह्मणंचसंपूजयेत् । इमांशय्यांसोपकरणांब्राह्मणायददामीति द्विजकरेजलदानंवारिणाशय्याभिषेचनं च ततोपसव्येन कुशत्रयंयवतिलजलान्यादायअ द्येत्यादिकालज्ञानंकृत्वा आशौचांते द्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्ववि मुक्तिकांक्षीस्वर्गलोकावासमुखशयनकाम इमांशय्यांसोपकरणां विष्णुदैवतां फलव

ब्राह्मणको रत्नादि पूरित पलंग देय फिर सुवर्णकी प्रतिमा फलवस्त्र पुरुषाकार करके पूजा करे ॐ मनोजूति इस मन्त्रको पढिके पाद्य अर्घ्य आचमन धूप दीप नैवेद्यादि कारि

के ब्राह्मणको अर्पण करे तब ब्राह्मण तुह्मारे स्वस्ति मंगल होई ऐसे वाक्यको पढे फिर अथ कृतैतत्फलप्राप्तेति इस वाक्यको पढिके रत्नादि ब्राह्मणको देना ब्राह्मण स्वस्तिवाक्य पढे तो फिर

स्त्रसमान्वितामुत्तानांगिरोदैवतां वा यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रद दे। ब्राह्मणः स्वतीत्युक्तासोपकरणशय्यांस्पृशेत् कृतैतच्छय्यादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंदाक्षि णांहिरण्यमग्निदैवतंतन्मूल्योपकाल्पितद्रव्यंवाअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणाय तुभ्यमहंसं प्रददे स्वस्तीतिप्रतिवचनम्। ततःफलवस्त्रसमन्वितांकांचनपुरुषप्रतिमांपूजयेत् ॐ मनोजू तिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टंयज्ञ ँ समिमंदधातुविश्वेदेवासइहमादयं तामोंप्रतिष्ठेतिप्रतिष्ठापयेत्पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानगन्धधूपदीपनैवेद्यताम्बूलद्रव्याक्षतैःसंपूज्य

सोपकरण शय्याको सुवर्णयुक्तको पुरुष स्पर्श करके स्थापन करे स्त्रीपुरुष लिखित विधिसे पूजा करै फिर ३ कुश लेकर यवतिलजललेकर संकल्पकरे विधियुक्त पूजन करे अद्येत्यादि वाक्य पढके

धूपदीप नैवेद्य भूषण वस्त्रादि और पांच बर्तन देना पात्रदानके पश्चात् सांगता देना तब ब्राह्मण स्व ब्राह्मणायनिवेदयेत् अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्व काक्षय्यस्वर्गाद्युत्तमलोकगमनकामः इमंकांचनपुरुषंफलवस्त्रसमन्वितंविष्णुदैवतंयथा नामगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ॥ अद्यकृतैत त्फलवस्त्रसमान्वितकांचनपुरुषदानप्रतिष्ठाफलसांसिद्धयर्थं दक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतंतन्मू ल्योपकल्पितद्रव्यंवाअमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिव चनम् ॥ ततः सोपकरणशय्यांकांचनपुरुषं स्पृशेत्स्थापयेत् ततो द्विजदंपतीपुष्पाक्षतैःसं पूजयेत् ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तम लोकगमनकामः द्विजदंपतिपूजनमहंकरिष्ये इतिकुशत्रययवतिलजलैः संकल्प्य अथ द्वि जदंपतीभ्यां नमः इत्यर्घगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यवासोभिः पूजयेत् । अथैतानिगंधपुष्प स्तिवाक्य पढै ॥

प्रे. मं. अब वृषोत्सर्ग कहतेहैं बहुत पुत्रोंमें जो एक लडका गयाको जाय और अश्वमेध यज्ञ करै या बैल छोडै । शुद्धभयेके तश्चात् दूसरेदिन वृषोत्सर्ग करना योग्य है कार्तिककी पूर्णिमा भा. टी.

॥२२॥

धूपदीपनैवेद्यादिविभूषणवासांसिद्विजदंपतीभ्यांनमः पंचपात्राणिचदेयानि॥अथसंकल्पः।अद्ये त्यादिअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनयासूपोदना दीनिइमानिपंचपात्राणिभोजनपाकार्थममुकगोत्रायामुशर्मब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ इ तिकेचित्।स्वस्तीतिप्रतिवचनंपात्रदानप्रतिष्ठार्थंदक्षिणांदद्यात्॥अथवृषोत्सर्गारंभः॥एष्टव्याब हवः पुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत् ॥ यजेतवाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥तत्राशौचांतद्वितीयेऽ ह्निवृषोत्सर्गकर्तव्यता । कार्तिकीचैत्रीवैशाखीषुरेवतीयुताश्वयुज्यांचजीवतोवृषोत्सर्गकालः ततोमातृपूजापूर्वकं नांदीमुखश्राद्धंकृत्वा गवांगोष्ठेपंचभूसंस्कारान्कृत्वालौकिकाग्नेः स्था

चैत्र वैशाखकी रेवतीयुक्त अश्वयुज जीवत वृषका उत्सर्गकाल है । फिर मातृपूजापूर्वक नांदीमुख श्राद्ध करके गऊके गोशालामें पंचभूमि ॥

॥२२॥

संस्कार करके लौकिक अग्निको स्थापनकरि पितरनको वा ब्राह्मणनको पूजन करे अथ बैलका लक्षण कहतेहैं । कान मोटे डील बडी रोमी महीं उदर उज्ज्वल कारिया पीठ होइ तो ब्राह्म

पनंकुर्यात् । पितृब्राह्मणंवृणुयात् । संवत्सरादुपरियदाक्रियतेकाम्यवृषोत्सर्गस्तदाऽनेनप्रकारेणकर्तव्यः आभ्युदयिकश्राद्धसम्बन्धिकर्मण्येवावश्यकेप्रथमवर्षेऊनाधिकारः तत्राशौचांतेद्वितीयाह एवंवृषोत्सर्गकालः नकार्तिक्यादिकालः॥अथ वृषभलक्षणम्॥पृथुकर्णोमहास्कंधःसूक्ष्मरोमाचयोभवेत् ॥ श्वेतोदरः कृष्णपृष्ठोब्राह्मणस्यप्रशस्यते ॥ लोहितोयश्चगात्रेषुखुरपुच्छेषुपांडुरः ॥ ललाटेतिलकंयस्यक्षत्रस्यवृषउच्यते ॥ कांचनाभस्तुवैश्यस्यशूद्रस्यकृष्णउच्यते ॥ शृंगेणोल्लिख्यतेभूमिर्वृषेणयत्रकुत्रचित् ॥ पितॄणामन्नपानंतुप्रभूतमुपतिष्ठति ॥

णको योग्य है देह लाल पीयर पुच्छ पांडुर ललाटमें तिलक होइ वह क्षत्रियके योग्य है नाभीमें

सुवर्णके समान होवै सो वैश्यके योग्य है काला होवे सो शूद्रके योग्य है सूतकके अन्तमें दूसरेदिन वृषोत्सर्ग करना उचित है. बैल जिस जगहमें जल पीताहै सो अमृतके सदृश है. और

सूतकांतेद्वितीयेह्निवृषोत्सर्गः प्रशस्यते ॥ तस्याभावेचकार्तिक्यांचैत्र्यांसंवत्सराद्दते॥उत्सृष्टो वृषभोयस्मिन्पिबत्यंबुजलाशये ॥ तज्जलंचसुधातुल्यंपितृभ्यउपतिष्ठति ॥ त्रिहायणो वृषःवत्सतर्य्यस्त्रिहायण्यो वाएवंलक्षणं वृषं निरूप्य ॥ अद्याशौचान्तद्वितीयेह्नि अद्यामुक गोत्रस्यामुकप्रेतस्योत्सृज्यमानवृषभवत्सतरीचतुष्टयरोमसमसंख्याकवर्षकोटिसहस्रावच्छि न्नरुद्रलोकनिवासपूर्वकतदुत्सृष्टपुच्छाग्रजलपितृतृप्तिपूर्वकतदुद्धृतकूलशृंगाग्रास्थितमृत्तिकास मकलितभक्ष्यभोज्यतृप्तिपूर्वकगोमध्यकृतक्रीडाकालिकाप्सरोगणसेवितविमानारोहणपूर्वक पितृगणतृप्तिकामः सोपकरणवत्सतरीचतुष्टयसहितनीलवृषोत्सर्गमहं करिष्ये । तत्रादा

पितर स्वर्गको जातेहैं. अद्याशौचांतेति वाक्यको पढके पितर तृप्तिके अर्थ करिया बैलका

त्यागन करि तहाँ ईशानमें रुद्रकलश संपूर्ण औषधि करिके शन्नोदेवीति इस मंत्र करिके स्था पन पूजन करके पुरुषसूक्त, जो शिव तिनके अध्यायको जपि फिर मंडपके मध्य नैर्ऋत्य

वीशानेरुद्रकलशंसर्वौषधीभिः शन्नोदेवीत्यादिमंत्रेण संस्थाप्य सम्पूज्य पुरुषसूक्तंरुद्रा ध्यायं च जपेत् । ततोमंडपाभ्यंतरे नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्येतृणमंडपंकारयेत्। तन्मध्येसप्तप्रे तमातृः स्थापयेत् । तत्र सिंदूरादिभिः प्रेतमातृर्निरूप्यकार्पासबीजं संपूज्य अष्टधातु मिलितलोहंचतत्रसंस्थाप्य तद्यथा–कराली१ भीषणा २ रौद्री ३ यमदंष्ट्रा४ कृशोदरी ५॥ उग्रचंडा ६ महाकाली ७ सप्तैताः प्रेतमातरः ॥अद्याशौचांताद्द्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामनयासप्तप्रेतमातृपूजनमहंकरिष्ये।इति

पश्चिमके मध्य तृणका मंडपकरि तिसके मध्यमें सातमें प्रेतमातृकाको स्थापन करि तहां सिंदूर आदि करिके प्रेतमातृकाकी प्रतिमा करिके सिंदूरादिसे पूजा करि आठौ धातुमिलके लोहको

स्थापन करि आगेलिखाहै सातनाम तिसकी विधिसे पूजा करि स्वर्गसे उत्तम लोककी कामनासे
संकल्प्य ॐ करालयैनमः १ भीषणायैनमः २ रौद्रायैनमः ३ यमदंष्ट्रायैनमः ४
कृशोदर्यैनमः ५ उग्रचंडायैनमः ६ महाकालयैनमः ७ ॥ इतिगंधाद्यक्षतपुष्पधूपदीप
समाषान्नसप्तवटकनैवेद्याचमनीयतांबूलादीनिप्रत्येकंसमर्पयेत् । संपूज्य एतत्पूजनसां
गतासंसिद्ध्यर्थंलोहदक्षिणांब्राह्मणयायदद्यात्।तत्समीपेकलशंस्थापयेत् ।सप्तमृन्मयपात्रेषु
शन्नोदेवीतिजलंनिक्षिप्य यवोसीतियवान् तिलोसीतितिलान् पवित्रेस्थेतिपवित्रकं तज्ज
लंशिरस्यभिषिच्य ततःसव्येनपूर्वाभिमुखोरुद्राध्यायंपुरुषसूक्तंयदेवादेवहेडनमितिजपेत् ॥
ततोपसव्येनकुशयवजलान्यादाय अद्याशौचांतद्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य
प्रेतत्वविमुक्तिकांक्षीस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामनयावत्सतरीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गयज्ञेब्राह्म

सात मातृगणकी पू० समीपमें कलशधरि ॥ ७ ॥ मृत्तिकाका पात्र शन्नोदेवीति इस वाक्यको

पढके जल यव तिल कुश० तिस जलकरिके मार्जन करि फिर अपसव्य होके कुशजल लेके अद्याशौचातेति वाक्यको पढिके संकल्प करै हवनकरै अपने कर्तव्य पक्षमें आचार्यका वरण

णद्वाराहवनमहंकरिष्ये इति संकल्प्य स्वकर्तृपक्षेआचार्यवरणाभावः ब्राह्मणकर्तृपक्षेआचार्यवरणं ब्रह्मवरणं च नमोस्त्वनंतायेतिमंत्रेणचंदनाक्षतपुष्पवस्त्रालंकारतांबूलैर्ब्राह्मणमभ्यर्च्य कुशयवजलान्यादाय अद्येत्याद्यमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकगमनकामनया वत्सतरीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गांगभूतंहोमादिसकलंकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणंब्राह्मणमेभिश्चंदनतांबूलवासोभिराचार्यत्वेनत्वामहंवृणे इति वृणुयात् । स्वस्तीतिप्रतिवचनम् । तस्यपूजादिविधाय अनेनैवक्रमेणब्रह्मवरणं हवनकर्मकर्तारंप्रति श्राद्धकर्तापृच्छेत् । भो ब्रह्मन्यथाविहितंकर्मकुरु भो ब्राह्मणास्मिन्कर्मणित्वमेव ब्रह्माभव भवामीतिप्रतिवचनम् ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यकर्तव्यवृषोत्सर्गांगभूतहो

योग्य नहीं है और ब्राह्मण कर्तृपक्षमें आचर्यको करै ब्राह्मण वरणकूं नमोस्त्वनंतायेति मंत्रको पढके

प्र. मं. ब्राह्मणको वरण करै चंदन फूलमाला अक्षत तिल यवादिक देना और कुश यव जलको लेके भा. टी.
॥२५॥ अद्येत्यादि वाक्यको पढै ब्राह्मणको दान देना और स्वस्तिवाक्य पढै इसी प्रकारसे ब्रह्माको वरण करै हवन कर्म करनेवालेसे श्राद्धकर्ता पूँछे हे ब्राह्मण वेद प्रमाणसे कर्म करो इस कर्ममें तु

मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणमेभिः पुष्पाक्षतताम्बूलवासोभिरभ्यर्च्यहोतृत्वेनत्वामहंवृणे वृतोस्मीतिहोताप्राङ्मुखउपविश्य । अथकुशकंडिकाकरणम् ॥ तत्रक्रमः ॥ मृन्मय पात्रमध्येपिष्टादिनामेरुंकृत्वैकदेशेजलमपरास्मिन्देशेक्षीरंचकुर्यात् । पात्रजलसेचनंचरेत् क्षीरसेचनं हस्तमात्रपरिमितचतुरस्त्रां भूमिंशुद्धां दर्भैः परिसमूह्य तानैशान्यांपरि त्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य खादिरस्रुवमूलेनप्रादेशमितउत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य

मही ब्रह्माहो। अब कुशकंडिका कहतेहैं माटीके बर्तनमें आटेका मेरु बनाइ एक ओर जल अवशेष रहे में दूध पात्रजलसेचनकेवास्ते दूधसे सेचन हाथ भरेकै वेदी चारिकोण बराबर कुश बिछाइ ईशानकोण त्यागन गोमयसे लीपि खयरस्रुवाके मूल करके लिखित विधिकारि जह जह अ ॥२५॥

ग्निको स्थापनकरे तहतह मौनहोके कांसेके वर्तनमें अग्नि आनि पूर्वमुखहोके समाधान होके स्थापन करे तब दक्षिणकी ओर शुद्ध आसनदेना ऊपर अग्रसहित कुश बि

उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्यहस्तेनोद्धरणम् । उदकेनाभ्युक्षणम् । एतान्पञ्च-भूसंस्कारान्कृत्वा यत्रयत्राग्नेः स्थापनं तत्रतत्रक्रियते । तत्र तूष्णींकांस्यपात्रस्थमग्निमानीय स्वाभिमुखंप्रत्यङ्मुखमग्निमुपसमधायाग्निंस्थापयेत् । ततोग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनंदत्त्वा तदुपरिप्रागग्रान्कुशानास्तीर्य तस्योपरिब्रह्माणमुपवेश्य प्रणीतापात्रंपुरतः कृत्वा वारिणापरिपूर्यकुशैराच्छाद्यब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् । प्रोक्षणीपात्रंनिधाय बर्हिरादिसकलकुशकण्डिकाकरणम्॥इतिकुशकण्डिका॥तदनन्तरंहोममारभेत्

छावना तिसके ऊपर ब्रह्माको स्थित करिके प्रणीतापात्र आगे धरिके जल भरके कुशसे ढांपै ब्रह्माके मुह देखना अग्निके ऊपर कुशके ऊपर धरै प्रोक्षणीपात्रको धरके कुशादिक धरै इति

कुशकण्डिका । तिसके अनन्तर होम करै ॐकाररहित छः आहुती देना स्रुवामें जो बचै सो प्रो
ॐकाररहिताः षडाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ स्रुवावस्थितहुतशेषस्यप्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः शु
द्धाज्येनाहुतिंदद्यात् । तद्यथा इहरतिः स्वाहा इदमग्नये १ इहरमध्व ᳪ स्वाहा इदम
ग्नये २ इहधृतिः स्वाहा इदमग्नये ३ इहस्वधृतिः स्वाहा इदमग्नये ४ उपसृजंधरुणं
मातरंधरुणाधेयन्तस्वाहा इदमग्नये ५ रायस्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा इदमग्नये ६
ब्रह्मणान्वारब्धः आघारावाज्यभागौजुहोति । मनसा प्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये मन
सैवजुहोति इन्द्रायस्वाहा इदमिन्द्राय अग्नयेस्वाहा इदमग्नये सोमायस्वाहा इदंसोमाय
एतासांसप्ताहुतीनां हुतशेषस्यपात्रांतरेप्रक्षेपः अथपायसहोमः । ओंकारसहितः ॐ अग्नये
स्वाहा इदमग्नये ॐ रुद्रायस्वाहा इदंरुद्राय ॐ शर्वायस्वाहा इदंशर्वाय ॐ पशुपतये
क्षणीपात्रमें धरै. अच्छे घीकी आहुती देना आगे लिखितविधिसे हवनकरे १ २ ३ ४ ५ ६

जो समाहुतिसे बचै सो पात्रान्तरमें धरै अब पायसहोम कहतेहैं ॐकारसहितादि मंत्र करिके १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ ए जो ग्यारह मंत्रहैं तिनको पढिके पायसका होम

स्वाहा इदंपशुपतये ॐ उग्रायस्वाहा इदमुग्राय ॐ उशनसे स्वाहा इदमुशनसे ॐ भवायस्वाहा इदंभवाय ॐ महादेवायस्वाहा इदंमहादेवाय ॐ ईशानायस्वाहा इदमीशानाय॥ अथपिष्टचरुहोमः॥ॐपूषागा अन्वेतुनःपूषारक्षतुसर्वतः पूषावजꣳसनोतुनःस्वाहा इदंपूष्णे॥ ततःपायसंपिष्टचरुमाज्यमेकीकृत्यगृहीत्वाजुहोति ॥ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते एतासामाहुतीनांशेषोग्नावेव पुनराज्येनहोमः ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेॐ भुवः स्वाहा इदंवायवे ॐ स्वः स्वाहा इदंसूर्याय ॐ त्वन्नोअग्नेवरुणस्येति ॐसत्वन्नइति अयाश्चाग्नेइति येतेशतमिति उदुत्तममिति इतिप्रायश्चित्तसंज्ञकोहोमः ॥ ततः संस्रवप्राशनम् ॥ ततोब्रह्म

करना अब पिष्टचरु होम कहतेहैं, ॐ पूषागाअन्वेतुनः इत्यादि मंत्र पढिके चारोंको आहुती

करै तिसके अंत पीठ घी जाउरि मिलाइके होमे अग्नये स्विष्टेत्यादि मंत्र पढिके होमे प्रायश्चित्त संज्ञक होम कही जातीहै तिसके बाद संस्रवप्राशन कहतेहैं ब्रह्माको पूर्णपात्रका दान

णेपूर्णपात्रदानंदक्षिणे ॥ तत्रवाक्यम् ॥ अद्येत्यादिआशौचांताद्दितीयेह्निकर्तव्यवृषोत्सर्गां गभूतहोमकर्मकृताकृतावेक्षकत्वेनब्रह्मकर्मप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिदपूर्णपात्रममुकगोत्रायामुकश र्मणेब्रह्मणेदातुमहमुत्सृजे ॥ ततोबर्हिर्होमः ॥ देवगातुविदोगातुंवित्वागातुमितमनसस्पत इमंदेवयज्ञ॑ᳪस्वाहावातेधाः ॥ इति बर्हिर्होमः ॥ततोब्रह्मग्रंथिविमोकः॥ ॐसुमित्रियानआप ओषधयःसंतु इतिप्रणीताजलेनशिरः संमार्ज्यॐदुर्मित्रियास्तस्मैसंतु योस्मान्द्वेष्टियंचव यंद्विष्मः ॥ इत्यैशान्यांप्रणीतान्युब्जीकुर्यात् । पवित्रंवह्नौक्षिपेत् ततःपूर्णाहुतिहोमः॥आचा र्यायदक्षिणादानम् ॥ तत्रवाक्यम् ॥अद्येत्याद्याशौचांताद्दितीयेह्निकर्तव्यवृषोत्सर्गांगभूतकृते

दक्षिणायुक्त देना तहां वाक्य अद्येत्यादि पढके फिर कुशके होम करना देवागातुविदोगेति वाक्य

को पढके फिर प्रणीताका विमोक करना ॐ सुमित्रियेति वाक्यको पढके प्रणीताके जलसे शिरको मार्जन करना योग्यहै ॐ दुर्मित्रियेति वाक्यको पढके दोनियोंको ऊर्ध्व मुख करदेना

तद्धोमकर्मणः प्रतिष्ठासंसिद्धयर्थंहिरण्यमग्निदैवतं तन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यंवाअमुकाचार्यायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ॥ ततोरुद्राध्यायंपठित्वा ततोलोहकारमाहूयवृषभंलांछयेत ॥ इमारुद्रायेतिदक्षिणपार्श्वेद्वादशांगुलेनत्रिशूलेनालिखेत् ॥ रुद्रꣳसꣳसृजइति वामपार्श्वेअष्टांगुलंचक्रंन्यसेत् ॥ अष्टांगुलंभवेच्चक्रंत्रिशूलंद्वादशांगुलम् ॥ तर्जन्यास्तुप्रमाणेन दाहयित्वाक्षिपेत्ततः ॥ दधिगोमयोर्मध्येस्नापयित्वाङ्कितं पुनः ॥ अलंकृत्यकुमारीभिः सहिताभिर्विवाहयेत् ॥ होतुर्वस्त्रयुगंदद्यात्सुवर्णकांस्यमेव च ॥ उपस्करंचदातव्यंवे

कुशको अग्निमें छोडना फिर पूर्णाहुति होम करना आचार्यको दक्षिणा देना आचार्यका स्वस्ति

वाक्य पढना फिर रुद्राध्यायको पढके फिर लोहारको बोलाइके बैलको त्रिशूल १२ अँगु

तनंमनसेप्सितम्॥ततोवत्सतरीचतुष्टयसहितं वृषभंसर्वौषधीभिःसहरुद्रकलशजलेनस्नापये
त्॥अथसर्वौषध्यः॥सुरामांसीजटाकुष्टंशैलेयंरजनीद्वयम्॥सटीचंपकमुस्ताचसर्वौषधिगणः
स्मृतः ॥ तत्र मन्त्राः॥हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकायासुजातःकश्यपो यास्विन्द्रः ॥ अग्निंया
गर्भंदधिरेविरूपास्तानआपः शᳪस्योनाभवंतु ॥ यासाᳪराजावरुणोयातिमध्येसत्यानृते
अवपश्यंजनानाम् ॥ मधुश्चुतः शुचयोयाः पावकास्तानआपः शᳪ० ॥ यासांदेवादि
विकृण्वंतिभक्षं याअंतरिक्षेबहुधाभवंति ॥ याः पृथिवींपयसोदंतिशुक्रास्तानआपःशᳪ० ॥
शिवेनमाचक्षुषापश्यतापशिवयातनुवोपस्पृशनत्वचंमे ॥ सर्वाᳪअग्निᳪरप्सुषदो
हुवे वोमयिवर्चोबलमोजोनिधत्त ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवंतुपीतये ॥शंयोरभिस्रवंतुनः॥

लका दहिनी जंघापर लिखे और रुद्रᳪसᳪसृज पढके बाईं ओर आठ अंगुलका चक्रबनावे

फिर आठ अंगुलचक्र अरु १२ अंगुलत्रि०, दही गोमयके मध्य नहवावै तब अंकित करै अलंकृत करिके कुमारीसहित विवाह करै हवनकर्ताको वस्त्र २ सोना कांसे और दक्षिणा देना

इतिमंत्रैः सर्वौषधिमिश्रितजलेन चतुर्वत्सतरीभिः सहितं वृषभं स्नापयेत् ॥ चतुर्वत्सतरीसहितंवृषभंसंपूज्य वृषभस्यदक्षिणकर्णेजपेत्॥लोहघंटांगलेबद्ध्वापृष्ठेचवस्त्रधारणम्॥ गलेमाल्यैरलंकृत्यवृषस्यश्रवणेजपेत् ॥ वृषोसिभगवन्धर्मचतुष्पादःप्रकीर्तितः ॥ वृणोमितमहंभक्त्यासमांरक्षतुसर्वतः॥ सत्यंवृषभरूपेणगवामानंदकारकः॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतःपाहिसनातन॥त्वयिमत्तेऽक्षयालोकाःप्रेताःसंतुनिरामयाः॥इतिध्यानम्॥अथन्यासः॥त्र्यंबकंयजामह इतिशिरासि॥नमस्तेमरुद्रन्यवइतिललाटे॥नमःशंभवायेतिमुखे॥प्राणायस्वाहेतिनासिकायाम्॥

और चारिवर्षके गय्या सहित बैल संपूर्ण औषधी करिके सहित रुद्रकलशके जलसे स्नान करे सुरामांसी इत्यादि सर्व औषधी लिखाहै हिरण्यवर्णाः शुचियेति इस वाक्यको पढके

संपूर्ण औषधीमिलित जल करके चारवत्सतरी करके सह बैलको स्नान करावना उचितहै चार वत्सतरीसहित वृषभको पूजन करके बैलके दहिने कानमें कहै लोहघंटेति वाक्य पढे माला वस्त्र भूषण पहिराइ देना और प्रार्थना करना हे भगवन् धर्म चारिपैरके तुम जो हो सो

नीलग्रीवाःशितिकंठाइतिग्रीवायाम्॥यज्जाग्रतइतिबाह्वोः॥शिवोनामेतिलांगूले॥वृषाग्निवृषणे जरान्नितिवृषणे॥त्र्यंबकंयजामहेइतिपादेषुइतिशरीरन्यासः॥ततोवत्सतरीसहितंवृषभंपूजयेत्॥ अद्येत्याद्याशौचान्तद्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षया स्वर्गाद्यु त्तमलोकवासकामनया एकादशाहकृत्येचतुष्टयवत्सतरीसहितवृषभपूजनमहंकरिष्ये॥ तत्र क्रमः॥ वत्सतरीभ्योनमः धर्मरूपायवृषायनमः इतिपाद्यार्घ्याचमनीयस्नानादिभिरुपचारैः

मेरी रक्षा करो हम तुम्हारी रक्षाधिकार कियाहै हे भगवन् धर्म सत्यकरके तुम आनंद कर्ता हो तुम्हारी कृपाते प्रेत निरामय होजातेहैं ऐसा ध्यान करै फिर न्यास करै त्र्यंबकंयजामहे

इति वाक्य पढके शरीरका न्यास करना फिर वत्सतरीसहित बैलको पूजन करना पहिले संपूजयेत् ॥ ततः कुशयवजलान्यादाय ॥ अथोत्सर्गसंकल्पः ॥ अद्येत्यादीतिवाक्यं पठित्वा आशौचांताद्द्वितीयेह्नि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिकांक्षया स्वर्गा द्युत्तमलोकप्राप्तिकामः सकलदुरितोत्सारिताश्वमेधादियज्ञफलप्राप्तिरंभाद्यप्सरोगण सेवित--किन्नरगीयमान-शंखदुंदुभिमृदंगवाद्यमान-देववनिताभिशोभमान-चामरदिव्य रूपशोभितहिरण्यमय-मणिसायुज्यकमल-महाविमानस्थिततुंबुर्वादिगंधर्वेंद्रादिसुरपूजित मरकतमणिहाटकमणिमयसिंहासनस्थितदिव्यभूषण-मुक्ताहाराद्यलंकृतसुवर्णमयतनुकम लासनयावद्वृषभगोलोमतत्कोटिदिव्यवर्षसहस्रस्वर्गप्राप्तिप्राक्षिप्तजल-लांगूलशृंगाग्रमृत्तिका बहुकोटिदिव्यवर्ष-स्वर्गप्राप्ति-पितृपितामहादितृप्तिहेतुपातितप्रेतोद्धरण-सप्तावरणसप्तपारीमि संकल्प करना फिर क्रमकहे।सो वत्सतरीभ्योनमः मंत्रको पढके पाद्य अर्घ्य आचमन स्नानादि

॥३०॥ उपचार करके पूजन करना योग्यहै फिर यव तिल जल कुशको लेके संकल्प करना अद्येत्यादि
तपितृदैवत्वाद्धेतुसत्यलोकवासकामः इमंवृषभंवत्सतरीचतुष्टयसहितमहमुत्सृजे इति
संकल्पः ॥ एनंयुवानंपतिंवोददामितेनक्रीडंतीश्चरतिप्रियेण ॥ मानः साप्तजनुषासुभगारायस्पोषेणसमिषामदेम ॥ इत्यनेनप्रांचमुत्सृजेत् अनेनवाक्येन प्रदक्षिणंकृत्वाईशान्यांदिशि चालयेत् । ततोवत्सतरीचतुष्टयमध्यगतंवृषभमभिमंत्रयेत् । तत्रमंत्राः । समुद्रोसिनभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभिमाव्वाहिः स्वाहा मरुतोसिमरुतांगणः शंभूर्मयोभूरभिमावाहिः स्वाहावस्यूरसिदुवः स्वाञ्छंभूर्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा ॥ यास्तेऽग्नेसूर्येरुचोदिवमातन्वंतिरश्मिभिः ॥ ताभिर्नोअद्यसर्वाभीरुचेजनायनमस्कृधि ॥ यावोदेवाःसूर्येरुचोगोष्वेषुयारुचः ॥ इंद्राग्नीताभिः सर्वाभिरुचंनोधत्तबृहस्पते ॥ ॐरुचन्नोधेहिब्राह्मणेषुरुचꣳराज

वाक्यको पढना स्वर्गादि प्राप्ति कामना करके सुभग सुंदर चमर छत्र अप्सरा सुवर्ण मणि ॥३०॥

कमलादि महाविमान गंधर्व इंद्रादि पूजित मरकतमणिमय सिंहासन बहुतदिन स्वर्गवास की मनोकामना करके इत्यादि वाक्यको पढके वत्सतरीसहित बैलको छोडदेना उचित है

सुनमस्कृधि ॥ रुचंविश्वेषुशूद्रेषुमयिधेहिरुचारुचम्॥तत्त्वायामिब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहवोध्युरुशाꣳसमानआयुःप्रमोषीः ॥ ॐस्वर्णघर्मः स्वाहा स्वर्णार्कःस्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्यःस्वाहा ॥ अथ नीलश्राद्धकर्तव्यता ॥ नीलश्राद्धंकरिष्यामियवपिष्टेनधीमता ॥ तिलशर्करयायुक्तं तर्पणंचत तः पठेत् ॥ यवचूर्णेन नीलघृतमधुशर्कराभिस्तिलमुखाग्रपिंडान्पौराणिकमंत्रेणदद्यात् ततोऽपसव्यम्॥पितृपक्षाश्चयेकेचिद्येचान्येमातृपक्षकाः । गुरुश्वशुरबंधूनांयेकुलेषुसमुद्भवाः॥

एनंयुवानं पातिं वा ददामीति वाक्यको पढके यात्रावास करना फिर प्रदक्षिणा करके ईशान कोणको हांकिदेना. फिर सन्मुख करै तहां मंत्र पढते हैं समुद्रोसिनभः इत्यादि यावोदेवेति ॥

ॐ रुचन्नोधेहीति फिर तत्त्वायामीति ॐस्वर्णघर्मः स्वाहेति पढे। अब नीलश्राद्धकर्तव्यता कहते हैं
नीलश्राद्ध यवके आटेका करना फिर तिल शक्कर युक्त तर्पण करना और तिल यवका आटा

तेसर्वेतृप्तिंगच्छन्तुनीलपिंडंददाम्यहम् ॥ येचान्येलुप्तपिंडाश्चपुत्रदाराविवर्जिताः ॥ तेसर्वे०॥
आब्रह्मणोयेपितृवंशजातामातुस्तथा वंशभवामदीयाः ॥ कुलद्वयेयेममवंशभूताभृत्यास्तथा
वाश्रितसेवकाश्च ॥ तेसर्वे० ॥ मित्राणिशिष्याःपशवश्चवृक्षा दृष्टाश्चपृष्टाश्चकृतोपकाराः॥
देशांतरेयेममसंगताश्चतेभ्यः स्वधाकृत्यइदंददामि ॥ तेसर्वेतृप्तिंगच्छंतुनी० ॥ येबांधवाबां
धवावायेन्यजन्मनिबांधवाः॥अकालेऽपगतायेचयेचांधाःपंगवस्तथा॥तेसर्वे०॥विरूपाआम
गर्भाश्चज्ञाताज्ञाताः कुलेमम ॥ आमगर्भाश्चयेकेचिदागतामुखगोचरे॥तेसर्वे० ॥ वृषयोनिग
तायेचकीटकादिपतंगकाः॥ तेसर्वे० ॥ नरकेरौरवेजाताः कुंभीपाकेचयेगताः । तेसर्वेतृप्तिंग

और घी शक्करका पिंडा पौराणिक मंत्र पढके देना फिर अपसव्य होके जो कोई पितृपक्षी और
जोकोइ मातृपक्षी हैं गुरु श्वशुर भाई बंधु ते सब तिलपिंडदानतें करि तृप्त होतेहैं मैं पिंडदान

करते हैं आगे सद्व्रमें तर्पण लिखाहै सो करना उचित है। इति श्राद्धविधिः ॥ अब नीलपुच्छतर्पण कहते हैं तत्र सव्यहोके आचमन करै पूर्वमुखहोके कुश यव तिलको लेके ब्रह्माद्या देवच्छंतुनीलपिंडंददाम्यहम् ॥ तप्ततैलेचक्षीयंतेयमलोकेमहाभये तेसर्वे० पीड्यंतेकिंकरैर्येचसुदृढैरिक्षुकांडवत्॥तेसर्वे०॥जलेनपीडिताःपंकेयमदूतैर्महाबलैः॥तेसर्वे०॥यन्त्रमध्येप्रपीड्यंतेप्रेतपीडाव्यवस्थिताः॥तेसर्वे० ॥ कुष्ठापस्मारलूताभिर्जलोदरभगंदरैः॥तेसर्वे०॥गंडमालापांडुरोगैःक्षयव्याधिमृताश्चये॥ तेसर्वे० ॥ कारागृहेमृतायेचव्याघ्रभीतिहतास्तथा ॥तेसर्वे० चांडालैर्निहतामार्गेआशौचशयनेमृताः॥तेसर्वे०॥ ब्रह्मस्वहारिणोयेचसुरापाब्रह्महारिणः ॥ तेसर्वे०॥ कुब्जाश्चबधिरायेचपितृमातृकुलोद्भवाः॥ तेसर्वे० ॥ संसाररहितायेचरौरवादिषुयेगताः ॥तेसर्वे०॥वृक्षयोनिगतायेचतृणगुल्मलतास्थिताः ॥ तेसर्वे० ॥देवत्वंमानुषत्वंचातिर्यक्प्रेतपिशाचकाः॥तेसर्वे०॥कृमिकीटपतंगत्वंगतायेचस्वकर्मणा॥तेसर्वे०॥रौरवेनरकेजाताः ताः सर्वा इत्यादि वाक्यको पढके तर्पण करना फिर दक्षिणमुख और अपसव्य होके कुश

कुंभीपाकेचयेगताः॥तेसर्वे॰॥आसुरींयोनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वंचयेगताः॥तेसर्वे॰॥उद्बंधनर
केजाताऊर्ध्ववक्त्रास्थिताश्चये॥तेसर्वे॰॥महापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान्॥तेसर्वे॰॥
महाप्रेतामहाभागाःपूर्वंप्रेतत्वसंस्थिताः॥तेसर्वे॰॥अगम्यागमनंचैवव्रतभंगकराश्चये॥तेसर्वे॰
जलाग्निभिर्मृतायेचअघोराधर्मवर्जिताः तेसर्वेतृप्तिंगच्छंतुनीलपिंडंददाम्यहम् ॥ इतिश्राद्ध
विधिः ॥ अथनीलपुच्छतर्पणम्॥ततः सव्येनाचम्यपूर्वाभिमुखःकुशयवजलान्यादाय॥ब्रह्मा
द्यादेवताः सर्वाऋषयोमुनयस्तथा॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः ॥ असुरादेवप
त्न्यश्चमातरश्चंडिकास्तथा॥दिक्पालालोकपालाश्चग्रहदेवाधिदेवताः॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनी
लपुच्छेषुतर्पिताः ॥ विश्वेदेवास्तथादित्याःसाध्याश्चैवमरुद्गणाः ॥ तेसर्वे॰ ॥ क्षेत्रपीठोपपी
ठादिनदानद्यश्चसागराः॥तेसर्वे॰॥पातालेनागपन्न्यश्च नागाश्चैवसपर्वताः ॥ तेसर्वे॰॥पृथि
व्यापश्चतेजश्चवायुराकाशमेवच॥तेसर्वे॰।पिशाचागुह्यकाःप्रेतागणागन्धर्वराक्षसाः॥तेसर्वे॰॥

दिविभुव्यन्तरिक्षे च ये च पातालवासिनः॥तेसर्वे॰॥शिवः शिवातथाविष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मीः सरस्वती॥तेसर्वे॰॥ तपोधनश्चभगवान्व्यक्ताव्यक्तः परेश्वरः॥ तेसर्वे॰॥ क्षेत्रौषधीर्लतावृक्षा वनस्पत्यादिदेवताः॥तेसर्वे॰॥कपिलःशेषनागश्चतक्षकोनन्तएवच॥तेसर्वे॰॥अनेकजलचरा जीवा असंख्यातास्त्वनेकशः॥ तेसर्वे॰॥ चतुर्दशयमाश्चैवयेचान्येयमकिंकराः॥तेसर्वे॰॥ सर्वेचयक्षराजानः पशवः पक्षिणस्तथा॥ तेसर्वे॰॥ स्वेदजोद्भिज्जजातीयाअण्डजाश्चजरायुजाः॥ शांतिदाः शुभदास्तेस्युर्नीलपुच्छेषुतर्पिताः॥ ततोऽपसव्यंदक्षिणाभिमुखः कुशतिलयुतजलान्यादाय॥ मातृपक्षाश्चयेकेचिद्येचान्येपितृपक्षकाः॥ गुरुश्वशुरबन्धूनांयेकुलेषु व्यवस्थिताः॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः॥ येचान्येलुप्तपिंडाश्चपुत्रदारविवर्जिताः॥तेसर्वे॰॥आब्रह्मणोयेपितृवंशजातामातुस्तथावंशभवामदीयाः॥ कुलद्वये ये ममवंशभूताभृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः॥मित्राणिशिष्याः पशवश्चवृक्षा दृष्टाश्चपृष्टाश्चकृतोपकाराः देशांतरे ये ममसंगताश्चतेभ्यःस्वधाकृत्यइदंददामि॥

प्रे. मं. तिलयुत जलको लेके 'मातृपक्षाश्चये जीवा' इत्यादि वाक्यको पढके तर्पण करै यह नील भा. टी.

तेसर्वे॰ ॥येबांधवाबान्धवावायेन्यजन्मनिबांधवाः ॥तेसर्वेतृप्तिमायां॰॥ अकालेऽपगतायेच

॥३३॥ येचांधाःपंगवस्तथा ॥तेसर्वे॰ ॥विरूपाआमगर्भाश्चज्ञाताज्ञाताःकुलेमम ॥ आमगर्भाश्चयेके

चिदागताः पुच्छगोचरे॥ तेसर्वे॰ ॥वृषयोनिगता ये च कीटकाकपतंगकाः॥तेसर्वे॰॥ किंकरै

र्येचपीडयंतेसुतरामिक्षुकाण्डवत्॥तेसर्वेतृप्तिमायांतु॰ ॥जलेनपीडिताःपंकेयमदूतैर्महाबलैः॥

तेसर्वे॰॥यन्त्रमध्येप्रपीडयंतेप्रेतपीडाव्यवस्थिताः॥कुष्ठापस्मारलूतादिजलोदरभगंदरैः ॥ ते

सर्वे॰॥गंडमालापांडुरोगक्षयव्याधिमृताश्चये॥तेसर्वे॰ ॥कालग्रहेमृता येचसिंहव्याघ्रहताश्चये

तेसर्वे॰॥चाण्डालैर्निहतामार्गेआशौचशयनेमृताः ॥तेसर्वे॰॥ ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापाः

स्वर्णहारिणः ॥तेसर्वे॰॥ कुब्जाश्च बधिरा ये च पितृमातृकुलोद्भवाः॥तेसर्वे॰ ॥संसाररहिता

ये च रौरवादिषु ये गताः ॥तेसर्वे॰॥ सर्पयोनिगता ये च तृणगुल्मलतास्थिताः॥तेसर्वे॰॥

श्राद्ध तर्पण रुद्रधर प्रेततरंगमें लिखाहै. और पक्षमें षट्पुरुष तर्पण कहते हैं. फिर अपसव्य ॥३३॥

होके जलतिलयुत ताम्रके बर्तनमें जो जल है तिसीसे वत्सतरीसहित पुच्छको एकत्र करके
देवत्वंमानुषत्वंचतिर्यक्प्रेतपिशाचकाः॥ तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः॥कृमिकीटप
तंगत्वंगतायेचस्वकर्मणा ॥तेसर्वे० ॥पश्वादियोनिजातायेवृश्चिकादिषुयेगताः ॥ आसुरींयो
निमुत्पन्नाःपिशाचत्वंचयेगताः ॥तेसर्वे०॥उद्बंधनरकेजाताऊर्ध्ववक्रास्थिताश्चये॥तेसर्वे०॥म
हापातकजान्घोरान्नरकान्प्राप्यदारुणान्॥तेसर्वे०॥महाप्रेतमहाभागाः प्रेतपूर्वेचयेस्थिताः॥
तेसर्वे०॥ अगम्यागमनंचैवव्रतभंगकराश्च ये॥तेसर्वे०॥जलाग्निभिर्मृतायेचअघोराधर्मवर्जि
ताः॥तेसर्वेतृप्तिमायांतुनीलपुच्छेषुतर्पिताः॥ इतिनीलश्राद्धतर्पणंरुद्रधरप्रेततरंगे ॥ अथपक्षां
तरेषट्पुरुषतर्पणंततोऽपसव्येनजलतिलयुतताम्रपात्रस्थजलेनवृषभं वत्सतरीसहितंपुच्छमे
कीकृत्यद्विगुणकुशत्रयमादायपित्रादिभ्यः पितृतीर्थेनपौराणिकमंत्रमुदीर्यांजलित्रयेणा
द्विगुण कुशत्रय आयतपित्रादिकोंको पितृतीर्थके विषे एक पौराणिक मंत्रविधिसे तीन तीन

प्रे. मं. अंजली कारिके तर्पण करे गुरुश्वशुरेति फिर अमुक गोत्रेति वाक्यको पढके जलको पृथ्वीमें भा. टी.

॥ ३४ ॥ नेनमंत्रेणतर्पयेत्॥स्वधापितृभ्योमातृभ्योबंधुभ्यश्चापितृप्तये।मातृपक्षाश्चयेकेचिद्येचान्येपितृ
पक्षकाः॥गुरुश्वशुरबंधूनांयेकुलेषुसमुद्भवाः॥येप्रेतभावमापन्नायेचान्येश्राद्धवर्जिताःवृषोत्सर्गे
णतेसर्वेलभंतांतृप्तिमुत्तमाम्दद्यादनेनमंत्रेणातिलाक्षतयुतंजलम्।ततोऽमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य
प्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयाएषवत्सगोपुच्छोदकांजलिर्मया।दीयतेतवोपातिष्ठता।मित्युक्त्वामुकप्रेतस्य
प्रेतत्वविमुक्तयेवृषोयंमयोत्सृष्टः इतिसंकल्प्य जलंभूमौनिक्षिपेदित्यंजलित्रयंदत्त्वासव्येनाच
म्य ततोवत्सतरीसहितंवृषभंपुनः संपूज्य॥ब्रह्मात्वंवृषरूपेणाशिवस्त्वमजरस्तथा॥धर्मोवैवृष
रूपेणप्रेतंवैतारयाशुभादिति वृषभंनत्वाचततोवत्सस्यकर्णेउपांशुश्रावयेत्गोसहस्रस्यमध्ये
तुक्रीडांकृत्वासमाहितः॥ तथावत्सतर्याःकर्णेश्रावयेत् ॥ अमुकायशाश्वतंमोक्षंदेहिनाथसुखं
छोडे फिर सव्य होके आचमन करना योग्य है. फिर वत्सतरीसहित वृषभको पूजन करना ॥ ३४ ॥

ब्रह्मात्वेति वाक्यको पढके वृषभको नमस्कार फिर पांच प्रदक्षिणा करे जलकी धारा
नय ततोवारिधारयाक्षीरेणचपंचापिप्रदक्षिणां कृत्वा ईशान्यांदिशिचालयेत् ततोवत्सतरी
सहवृषभंत्यजेत् ॥ अद्यतिथौवृषोत्सर्गप्रतिष्ठासंसिद्धयर्थंब्राह्मणायहोत्रेचदक्षिणांदातुमहमु
त्सृजे ततोलोहकारस्यवेतनंदत्त्वा अथवैतरणींसोपस्करणयुतांकपिलां दद्यात् तदलाभेयथा
संभवं गांचदद्यात् ततः पुष्पाक्षतैस्तांगांसंपूज्य प्रथमंगोग्राहकस्यवरणं सोपकरणगवेनमः
ब्राह्मणायनमः इतिसंपूज्य ॥ नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्यएवच ॥ नमोब्रह्मसुता
भ्यश्चपवित्राभ्योनमोनमः ॥ अर्चितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण पूजिता॥ सुरभी हर मेपापं
यन्मयादुष्कृतंकृतम्॥अनेन मन्त्रेण कपिलां सवत्सां संपूज्य। इममुच्चारयेन्मंत्रंसंगृह्यसजला
न्कुशान्॥यमद्वारेमहाघोरेश्रुत्वावैतरणींनदीम्॥तर्तुंकामोददाम्येतांतुभ्यंवैतरणीं नमः। गावो
या दुग्धकी धारा करके ईशानदिशाको हाँकदेई फिर वत्सतरीसहित बैलको छोडदेई अद्य

तिथैा यह वाक्यको पढके ब्रह्मा और होताको दक्षिणा देना फिर लोहारको देना अब वैतर णीके तरणनिमित्त वस्त्रालंकारयुक्त कपिला गऊ देना कपिला न मिले तो गऊदान देना

मेचाग्रतःसन्तुगावो मे सन्तु पृष्ठतः॥गावोमेहृदयेसन्तुगवांमध्येवसाम्यहम्॥विष्णुरूपीद्विजश्रे ष्ठमामुद्धरमहीसुर॥सदक्षिणामयादत्तातुभ्यंवैतरणींनमः॥धर्मराजंचसर्वेशंवैतरण्याख्यधेनुकम् सर्वंप्रदाक्षिणीकृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत्॥पुच्छंसंगृह्यधेन्वाश्च अग्रेकृत्वातुवैद्विजम् ॥ धेनुकेत्वं प्रतीक्षस्वयमद्वारेमहाभये। उत्तारणार्थंदेवेशिवैतारिण्यैनमोस्तुते ॥ अनुव्रजेतगच्छंतंसर्व मितिपठित्वा कपिलापूजनप्रार्थनांते इक्षुदण्डमयंसुदृढंलोहदण्डसमान्वितं हेममयंयज्ञपुरुष मेतत्सर्ववैतरणीसमीपे कृत्वा ततो वैतरणीनैर्ऋत्यकोणे नौकामाहूय तत्रोपरिकार्पासंकृत्वा

जैसी होइ तैसी उचित है पहिले गऊकी पूजा करना पश्चात् गोदान लेनेवालेका वरणकर गवे नमः पढिके ब्राह्मणाय नमः यहमन्त्र पढिके संपूर्ण पूजन करना गोब्राह्मणकर नंमोगोभ्य इति

मंत्रको पाढिके पूजा करना इस मंत्रको उच्चारण करे कुश जलको लेके यमद्वारेति वाक्यको पढै और कहै कि, वैतरणी तरणेकी इच्छा करके हम तुमको देतेहैं तुमको और वैतरणीको नम

सलवणं घृतखंडं तत्रोपरियज्ञपुरुषंस्थापयेत् संकल्प्यउत्तारयेत् ॥ अद्येत्याद्यमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यवैतरण्युत्तारणार्थेश्रीयज्ञपुरुषंस्थापयामि ॥ ततोयवतिलजलान्यादाय सकुशंगोपुच्छंगृहीत्वा संकल्पयेत्। अद्येत्याद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्याक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकाम इमांकपिलांगांसवत्सांस्वर्णशृंगींरौप्यखुरींताम्रपृष्ठींकांस्योपदोहनीं मुक्तालांगूलभूषितां घंटाचामरयुतां वस्त्रद्वयोपेतां रुद्रदैवतांयथालंकारैरलंकृतांयथानामगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ ततोगोऽग्रेयज

स्कार है फिर धर्मराजको प्रदक्षिणा करके और वैतरणीनामक गऊको ब्राह्मणको देना योग्य है पुच्छको पकडिके गऊको आगे करके कहै हे धेनु ! तू ब्राह्मणको प्रेक्ष्य यमद्वारते उत्तरणके

अर्थ हम तुमको नमस्कार करतेहैं। कुछ उसके पीछे चलना योग्य है फिर उस दृढ लोहके दंडसे सोनेकी मूर्ति नौका वैतरणीके समीप करके फिर नैर्ऋत्य कोणमें वै० नौकामांगिके लवण

मानः ॥ पृष्ठेनौकांगोपुच्छंगृहीत्वाईशानद्वारेणपारंगच्छेत् ॥ कृतैतत्कपिलादानप्रतिष्ठा संसिद्ध्यर्थंसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ पश्चात्द्रोणशिखरेसप्तधान्यसमन्वितंकापार्संचदेयम् ॥ एतत्सर्वंयद्दत्तंतेनाविष्णुःप्रसीदतु ततः सचैलस्नानंकृत्वावस्त्रंत्यजेत् ॥ इतिवृषोत्सर्गः ॥अथो दकुंभदानम् ॥ अर्वाक्सपिंडीकरणंयस्यसंवत्सराद्भवेत् ॥ तस्याप्यन्नंसोदकुंभंदद्यात्संवत्सरं द्विजे ॥ ततोद्वादशान्नोदकुंभदानम् ॥ अपसव्येन दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः अद्ये

घी खांड तिल ऊपर सुवर्णमय यज्ञपुरुष पधारै संकल्प करके उतारै अद्येत्यादि वाक्य पढै फिर यव तिल जलको लेना कुश गऊकी पुच्छको धरके संकल्प पढना अद्येत्यादि वाक्यको

पढके गऊको दान देना. फिर गऊके आगे यजमान और पीछे ब्राह्मण गऊकी पूँछ धरके ईशान द्वारा पारको प्राप्त होना. कृतैतेति वाक्यको पढके सुवर्णको दान देना पश्चात् द्रोण संज्ञक

त्याद्यमुकगोत्रायामुकप्रेतायसान्नोदद्वादशकुंभामयादीयंते तवोपतिष्ठताम् ॥ अथैकाद
शाहश्राद्धेतिकर्तव्यता ततः १ श्राद्धारंभः ॥ पूर्वमेवब्राह्मणंनिमंत्र्य ॥ उक्तंचवाराहपुराणे ॥
अस्तंगतेयदादित्येगत्वाविप्रंनिवेशयेत् ॥ दत्त्वापाद्यंतुविधिवन्नमस्कृत्याद्विजोत्तमम् ॥ १ ॥
पादौप्रक्षाल्यतैलेनप्रेतस्यहितकाम्यया ॥ प्रभातमुपतिष्ठेयमुदितेचादिवाकरे ॥ तैला
भ्यंगमतःकृत्वानद्यादौस्नानमाचरेत् ॥ आदिशब्देनतडागे वा स्नानंकारयेत् ॥ श्राद्ध
समीपे द्विजमाहूय स्वयंदक्षिणाभिमुख अपसव्यमासने उपविश्य द्विजासनस

सात धान्यके पर्वत बनावना. और देना. वस्त्र सहित स्नान करना वस्त्र त्यागना. इति वृषोत्सर्गः ॥ अथ यवयुक्त घटदानविधि कहते हैं. अन्न सहित कुंभ देना योग्य है. वर्षमात्रको

देना १२ घडा देना अपसव्यहोके दक्षिणमुख बाईं जंघा मोरके लिखित मंत्र पढके १२ कुंभ देना । अथ एकादशाह श्राद्ध कर्तव्यताको कहते हैं. प्रथमश्राद्ध. आ० वाराह पुराणके मतसे कह

मीपेश्राद्धसमाप्तिपर्यंतंतिलेनतैलघृतेनवाप्रज्वालितं दीपं स्थापयेत् । प्राणायामं विष्णुस्मरणंच विधाय अपसव्येनयवकुशजलान्यादाय प्रतिज्ञां कुर्यात् । अद्येत्यादिअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः षोडशश्राद्धांतर्गतैकादशाहैकोद्दिष्टश्राद्धमोभिरुपनीतद्रव्यैरहंकरिष्ये इतिसंकल्पः ॥ ततः कर्मपात्रमहंकरिष्ये ॐ कुरुष्वेत्यनुज्ञातः कर्मपात्रस्यासनम् आसनेपात्रं पात्रेजलं शन्नोदेवीति पवित्रेस्थेतिकुशं यवोसीतियवान् याःफलीतिपूगीफलं श्रीश्चतेइतितुलसीदलं गंधद्वारामितिचंदनं ततोऽपसव्यं तिलोसीतितिलदानं ततःसव्यं गंगेचयमुनेचेतितीर्थमावाह्यतज्जलैः सकु

तेहैं कि, द्विजके घरको जाके नेवता देना कि सूर्योदय होतेही आवना पहिले तेल लगाना फिरि

तडाग नदी आदिसे स्नान करके श्राद्धके समीप विप्रको बुलायके दक्षिणमुख होके अपसव्य
होके आसनपर बैठके द्विजके आसनके निकट तिलका तेल वा घीका दीपक जलावना. जबतक

शैः श्राद्धद्रव्याणिभूमिमात्मानंचाभिषिंचेत् । अपवित्रःपवित्रोवेतिमंत्रेण गायत्रींजपेत् दे
वताभ्यश्चेतिपठित्वा ततोऽपसव्येनदिग्बंधनंकुर्यात् तिलयवकुशान्वामकरेधृत्वादक्षिणहस्ते
नदिशंप्रतिप्रक्षिपेत् ।। अग्निष्वात्ताःपितृगणाःप्राचींरक्षंतुमेदिशम्।।अपहताअसुरारक्षाᳬंसिवे
दिषदः।।तथा बर्हिषदः पांतुयाम्यांयेपितरःस्थिताः ।।अपहताअसुरारक्षाᳬंसिवेदिषदः।।प्रती
चीमाज्यपाःपांतुअपहताअसुरारक्षाᳬंसिवेदिषदः।उदीचीमपिसोमपाअपहताअसुरारक्षाᳬं
सिवेदिषदः।।ऊर्द्ध्वंपांतुमरुद्गणाःअपहताअसुरारक्षाᳬंसिवेदिषदः।।विश्वेदेवाअधःपांतुअपहता

श्राद्ध समाप्ति होई जबतक और प्राणायामकरि विष्णुको ध्यान करना फिर अपसव्यहोके यव
कुशजल लेके संकल्प पढै, अद्येत्यादि अमुक गोत्रेति वाक्यको पढके कर्मपात्र हम करैंगे । ॐ

प्रे. मं. तुम करो, कर्मपात्रका आसन, आसनके ऊपर पात्र, पात्रमें जल शन्नोदेवीति पवित्रेति कुश भा. टी.
॥ ३८॥ यवेति जवको छोडना और याः फलीनीति सुपारी श्रीश्चेति पढके तुलसीदल और गंधद्वारामिति

असुराररक्षाᳬंसिवेदिषदः॥ततःसव्येन रक्षोभूतपिशाचेभ्य इतिनीवीबंधनंततोऽपसव्येनास
नंदद्यात् अद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रामुकप्रेतेदंकौशमासनंमद्दत्तंतवोपतिष्ठताम्॥ अथ
हस्तार्घपात्रैःकर्मपात्रजलेन गंधपुष्पपवित्रान्वितंतिलजलैर्हस्तार्घमापूर्यपवित्रंद्विजकरेदत्त्वा
ॐयादिव्याआपःपयसासंबभूवुर्याआंतरिक्षाउतपार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानआ
पः शिवाः शᳬंस्योनाः सुहवाभवंतु इतिपठित्वा अद्याशौचान्तद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्या
मुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः एषहस्तार्घो मया दीय
तेतवोपतिष्ठतामित्यर्घं दत्त्वा अर्घपात्रं द्विजवामभागे निधाय प्रेताय स्वस्थानमसीति

चंदन अपसव्यहोके तिलदान देना. फिर सव्यहोके. गंगेचयमुने चेति तीर्थनको आवाहन कर
ना तिसजल करके सर्ववस्तुसींची. अपवित्रः पवित्रेति मंत्र करके फिर गायत्री जपै. देवताभ्य इति ॥ ३८॥

वाक्य पढके फिर अपसव्यहोके दिग्बन्धन करै. फिर तिल यव कुश वामहाथमें लेके दहिने हाथके दिशनमें फेंकै आगे लिखे हैं जो मन्त्र सो पढके फिर सव्य होके रक्षोभूतेति वाक्यको पढके ३

न्युब्जीकुर्यात् तदुपरि कुशत्रयं दद्यात् । ततो ब्राह्मणपादौ प्रक्षाल्य गन्धपुष्पाक्षतधूपादिभिः संपूज्य अद्येहामुकगोत्रामुकप्रेत अर्चनविधावेतानि गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपोर्णसूत्रताम्बूलयज्ञोपवीताच्छादनानि मयादीयन्ते तवोपतिष्ठंताम् । ततः प्रेतभुक्तवस्त्रपात्रच्छत्रोपानहकांस्यादिकंच दद्यात् ॥ ततः सव्येनाचम्य ततो गंधाक्षतैश्छत्रं संपूज्य छत्रायनमः इतिपूजयेत् ब्राह्मणायनमः छत्रंददामीतिद्विजकरे जलदानम् ॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकांक्षया स्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः यम

कुश बाँई कमरमें खोंचना उचित है उसको नीवी कहते हैं. फिर अपसव्य होके आसन देना. अद्याशौचातेति वाक्यको पढिके हस्तार्घपात्रको कर्मपात्रको जल चन्दन सुगन्ध पुष्प तिल यव

करिके पूर्ण करिके द्विजके हाथमें कुश देना. ॐ यादिव्येति वाक्यको पढिके फिर अद्याशौ
चान्तेति पढिके अर्घ्य देना. अर्घपात्र द्विजके बाँई ओर धरना फिर प्रेतको स्वस्थानिनमि० उत्तान
मार्गे घोरातपघर्मनिवारणार्थमिदं छत्रमुत्तानांगिरसदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणा
यतुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ छत्रदानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणां हिरण्यमाग्नि
दैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंप्रददे ॥ ब्राह्मणहस्ते छत्रंदण्डेनधा
रयेत् उपानद्दानम् उपानद्भ्यां नमः ब्राह्मणाय नमः इत्युपानहौ संपूज्य पूजानन्तर
मुपानहौ ददामीति द्विजकरे जलदानम् ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्योच्चावचखरतर
किरणसंतप्तवालुकाभिरसिपत्रवनोपकंठकिरणदुर्गभूमिसन्तरणकामः इमे उपानहौ
करके तीन कुश ऊपर धरना फिर ब्राह्मणके चरण धोइके विधिसे पूजै अद्येहामुकेति पढके
प्रेतभुक्त वस्त्रादिकको दान देना उचितहै. फिर सव्य होके आचमन करके छत्रको पूजे छत्रा

य नमः यह मन्त्र पढके पूजै. ब्राह्मणायनमः इस वाक्यको पढके अरु छत्रं ददामि वाक्यको पढके हाथमें जलदान देना फिर अद्येत्यादि वाक्यको पढके घर्मनिवारणार्थं छाताका दान

उत्तानांगिरसदैवतंप्रेतहितकामनया अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे स्वस्तीति। अद्यकृतैतदुपानद्दानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं दक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रददे स्वतीति ॥ अश्वायनमः ब्राह्मणायनमः इत्यश्वं ब्राह्मणं च संपूज्य अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्योच्चावचदुर्गभूमिसंतरणकामः अमुमश्वं सूर्यदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे।स्वस्तीति॥ अद्यकृतैतदश्वदानप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमित्यादि अन्यदपि प्रेतमुक्तवस्त्रालंकारादिकांस्यपात्रादिकंप्रेतश्राद्धभोक्त्रे निवेदयेत्॥तथाचबृहस्पतिः॥शय्यालंकारवस्त्रादिपितुर्यद्वाहनायुधम् ।गंधमाल्यैःसमभ्यर्च्यश्राद्धभोक्त्रेप्रदापयेत् ॥ अथवर्षाशनंदद्यात् ॥ अद्येत्यादिअमुकगोत्रामुकप्रेतअद्यारभ्यमरणादिनप

देना फिर ब्राह्मण स्वस्ति पढै छत्रदानकी सांगताके अर्थ सुवर्ण आदि देना. ब्राह्मणके हाथमें

छाताका दंडा धराइ देना फिर उपानहकी पूजा करके ब्राह्मणको पनही देना फिर लिखित
र्यंतं दशदिवसन्यूनसंवत्सरभोग्यान्नपानादिव्यंजनतांबूलतन्मूल्योपकल्पितं द्रव्यंवा वर्षाश
नत्वेन यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । दक्षिणां च ततः प्रेतोद्देशेनान्नंदेयं
ततः भाजनं भाजने भोजनान्नं परिवेष्य कांस्यपात्रताम्रपात्रपित्तलपात्रादिकंचदद्यात् ॥
ततः सव्येनगंधादिनाब्राह्मणमभ्यर्च्य अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रामुकप्रेतइदम
र्चनादिकंमयादीयतेतवोपतिष्ठतां द्विगुणभुग्नकुशजलैर्दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यं दक्षिणामुखः
पातितवामजानुः अपहता असुरारक्षाꣳसिवेषदः इति वामावर्तेनतिलान्विकीर्य अद्यामु
कगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वाविमुक्तिकांक्षयाएकादशाहश्राद्धे एतानि जलक्षीरदधिघृततंडुल
सर्षपकुशपुष्पाणितेमयादीयन्तेतवोपतिष्ठंताम् ॥ एतच्चाधिकफलमत्र ॥ इहलोकंपरि
त्यज्यगतोसिपरमांगतिम्॥अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यैकादशाहश्राद्धेएतानिगन्धाक्षतपुष्पधू
विधिसे घोडा देना वस्त्र अलंकार बर्तन छाता पनही रतन मणि ब्राह्मणको देना फिर

वर्षाशन देना अद्येत्यादि वाक्यको पढके १० दिनन्यून १ वर्ष प्रेतके वास्ते भोजन जलपान द्रव्य ब्राह्मणको देना उचित है. दक्षिणा देना. फिर मृतक उद्देश करके अन्न देना फिर कांस्यपात्र

पदीपनैद्यतांबूलयज्ञोपवीताच्छादनानितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ॥ ततः सव्येनाचम्य प्रश्नंविधायान्नंब्राह्मणायदेयं ततः पात्रावलीतिक्तमधुराम्लान्नव्यंजनादिहविष्यान्नंमधुमयंपूर्णं कृत्वान्यस्तपणिरालभ्य ॐ पृथवीतेपात्रंद्यौरापिधानंब्राह्मणस्यमुखेअमृतेअमृतंजुहोमि स्वाहा इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपा ँ सुरेस्वाहा इतिजपन्विचिंत्य ब्राह्मणांगुष्ठंगृहीत्वा ततोऽपसव्यम् ॥ इदमन्नमिमाआपःइदमाज्यमिदंमैक्षवमेतत्सर्वेअपहता असुरारक्षा ँ सिवेदिषदः अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यैकादशाहश्राद्धेइदमन्नंसोपकरणंयथोप स्करसहितं निषिद्धवर्जितंब्राह्मणतृप्तियोग्यमुपनीतमुपनेष्यमाणंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतां ततइदमापोशानंतेमयादीयतेतवोपातिष्ठताम्। यथासुखश्श्वेतिब्रूयात् । ततो गयत्रींमधुवाताइ

ताम्रपात्र पीतलका बर्तन ब्राह्मणको देना फिर सव्यहोके ब्राह्मणको पूजन करै

फिर अपसव्यहोके दक्षिणमुखहोके पातित वामजंघा अपहतासुरेति वाक्यको पढके ब्राह्म
णको जल तिल दुग्ध दधि घी चावल सरसों कुश फूल देना फिर सव्यहोके आचमन करके
तिपृष्ट्वातांजपेत्। अन्नहीनंक्रियाहीनंविधिहीनंचयद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तुहरेर्नामानुकीर्त्त
नात् ॥ यथामृतंजुषस्वेत्युक्तंश्राद्धकर्त्ताचदर्भेष्वासीनः तत्रप्रत्यक्षेणोपलभ्यते तदुपनयनेमंदं
मंदंचभोजयेत् । ततस्तंतृप्तंज्ञात्वा उच्छिष्टसन्निधौ आस्तृतदक्षिणाग्रकुशत्रयंभूमौस्थाप
येत् ततोऽपसव्येनविकिरदानंचेति । नैवेद्यान्नंदद्यादितिकेचित् । बहूनांसंमतंस्थानंयथाका
त्यायनः ॥विकिरस्तृप्तिशब्दश्चशर्मआमविसर्जनम् ॥ स्वधास्थःप्रणवोजाप्यंप्रेतश्राद्धेविवर्ज
येत् ॥ इति प्रथमषोडशेनिषेधःनोद्वितीयादौ ततः सव्यंकृत्वाचम्यहरिंस्मृत्वा ततोऽपसव्यं
कृत्वाब्राह्मणायजलंगंडूषंदत्त्वास्वीदतमितिब्राह्मणंपृच्छेत् सुस्वदितमितितेनोक्तेपिंडदानमहं
पूछिके ब्राह्मणको अन्नदेना. ॐ पृथ्वीति मंत्रको पढ़के ब्राह्मणके अंगूठाको पकडके अप

सव्यहोके ए जो जल रस घी वह संपूर्ण वस्तु ब्राह्मणके तृप्तियोग्य है सो देना. आपोशा नादि तिसको ग्रहण करै यथा सुखपूर्वका फिर गायत्रीको जपै मधुवातेति श्राद्धकर्ता कुशके

करिष्ये कुरुष्व उच्छिष्टसन्निधौहस्तार्धपारीमितां वेदिं दक्षिणप्लुवांचतुरंगुलमुच्छ्रितांनिर्माय वामहस्ते कुशान् गृहीत्वा अपहता असुरारक्षाꣳसिवेदिषदः ॥ इतिवेदिकास्थानेरेखांकृत्वा रेखोपरि येरूपाणीतिमंत्रेणोल्मुकंभ्रामयित्वा रेखादक्षिणतो निदध्यात् । छिन्नमूलकुशास्तरणं सव्येनदेवताभ्य इतिजपः। ततोऽपसव्यम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तिपूर्वकांक्षया एकादशाहश्राद्धे इदं पिंडासनमवनेजनजलं नेनिक्ष्व ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम् । अत्रश्राद्धशेषान्नमुष्णंसर्वव्यंजनतिलजलसहितान्नमेकीकृतबिल्वोपमंपिंडं निर्माय अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतएकादशाहश्राद्धे एष पिंडस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम् ॥

आसनपर बैठके प्रीतिसे धीरे धीरे भोजन करै तृप्त जानके उच्छिष्टके निकट ३ कुश भूमिमें धरै अपसव्य होके विकिरका दान देना नैवेद्य अन्न देना इतना पहिले षोडशमें लि० वर्जित

है. द्वितीयाकी आदिमें नहीं ॥ सव्य होके और हरिको ध्यान धरके फिर ब्राह्मणको जल गंडूप
भरदेना. और पूँछना मीठा है ब्राह्मण बोले स्वादिष्ट है, पिंडदान करूं, ब्राह्मण कहै करा
उच्छिष्टके निकट बीताभरके वेदी ४ अंगुल ऊंची बनावना बाँएहाथमें कुश लेना. अपहतेति
आस्तृतदर्भमूलेन करंप्रोक्ष्य सव्यंकृत्वाचम्य हरिं स्मृत्वा ततोऽपसव्यंजलाक्षतंस्पृष्ट्वा
अत्रप्रेतमादयध्वमिति पठित्वा उदङ्मुखीभूय मनाक्श्वासः नियम्य प्रेतंभास्वरमूर्तिंध्या
येदमीमदंतेतिपठित्वा पिंडोपरिजलाक्षतांक्षिप्त्वा अद्यामुकगोत्रामुकप्रेत इदंप्रत्यवने
जनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतांनीवींविश्रमयेत् ॥ एतत्तेप्रेतवासः पिंडार्चनंकारयेत् ॥
नमोवः प्रेतरसायेतिपिंडोपरिसूत्रंदद्यात् ॥ ततस्तूष्णींगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूला
दिकंपिंडोपरिदद्यात् ॥ अद्याशौचान्ताद्वितीयेह्नि अमुकगोत्रामुकप्रेतएतानिगंधाक्षतपुष्प
पढके रेखाको रचना रेखाके ऊपर अंगार घुमावना. रेखा दाक्षिण धरना फिर रेखापर छिन्न
कुश धरना. सव्यहोके देवताभ्य इति जपै, अपसव्य होके अमुकगोत्र पढिके आसन देना फिर

बिल्व सदृश पिंड बनावना अद्यामुकगोत्रेति मंत्र पढिके पहिले बिछाया जो कुश तिसके मूल करके करप्रोक्षण करना. फिर सव्य होके आचमन करके हरिको स्मरण करिके फिर अपसव्य

धूपदीपादीनितेमयादीयंते तवोपतिष्ठंताम् ॥ ततोब्राह्मणकरेजलदानम् ॥ अपांमध्येस्थिता देवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणस्यकरेन्यस्ताः शिवाआपोभवंतुते ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेष्वित्यादिपठित्वा सदास्तु तेनोक्तं ततोक्षय्योदकं च अद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यैकादशाहश्राद्धे यद्दत्तैतदन्नपानादिकं तदक्षय्यमस्तु ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम् । ततऊर्जंदद्यात् ऊर्जंवहंतीतिमंत्रेण ततोनम्रीभूयपिंडमुत्थाप्य ततः सव्येनवेदिकायांशंखचक्रमुल्लिख्य तत्पूजनं च कुर्यात् । वसंतादिषड्ऋतून्पूजयन्नमस्करोति पिंडाधारान्कुशानुल्मुकंचवह्नौक्षिपेत् । अर्घपात्रमुत्तानंकृत्वा दक्षिणां दद्यात् ।

होके जल अक्षतको स्पर्श करके अत्र प्रेतेति वाक्यको पढिके उत्तरमुखहोके श्वासको जीतिके सूर्यस्वरूप पितरनको ध्यानकर फिर कर्षके कुश निकालदेना. फिर पिंडोंकी पूजा करै

लिखित विधिसे फिर माथ नवाइके पिंडोंको आघ्राण करना पृथक् करिदेना फिर सव्यहोके
वेदीमें शंख चक्रका स्वरूप बनावना फिर विधिसे पूजा करावना वसंतादि ६ ऋतुकी पूजाकर

अद्यामुकगोत्रायामुकप्रेतस्य कृतैतदेकादशाहश्राद्धप्रतिष्ठार्थंदक्षिणांरजतंचंद्रदैवतममुकगो
त्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायदक्षिणां तुभ्यमहंसंप्रददे । स्वस्तीति । ततः श्राद्धक
र्ताद्विजचरणौसंवाह्यद्विजनमस्कारंकुर्यात् । द्विजंविसृज्यजलपात्रं गृहीत्वा वाजेवाजे इति
प्रदक्षिणींकृत्यआमावाजस्येतिविसर्जनम्।अष्टौपदान्यनुव्रज्यप्रदक्षिणीकृत्याभिधाय प्रणम्य
देवताभ्यः पितृभ्यश्चेतिपठित्वा पाणिना श्राद्धीयदीपनिर्वापणं पाणिद्वयं प्रक्षाल्या
चम्य ततो द्विजंभोजनांतेशय्यायांमुहूर्तंविश्रमयेत् ॥ सकलालंकारैरलंकृतंमंडपंसंक
ल्पयित्वा गृहंप्रविशेत् । क्षत्रियस्त्वशौचांतदिनेरौप्यस्वर्णमहार्हाणिरत्नानिगांवाहनानि

नमस्कार करना वेदीके कुश अग्निमें छोडना अर्घकी दोनी उत्तान करिदेना ब्राह्मणको दक्षि
णा देना ब्राह्मण स्वस्तिवाक्य कहै फिर श्राद्धकर्ता द्विजनको नमस्कार करके चरण सेवन

करै द्विजको विदा करके जलपात्रको लेके सबको प्रणाम करना यह वाक्य पढिके विसर्जन करना. देवताभ्य इति वाक्य पढके हाथसे दीवा अस्त करदेना, फिर हाथ धोइके मुहूर्त मात्र

दासीदासांश्चसुमहांतिवेश्मानि श्रेष्ठभूषणानिप्रेतहितमुद्दिश्यगोभूहिरण्यादिकंदद्यात् । पूर्वोक्तवाक्येन । अथदानविधिः । दंतैर्गजंघोटकमेवकेशैर्गांचापिपुच्छैर्महिषींतुशृंगैः । अथाविकां च स्तननाभिमध्यैरुष्ट्रंगलैश्चापिवृषंचअंसैः । खड्गंतुचाग्रैरथचक्रमध्यैः केशैस्तुदासींहृदयेनपत्नीम् । दानस्यप्रोक्तोविधिरेषयुक्त्याविद्वज्जनैर्नैवसुयुक्तिकेन ॥ ब्राह्मणेभ्योन्यदपि प्रेतमुद्दिश्यदद्यात् । ततउदकुंभदानं कृतापसव्योदक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतइदमासनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । अद्यामुकगोत्रामुकप्रेत एषप्रशांतोदककुंभस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । पाठांतरेपि दशादशादिकश्राद्धशतत्रयको

विश्राम करना उचितहै. संपूर्ण अलंकारयुक्त मंडवा संकल्पि देना धरे और क्षत्रीको तः शौचके अन्तमें रुपिया मोहर मणि यथाशक्ति ब्राह्मणको देना उचित है. पाहिले लिखित

विधिसे अब दानविधि कहतेहैं. हाथीके दांत. घोडाके केश. गऊका पुच्छ. भैंसका सींग. छेडिके स्तन. ऊँटकी नाभीके मध्यमा. बैलके डील. खड्गको अग्रभाग. शकटको चक्रके मध्य. दासीका

शिकाभिः सोदकुंभैस्तिलयुतैर्दद्यात् ॥ अद्याशौचांतद्वितीयेह्निअमुकगोत्रस्यामु कप्रेतस्याक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनया आब्दिकपर्यंतामिदं साधिकशतत्रयं काशिकं घंटैकसहितंजलतिलाक्षतैर्युतंमहोपशांत्यर्थंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ ततोयथाश क्तिदक्षिणांदद्यात् । इतिएकादशाहविधिः समाप्तः ॥ अथ मासिकप्रयोगः ॥ सपिंडीकर णम् ॥ एवं प्रथममासिकात्रिपाक्षिकद्विमासिकत्रिमासिकचतुर्मासिकपंचममासिकोनषाण्मा सिक षाण्मासिक सप्तममासिकाष्टममासिक नवममासिक दशममासिकैकादशमासिक द्वादशमासिकोनाद्बिकाब्दिकानि इत्येतानि द्वादशाहपूर्वकमाब्दिकपर्यंतानि षोडशश्रा

केश. स्त्रीका हृदय पकडके दान देना उचित है, ब्राह्मणको या दूसरे कोईको देना मृत

कके उद्देश करके फिर जलका घडा देना अद्याशौचेति वाक्यको पढिके ३६० कोशी या घडा सहित जल तिल अक्षत युक्त देना ॥ यथाशक्ति दक्षिणा देना इति एकादशहविधिः समाप्तः

द्धानिपूर्वोक्तविधिनाकुर्यादेकोद्दिष्टवत् ॥ तथाचदेवलः ॥ द्वादशप्रतिमासानिद्वादशाहे समाचरेत् ॥ त्रिपाक्षिकंचकर्तव्यमूनषाण्मासिकंतथा ॥ १ ॥ षाण्मासिकमाब्दिकं चऊनाब्दिकमथापिवा । सपिंडीकरणंचेतिप्रेतश्राद्धानिषोडश ॥२॥ यद्येकस्मिन्नहनिद्वादश प्रतिमासकल्पनातदेवंवाक्यम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेस्यैकोद्दिष्टश्राद्धमहंकरिष्ये ॥ एकोद्दिष्टवतकर्तव्यम् । तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ एकोद्दिष्टंदैवहीनमेकार्घ्यैकपवित्रकम् ॥ आवाहनाग्नौकरणरहितं ह्यपसव्यवत् ॥ अथ प्रथममासिकश्राद्धम् ॥ तत्रश्राद्धादिने निरामिषमेकवारंभुक्त्वा रात्रौगृहंगोमयोदकेनोपलिप्य दक्षिणप्रवणभूमौ ब्राह्मणमुदङ्मुखमुपवे

मासिकप्रयोग सपिंडीकरण कहतेहैं. इसीतरह १ मास त्रिपाक्षिक २ मा. ३ मा. ४ मा. ५

मा. ऊनषष्ठ ६ मास. ७ मा. ८ मास. ९ मा. १० मा. ११ मास ऊनवार्षिक वार्षिक प्रथमलिखितविधिसे द्वादशाब्दिक करना योग्य है एकोद्दिष्टके अनुसार द्वादशप्रतिमा० १२ दिन आचरे.

श्य कृतापसव्योदक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुस्तांबूलकुशानादाय अस्यांरात्रौ अमुकगोत्रामुकप्रेत श्वःकर्तव्यषोडशश्राद्धांतर्गतद्वादशाहप्रथममासिकश्राद्धे भवतंब्राह्मणमामंत्रये आमंत्रितोस्मि अक्रोधनैरितिपठेत् । तथास्त्वितितेनोक्ते ततः प्रातर्दंतधावनादिकंसर्वंकृत्वा ताम्रपात्रस्थंतिलोद्वर्तनंकृत्वा मध्याह्ने सुजलेस्नातः शुचिर्भूत्वाशुक्लद्विवासाः गोमयोपलिप्तायांभूमौपुष्याक्षतदर्भेषुतिष्ठन् सुस्वागतमितिपृच्छेत् । सुस्वागतमितितेनोक्ते प्रमादाद्यदा सायंनभवेत् तदाप्रातरेवकर्तव्यमामंत्रणं पादार्घ्यंदद्यात् ॥ अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धेएषपादार्घ्यस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ तत्पा

जो एकही दिन बारामूर्ति संकल्पना होय तो ये वाक्य पढ अमुकगोत्रेति एकोद्दिष्टके अनुसार

करना. ऐसा याज्ञवल्क्यने कहाहै एकोद्दिष्टीते ॥ १ ॥ अब प्रथम मासिक श्राद्ध कहतेहैं. तहाँ श्राद्ध के दिन एकवार भोजन करै. रात्रिको घर गऊके गोमयसे लीपना ब्राह्मण उत्तरमुख अपसव्य होइके दक्षिणमुख. वामजंघा मोरके पान तिल कुश लेके रात्रिको ब्राह्मणको नेवता देइ

दयोस्तलेदक्षिणाग्रान्कुशान्दद्यात् आसनसमीपेतिलतैलेनदीपंप्रज्वाल्य श्राद्धसमाप्तिपर्यंतंदद्यात् । सव्येनाचम्य ॐ हरिः पुनातु ॐ विष्णुः पुनातु ॐ पुंडरीकाक्षः पुनातु इति सेकः अपसव्येनप्रतिज्ञांकुर्यात् । ऋजुकुशानादाय अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिकांक्षयास्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः द्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धमहंकरिष्ये । इति सर्वत्रवाक्यम् ॥ द्वादशमासाभ्यंतरेऽधिकमासेषोडशपदस्थानेसप्त

षोडशी श्राद्धके वास्ते. ब्राह्मण बोले आवेंगे, निर्गतक्रोध होके बहुत अच्छा बोलै. फिर दँतूनि इत्यादि क्रिया करके तांबेके पात्रमें तिलोद्वर्तन करके मध्याह्नमें स्नान करके पवित्र होके

 शुद्धवस्त्र पहिरके सुखपूर्वक आसनपर बैठकेसु॰ आयो पूंछै अच्छीतरहसे आए या गाफिलतते सार्यं

 दशपदंयोज्यं सव्येनाचम्य गायत्रींजपित्वा ॥ देवताभ्यः पितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवच । नमः स्वाहायैस्वधायैनित्यमेवनमोनमः ॥१॥ सव्येनकर्मपात्रकरणं ततोपसव्येनदिग्बंधनं कुशतिलान्गृहीत्वा ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयप्रथममा सिकश्राद्धेइदमासनंतेमयादीयतेतत्वोपातितष्ठाम् । पूर्ववत्कल्पितासनंदत्त्वा ॥ आयंतुनः पि तरः इतिपठित्वा ॥ हस्तेनार्घपात्रपुटकमादाय ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवंतुपीतये ॥ शं योरभिस्रवंतु न इतिजलम्॥तिलोसिसोमदेवोसिगोसवेदेवनिर्मितः॥प्रत्नमद्भिः पृक्तःस्वधया पितृन् लोकान्प्रीणाहिनः स्वधानमः इतितिलान् श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपा

नेवता ना होय तो प्रातः देना. पादार्घ देना. लिखित वाक्य करके चरणतले कुश देना. आसनके समीप

तिलोंके तेलका दिया बारना श्राद्ध समाप्त पर्यंत रखना, सव्यहोके आचमन करके ॐ हरिः पुनातु
श्वैंनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् इष्णंनिषाणामुंमइषाण सर्वलोकम्मइषाण इतिपुष्पाक्षतं
गन्धद्वारांदुराधर्षामितिगन्धं वामहस्तेनार्घपात्रमादाय सम्पन्नं सुसंपन्नमस्तु सपवित्रकं
विप्रकरे दत्त्वा नमोनारायणायेति ॥ यादिव्याआपःपयसासंबभूवुर्याआन्तरिक्षाउतपार्थि
वीर्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानआपः शिवाः स ँ स्योनाः सुहवाभवंत्विवातिपठित्वा
अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः द्वाद-
शाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेएषहस्तार्घस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ ब्राह्म
णवामप्रदेशेप्रेतस्थानमसिइत्यधोमुखसपवित्रकंस्थापयेत् ॥ दक्षिणापर्यंतंनचालयेत्॥अद्या
मुकगोत्रामुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धे एतानि दधिक्षीरघृततंडुलसर्षपकुशपुष्पाणितेमया
इत्यादि पढ़के सेक करके अपसव्य होके संकल्प करना ऋजुकुशको लेके अद्यामुकेति वाक्य

को पढिके सं० सव्यहोके गायत्री जपै. देवताभ्यइति वाक्य पढिके सव्यहोके कर्मपात्र करना

दीयन्तेतवोपतिष्ठन्ताम्॥एतच्चाधिकफलार्थमितिहलायुधः। वस्त्रगंधाक्षतधूपदीपादिकंदत्त्वा
संकल्पयेत्॥अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धेएतानिगंधाक्षतपुष्पधूपदीपादिताम्बूल
यज्ञोपवीताच्छादनानितेमयादीयन्तेतवोपतिष्ठंताम्।गौरमृत्तिकामानीयचूर्णीकृत्यजलेनाभ्यु
क्ष्य ब्राह्मणंवेष्टयित्वामण्डलंकुर्यात् । परकीयभूमौश्राद्धकरणपक्षेश्राद्धीयवस्तुषुकिंचित्स
व्यंजनमन्नमादाय इदमन्नंभूस्वामिपितृभ्योनमः किंचिन्मूल्यंवादद्यात् । नानापदार्थस
हितमन्नंपरिवेषयेत् उष्णमन्नंरजतादिपात्रेपरिविष्य कराभ्यामादाय मधुररसंमनसा
चिंतितं मांसादिव्यंजनादिपिष्टपात्रांतरेणआज्यैक्षवतिलसहितंहविष्यान्नंमधुमयंकृत्वा
पृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेअमृतेअमृतंजुहोमिस्वधा इदंविष्णुरितिकृष्णकव्य

फिर अपसव्यहोके दिग्बंधन करना, कुश तिल लेके अद्यामुकेति वाक्यको पढके प्रथमकी

रीतिसे आसन देना. आयंतुन इति पढिके हस्तार्घपात्र हाथमें लेके शन्नोदेवीति पढिके जल, तिलोसीति वाक्य पढिके तिल. श्रीश्चेति पढिके फूल, अक्षत छोडदेना. बायें हाथमें अर्घ लेके

मिदंरक्षब्राह्मणांगुष्ठंगृहित्वा इदमन्नमिमाआपः इदमाज्यमिदमैक्षवामित्यादितिलान्विकीर्य अद्यामुकगोत्रापितरमुकप्रेत द्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेइदमन्नंसोपकरणंसव्यंजनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ पात्रमध्येउत्सृजेत् । पितृमंत्रानूपुरुषसूक्तंशिवसूक्तंचपठेत् ॥ मधुवाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवः ॥ माध्वीर्नः संत्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवरꣳ०ऽरजः ॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाꣳअस्तुसूर्यः माध्वीर्गावोभवंतुनः ॥ मधुमधुमधुअन्नसंकल्पसिद्धिरस्तु ॥ ब्राह्मणंमंदंमंदंभोजयेत् ॥ ततस्तंतृप्तंज्ञात्वा ॥ उच्छिष्टसन्निधौआस्तृतदक्षिणाग्रकुशांभूमिंप्रोक्ष्य ॥ ततोविकिरासनं

कुशयुक्त विप्रको देना. नमोनारायणायेति स्वर्गादि उत्तमकामनया विप्रकी बाँई ओर अधोमुख कुशके ऊपर धरना दक्षिणापर्यंत नहीं उठाना. अद्यामुकेतिवाक्य पढिके वस्त्र गंध धूप दीप नैवेद्य

दि देना संकल्प करना पवित्र माटी लेना. चूर्ण करना जलमिश्रित करके ब्राह्मणको घेरिके मंडल करै पर भू—वस्तुके कुछ मोल देना. नानापदार्थयुक्त पदार्थ परोसना. गरम अन्न रूपेके बर्तनमें जाउरि मधुमय बनाईके पृथिवीति ब्राह्मणोस्यमुखमासीत् इस मंत्रको पढिके तिलोंको छींटके

विकिरदानंचकुर्यात् । तथाचस्मृतिः । आभ्युदयिकेचपूर्वेक्षयाहेअग्निमेव च । नैर्ऋत्येपार्वण श्राद्धेप्रेतश्राद्धेतुदक्षिणे ॥ १ ॥ ततः सव्यंकृत्वाचम्य ब्राह्मणायगंडूषजलंदद्यात् ॥ ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः ब्राह्मणं स्वाद्वितिपृच्छेत् सुस्वाद्वितितेनोक्ते पिंडमहं करिष्येकुरुष्वेत्यनुज्ञातः ॥ उच्छिष्टसन्निधौचतुरस्रांहस्तार्धमात्रांदक्षिणप्रवणांचतुरंगुलोच्छ्रितां वेदिंनिर्माय ॥ वामदक्षिणहस्तगृहितकुशेनअपहतेतिरेखाकरणम् ॥ येरूपाणिप्रतिमुंचमाना असुराः संतः स्वधयाचरंतीतिज्वलदंगारंभ्रामयित्वारेखादक्षिणतोनिदध्यात् ॥

अद्यामुकेति वाक्य पढिके अन्नपात्रके मध्यमें धरना पितृसूक्त शिवसूक्त पढिके फिर मधुवाता ऋतायते इति पढना और ब्राह्मण धीरे धीरे भोजन करै. फिर तृप्त जानके उच्छिष्टके निकट जाके

अशनके दक्षिण अग्र जो कुश भूमिमें है तिसको पृथक् करके फिर विकिरके आसन और दान क
रना. यह स्मृति कहतीहै. अपनी अभ्युदयकी प्रथम इच्छा करके नैर्ऋत्य श्राद्ध और पार्वण
श्राद्ध प्रेतश्राद्ध दाक्षिणा और ॥ १ ॥ फिर ब्राह्मणको गंडूषभरि जलदेना. सव्य होके आचमन
अयोध्यामथुरामायेतिसिंचनम् तदुपरिच्छिन्नमूलकुशास्तरणं सव्यंकृत्वाचम्य देवताभ्यः
पितृभ्यश्चेतित्रिर्जपित्वा ततोऽपसव्यं पिंडासनम् अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतद्वादशाहेषोडश
श्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेइदंपिंडासनमवनेजनजलं तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम्॥मध्वा
ज्यतिलसर्वव्यंजनसहितंपिंडंबिल्वोपमंनिर्माय । अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतद्वादशाहेषोड
शश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धेएषपिंडस्तेमयादीयते तवोपातिष्ठताम् । आस्तृतदर्भमूलेन
पिंडोपरि करप्रोक्षणम्। सव्यंकृत्वाचम्यहरिंस्मरेत । पुनरपसव्यम् अक्षतंगृहीत्वाउदङ्मु
करके फिर अपसव्यहोके दक्षिणमुख ब्राह्मणसे पूंछैं सुस्थिर हो सुस्थिर हैं. पिण्डदान करैं, करो
उच्छिष्टके निकट चारिकोने हाथ भरकै वेदी चारि अंगुल ऊँची बानाना. और दहिने हाथमें

कुश लेइ अपहतेति वाक्य पढिके उत्तर दक्षिणरेखा करना बलता अग्नि घुमाइके रेखा दहिने और धरना अयोध्या मथुरा मायेति पढके सींचना. उच्छिन्न कुश धरना सव्य होके आचमन

स्वोभूत्वा प्रेत मादयध्वम् इतिपठित्वा वामावर्तेनश्वासंनियम्य आवर्तमानः पितरंभास्वर मूर्तिंध्यायेत् ॥ अमीमदन्ततपितरोयथाभागमावृषायिषतापिंडोपर्यक्षतानूदद्यात् ॥ अमुक गौत्रामुकप्रेतेदंपिंडप्रत्यवनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । नीवींविसृज्यसव्येनाचम्य हरिंस्मरेत् । ततोऽपसव्यंसूत्रदानम् ॥ नमोवः प्रेतरसायइतिवासः ततोगंधाक्षतादिभिरभ्य र्चयसंलपयेत् । अद्यामुकगोत्रामुकप्रेतद्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धे एतानिगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलयज्ञोपवीताच्छादनानितेमयादीयंतेतवोपतिष्ठंताम् ।

करना देवताभ्यइति पढिके तीनिवख्त फिर अपसव्यहोके पिंडोंको आसन देना लिखित विधिसे मधु तिल सर्वव्यंजन मिलाइके बेलसदृश पिंड बनावना मंत्र पढिके कुशासनके ऊपर

पिंड देना. पिंडके ऊपर हाथ धोना. सव्य होके आचमन करना हरिस्मरण करके फिर अपसव्य होके अक्षत लेके उत्तरमुख होके प्रेतमादयध्वं पढिके वामे श्वास जातिके सूर्यके सदृश

ततः सव्येनाचम्य ऋजुयुतकुशंकृत्वा ब्राह्मणकरेजलदानम् । अपांमध्येस्थितादेवाःसर्वम प्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणस्यकरेन्यस्ताःशिवाआपोभवंतुमे इतिपाठः ॥लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषुल क्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मीर्वसतिगोष्ठेषु सौमनस्यंसदास्तुमे ॥ इतिपुष्पंदद्यात् ॥ अक्षतंचा स्तुमेपुण्यंमित्यक्षतंदत्त्वा अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धेयद्दत्तंतदन्नपा नादिकमक्षय्यंतवोपतिष्ठतामितिकरेजलयुक्तमक्षय्योदकंदद्यात् ॥ उपतिष्ठतामितितेनोक्ते अघोराः प्रेताःसन्तु दक्षिणांदिशंपश्यन्पठेत् अघोराइत्यादि गोत्रंनोवर्धतां वर्धंतु ॥ दातारो नोभिवर्द्धतां वेदाः संततिरेवच ॥ श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्तुअन्नंचनोबहुभवेदति थींश्चलभेमहि॥याचितारश्चनः संतुमाचयाचिष्मकिंचन ॥ इत्युक्त्वा एताएवाशिषःसंतुइतिब्रा

पितरनको ध्यान करना. नीवीकुशत्यागना सव्य होके आचमन करना हरिका ध्यान करना

फिर अपसव्यहोके सूत्र चढावना. नमोवः यह पढिके गंधाक्षतादि चढावना. फिर सव्य होके और कोमल कुश लेके ब्राह्मणके हाथपर जल देना. अपांमध्येइति पढिके पुष्पदेना. अघोराःपितरःसंतु

ह्मणःपठेत्। कृतापसव्यः सपवित्रकुशत्रयं पिंडोपरिदत्त्वा नमोवाचयिष्ये वाच्यतामित्यनुज्ञातःपित्रेनमः इत्युच्यताम्। अस्तुनमस्तेनोक्ते ऊर्जदानम्। ऊर्जंवहंतीरमृतंघृतंपयः कीलालंपरिस्रुतमित्यूर्ज्जंदद्यात्॥ पिंडोपरिवारिधारांदद्यात् ततोनम्रीभूयपिंडमुत्थाप्याघ्राय ततः शंखेन शंखादिलेखनपूजनं च अर्घ्यपात्रमुत्तानीकृत्य ततोपसव्येनपिंडमुत्थाप्यवेद्यांस्थापयेत्।अनादिनिधनोदेवःशंखचक्रगदाधरः॥ अक्षय्यःपुंडरीकाक्षःप्रेतमोक्षप्रदोभव॥इति मंत्रपाठः॥ सव्येनदक्षिणा अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदंरजतंचंद्रदैवतंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यंवा अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रददे॥ स्वस्तीति कर्मपात्रजलंगृहीत्वा बहिःस्थितंवाजेवाजेइतिविसर्जनम्। आमावाजस्यप्रसवो

ये वाक्य पढिके दक्षिणदिशाको देखना, श्रद्धाचनोमेतिपढिके ब्राह्मण आशीर्वाद देइ, अपसव्य

होके कुश पिंडके ऊपर देके नमोवाचयिष्येइति पढिके पिताको नमः ऐसे कह तथास्तु. ऊर्जं वहंति इस वाक्यको पढिके पिंडोंके ऊपर वारिधारा देना. शीस नवाइके पिंडोंकी सुगन्धी लेना. फिर चक्र शंखका पूजन करना अर्घके पात्रको उत्तान करना और अपसव्यहोके पिंडोंको

जगम्याद्यावापृथिवीविश्वरूपे ॥ आमागंतांपितरामातराचामासोमामृतत्वेनगम्यात् इतिप्रदक्षिणीकुर्वन् त्रिर्वारिधारयाब्राह्मणंवेष्टयेत् ॥ सव्यंकृत्वाचम्य देवताभ्य इतित्रिर्जं पित्वा ततः श्राद्धीयदीपनिर्वापणम् ।पाणिद्वयंप्रक्षाल्याचम्यगृहंप्रविशेत् ॥ इतिबृहत्प्रक्रिया पद्धत्यन्तरे॥लघुप्रकारमाह॥इत्येतानिद्वादशाहपूर्वकमाब्दिकपर्यंतानिषोडशश्राद्धानिपूर्वोक्त विधिनाकुर्यादेकोद्दिष्टवत् । अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गा द्युत्तमलोकप्राप्तिकामः द्वादशाहेषोडशश्राद्धांतर्गतप्रथममासिकश्राद्धमेभिर्द्रव्यैरहंकरिष्ये

वेदीमें धरना फिर अनादिनिधनोदेवेति पढिके फिर सव्य होके दक्षिणा देना अद्यामुकेति पढिके ब्राह्मण स्वस्तिपढे पहिलेकी अनुसार आगे लिखी विधिसे करना योग्य है ॥ इति बृहत्श

क्रिया ॥ और पद्धतिके भेदसे लघुप्रकार कहतेहैं ये जो द्वादशाह है सो पूर्वहीकी अनुसार आब्दिक पर्यंत षोडशी श्राद्ध पूर्व कहि आए हैं तैसा एकोद्दिष्ट श्राद्धकी मुजब करना अद्यामुकेति

सर्वमासिकेष्वेतदेववाक्यम्।इतिप्रथममासिकश्राद्धप्रयोगःसंपूर्णः॥एवमूनमासिक.द्वितीयमासिक.त्रिपाक्षिक. तृतीयमासिक.चतुर्थमासिक.पंचमासिक.षाण्मासिक. ऊनषाण्मासिक. सप्तममासिक.अष्टममासिक.नवममासिक.दशममा.एकादशमा.द्वादशमासिक. ऊनाब्दिक अधिकमासश्चेत् अमुकाधिकमासिकंयेनैवविधिनाप्रथममासिकंकृतं तेनैवान्यान्यपिज्ञेयानिअनेनोत्तममध्यमप्रकारेणसर्वमासिकश्राद्धंबोद्धव्यम् ॥ अथसपिंडीश्राद्धप्रयोगः मध्याह्नएवात्रकालः।पूर्वपश्चिमपंक्त्याकर्तव्यम् ।पूर्वस्यांप्रेतपिंडवेदीं प्रकल्प्य तत्पश्चिमे विश्वेदेवास्तत्पश्चिमेपितरः इति स्थानंप्रकल्पयेत् । यस्यजीवन्तिपितरःपुत्रस्तुम्रियतेयदि॥सपिण्डी

वाक्यसे सर्व मासिकके संकल्प पढना, ये प्रथम मासिक श्राद्ध होगया. इसी तरहसे ऊन

मासिक० द्वितीयमास० त्रिपाक्षिक० तृतीयमास० चतुर्थमास० पंचममा० षाण्मासिक० ऊनषाण्मासिक० सप्तम० अष्टम० नवममा० दशममा० एकादशमा० द्वादशमा० ९ ऊनाब्दिक० इसविधिसे पहिले मासिककी अनुसार उसी प्रकार और जानना. उत्तम मध्यम सब मासिक श्राद्ध

करणेश्राद्धेतस्यपिंडस्यकागातिः ॥ १ ॥ पितातस्यवसुर्नामरुद्रस्तस्यपितामहः ॥ प्रपितामहआदित्यस्तस्यपिंडस्यकागातिः ॥ २ ॥ होमेतर्पणकाले च विवाहेयज्ञकर्मणि ॥ गर्भहीनं कुशं कृत्वा पुत्रदारधनक्षयः ॥ ३ ॥ श्राद्धंकृत्वातुयोभुंक्तेरवावस्तंगतेद्विजः ॥ यातुधानैस्तु तद्भुक्तंकृतमप्यकृतंभवेत् ॥ ४ ॥ नाशिषं प्रतिगृह्णीयान्नापिविकिरणंस्वधा ॥ विकिरणविना कुर्यात्प्रेतश्राद्धानिषोडश ॥ ५ ॥ विकिरेण विनान्यत्रतद्धयर्थमनुरब्रवीत् ॥ प्रेतश्राद्धानिपि

जानना योग्यहै ॥ अब सपिंडीश्राद्ध कहतेहैं ॥ मध्याह्नकालमें पूर्व पश्चिम पंक्ति कर्तव्य है. पूर्वदिशि प्रेतापिंडोंकी वेदी बनावना. उसके पश्चिम विश्वेदेवकी उसके पश्चिम पितरको आसन देना. जिसका पिता जीता होइ और पुत्र मरिजावे तो क्या किया जाय सपिंडी ॥ १ ॥ पितावसु पिताम।

ह रुद्र. प्रपितामह तिसके पिंडकी गति ॥ २ ॥ होम और तर्पण विवाह यज्ञोपवीतादि कर्ममें गर्भहीनकुश पुत्र स्त्री धनका क्षय ॥ ३ ॥ श्राद्ध कर सूर्य अस्त भयेपर जो भोजन करतेहैं

तृशब्दस्वधानमस्कारयुतानि प्रार्थनाभिरम्यतांविकिरणप्रणवरहितानिभवंति स्वधास्थानेत वोपतिष्ठतामितिकर्तव्यम्।पात्रांगुष्ठावगाहश्चउल्मुकोल्लेखनादिकम्॥ तृप्तिप्रश्नमपोशानंशेषम न्नंतथैवच । प्रदक्षिणाविसर्गश्चसीमांतगमनंतथा ॥ अष्टादशपदार्थांस्तुप्रेतश्राद्धेविवर्जयेत् ॥ अथ श्राद्धप्रक्रिया ॥ ॥ पूर्वदिश्युदङ्मुखंप्रेतब्राह्मणंसंस्थाप्य तत्पश्चिमव्यवहितेदेशेपूर्वा भिमुखंदेवब्राह्मणंसंस्थाप्य तत्पश्चिमव्यवहितेदेशेपितामहादिब्राह्मणंसंस्थाप्य सव्येनाच म्य सेचनम्।अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थांगतोपिवा । यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ इतिमन्त्रेणश्राद्धद्रव्याणिसिंचेत् यवकुशपूगीफलताम्बूलमादाय उपवीती देवब्राह्म णदक्षिणजानुस्पृष्ट्वा ॥ अद्यामुकगोत्रस्यप्रेतस्यकर्तव्यसपिंडीकरणश्राद्धार्थे अस्यां

वह राक्षसभोजन होताहै कृतविनाकृत होजाताहै ॥ ४ ॥ ५ ॥ प्रेतके श्राद्धमें १८ वस्तु वर्जितहैं.

अब श्राद्धप्रक्रिया कहतेहैं. पूर्वदिशामें प्रेतब्राह्मणको स्थापन करके सव्य हो आचमन करके सींचना अपवित्रइति पढके श्राद्धमें जो वस्तु होइ सो सब सींचना. यव तिल कुश सुपारी पान

रात्रौ श्वः कर्तव्यपितृप्रेतसपिंडननिमित्तकं पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनो विश्वेदेवाः कालकामसंज्ञकाः सपिंडनश्राद्धकरणायदेवब्राह्मणमात्रये आमंत्रितोस्मीतितेनोक्ते अक्रोधनारीतिश्रावयेत् ॥ कृतापसव्योदक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः कुशतिलतांबूलमादाय अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेस्य षोडशश्राद्धांतर्गतसपिंडीकरणश्राद्धे अनेन तांबूलाद्येन प्रेतब्राह्मणकृत्ये भावान्मयानिमंत्रितः आमंत्रितोस्मीतिप्रतिवचनम् । इतिप्रेत ब्राह्मणंनिमंत्र्य ॥ अक्रोधनैरित्यादिश्लोकद्वयंश्रावयेत् । ततःसव्येनाचम्यहरिस्मरणं पुनरपसव्येनदक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः पितृब्राह्मणजानुंस्पृष्ट्वा कुशतिलतांबूलमादाय

लेके आसीन ब्राह्मणदेवताके दक्षिणजंघाको स्पर्श करके अद्यामुकगोत्रेति वाक्यको पढके देव ब्राह्मणको आमंत्र सन्मुख करै अपसव्य होयके दक्षिणमुख बाँईजंघा नवाइके कुश तिल

पानलेना वाक्य पढके नेवत दे फिर ब्राह्मण बोलै हम नेवता पा चुके मृ० ब्राह्मणनेवतिके अक्रो धनैरिति दुइ श्लोक सुनावै फिर सव्य होके आचमन करके हरिका स्मरण करना फिर पूर्व विधि

अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तकममुकगोत्रस्यामुकशर्मणः पिता महस्यताम्बूलादिनाश्राद्धकरणायभवंतंपितृब्राह्मणमामंत्रये आमंत्रितोस्मीतिप्रतिवचनं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोरेवं वाक्यम् अक्रोधनैरितिश्रावयेत् ॥ यदा सायं न भवति प्रामादात्तदाप्रातरेवकर्तव्यमामंत्रणम् ॥ अथपादार्घः सव्येनपादार्घपात्रंसंपाद्य ऋजुकुश यवजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणनिमित्तकपितामहादित्रय श्राद्धसंबंधिनोविश्वेदेवाः कालकामसंज्ञकाःएषपादार्घ्योवोनमः । ततोपसव्येन ऋजुकु शतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धे एषपादार्घस्तेमय दीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ ततः सव्येनाचम्य विष्णुंस्मृत्वा अपसव्यम् ॥ अद्यामुकगोत्रा

करै पितामहादि तीनों श्राद्धसंबंधी विश्वेदेव कालकामसंज्ञक पदायदेना. फिर अपसव्य हो

के आचमन करके कुशयवतिल लेके आसन देना उचित है फिर अद्यामुक गोत्रेति पढिके पाद्यार्घ देना पुनः सव्य होके आचमन करके विष्णुको स्मरण करके और अपसव्य होके पूर्व

अस्मत्पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः अमुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धनिमित्तकमेषपादार्घोवः स्वधा सव्येनाऽऽचमनीयंदद्यात् ॥ प्रेतपादार्घंपितामहादिपादार्घेनियोजयेत् येसमाना इतिकेषांचिन्मते ॥ पादौप्रक्षाल्याच म्यसव्येन आगतंवःसुस्वागतंस्मइदमासनमास्यतामहमास्ये ततोपसव्येन आगतंतेसु स्वागतमिदमासनमास्यतामहमास्येइतिप्रेतब्राह्मणायआसनंदत्त्वा पुनःसव्येनाचम्यपुनरप सव्येन आगतायूयंसुस्वागतावयमिदमासनमास्यतामहमास्येइतिपितामहादिब्राह्मणा ब्रूयुः।

हीका वाक्य पढना फिर सव्यहोके वा अपसव्यहोके प्रेतपादार्घको पितामहके पादार्घमें छोडदेना. ये कोई समान है ऐसा कोईका मत है. चरण दोनों धोइके आचमन सव्य होके आओ

आगये. इस आसन पर बैठो. हम बैठे. तब अपसव्य होके प्रेतब्राह्मणको आसन देना. फिर सव्यहोके आचमन करके पुनः अपसव्य होके पुनः अपसव्य होना योग्य है. फिर पूर्वोक्त विधि

सव्येनकर्मपात्रंपूरयेत्॥कर्मपात्रमहंकरिष्ये कुरुष्व कर्मपात्रस्यासनम् ॥ आसनेपात्रम् पात्रे पवित्रमेकम् पवित्रेस्थोवैष्णव्याविति पवित्रकम् शन्नोदेवीतिजलं यवोसीतियवान् गंध पुष्पादिकंतूष्णींदद्यात् अपसव्येन तिलोसीतितिलदानम् ॥ सव्येनकर्मपात्रंसंपन्नमपसव्येनसुसंपन्नमस्तु । सव्येनाचम्य पूर्वोक्तस्वागतमितिवाक्यंकुशद्वयेनदेवेब्राह्मणद्वयं प्राङ्मुखं पितृब्राह्मणांस्त्रीनुत्तराभिमुखानुपवेश्य पितामहादित्रयासनसमीपेब्राह्मणदक्षिणवामेवाप्राङ्मुखंघृताक्तंदीपंदद्यात् ॥ पितृब्राह्मणवामभागेतिलतैलेनदीपंदद्यात् । अपवि

करना. सव्यहोके कर्मपात्रको पूरण करै हमकर्मपात्र करैं, बहुत अच्छा करो. कर्मपात्रको आसन. आसनपर पात्र. पात्रमें कुश. पवित्रेस्थो वैष्णव्याविति वाक्य पढिके शन्नोदेवीरिति जल

छोडना और मौनहोके गंध पुष्पादिक देना. अपसव्यहोके तिलदान देना फिर सव्य होके आचमन करना. प्रथम जो विधि कहीहै उसीके अनुसार कुशसे देव ब्राह्मण पूर्वमुख और पितर

त्रः पवित्रोवेति श्राद्धद्रव्यसेचनम् । ततोपसव्येन तिलकुशान्गृहीत्वा अग्निष्वात्तादिमंत्रेणादिग्बंधनंकुर्यात् ॥ ततः सव्येनाऽऽचम्य जलयवकुशमादाय प्रतिज्ञांकुर्यात् अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकाप्तिकामः तथा चामुकगोत्राणां पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणांपितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिकालकाम विश्वेदेवपूर्वकाणांषोडशश्रद्धांतर्गतसपिंडीकरणश्राद्धमहंकारिष्ये कुरुष्वेत्यनुज्ञातः गायत्रींजपेत् देवताभ्यः पितृभ्यश्चेत्यादिपठेत् ततः सव्येनयवकुशजलान्यादाय अद्येहप्रेत

ब्राह्मण उत्तरमुख बैठाके पितामहादि ३ आसनके समीप ब्राह्मणकी दहिने बाँये पूर्वमुख होय युक्त दिया देना. और पितृब्राह्मणको बाँई ओर तिलोंके तेलका दिया जलाना. सव्यहो

अपवित्रइति वाक्यको पढिके श्राद्धवस्तुओंको सींचना. अपसव्यहोके तिल कुशलेके अग्निष्वात्ते ति वाक्य पढके दिग्बंधन करना. फिर सव्यहोके आचमन करके जल यव कुशले संकल्प

पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनोविश्वेदेवाः कालकामसंज्ञकाः इदंकौशमासनंवोनमः अथयवमादायविश्वेदेवावाहनम् । विश्वान्देवानावाहयिष्ये आवाहयइत्यनुज्ञातः विश्वे देवासआगतः ॥ विश्वेदेवाः शृणुतेमᳬहवंमेयेअंतरिक्षेइत्यादिपठित्वा विश्वेदेवहस्तार्घपात्र महंकरिष्ये कुरुष्व हस्तार्घपात्रस्यासनम् । आसने पात्रं पात्रेपवित्रकं पवित्रेस्थोवैष्णव्या विति शन्नोदेवीतिजलम् यवोसीतियवान् गंधद्वारामितिचंदनम् ॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीरितितुलसी दलंपुष्पंच अपसव्येन तिलोसीतितिलदानं सव्येनदेवहस्तार्घपात्रंसंपन्नं सुसंपन्नमस्तु ॥

करना. अद्यामुकगोत्रेति वाक्यको पढिके प्रतिज्ञा करना. करा ऐसी आज्ञा पाके गायत्री जपना देवताभ्यइति पढे फिर सव्यहोके यवकुश जल लेके अद्येह प्रेतेति पढ कुशासन

देना. फिर यव लेके विश्वेदेवको आवाहन करना. विश्वेदेवको आवाहन करै करो. आज्ञापाके विश्वेदेवासआ गतेति पढके हस्तार्घ पात्र हम करेंगे करो पूर्वोक्तविधि करके करना श्रीश्चेति पढके तुलसीदल अर्घपात्रको वामहस्तमें करके । ॐ नमोनारायणायेति पढके पवित्रको अर्घपात्रके ऊपर धरके ॐ यादिव्या आपःपयसा

अर्घपात्रंवामहस्तेकृत्वाॐनमोनारायणायेतिपठित्वापवित्रकमर्घपात्रोपरिधृत्वाॐयादिव्या आपः पयसासंबभूवुर्याअतरिक्षाउतपार्थिवीर्याः॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानआपःशिवाःशꣳ स्योनाःसुहवाभवंतु इतिपठित्वा ब्राह्मणहस्तेजलंपवित्रकं च दत्त्वा पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधि नोविश्वेदेवाःकालकामसंज्ञका अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेएषहस्तार्घोवोन मः तच्चक्षुर्देवहितंपुरस्तादित्यादिपठित्वार्घपात्रंन्युब्जीकुर्यादधोमुखंसंस्थाप्य विश्वेदेवब्राह्मणं संपूज्यवस्त्रगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिभिः नमोस्त्वनंतायेत्यादिमंत्रेणपूजयेत् ॥ अद्येहामु

संबभूवुरिति पढके तब ब्राह्मणके हाथमें जलकुशदेना. फिर पितामहादित्रयश्राद्धेति पठित्वा सापिंडीकरणश्राद्धमें

प्रे. मं. हस्तार्घ देना योग्यहै. फिर तच्चक्षुरिति वाक्य पढके अर्घकी दोनी अधोमुख-नीचेमुख करके धरदेना विश्वेदेव भा. टी.
॥५६॥ ब्राह्मणको पूजन करके नमोस्त्वनंतायेति पढके अर्चनविधिमें सर्व पूर्ण सव्य अपसव्यहो जलसे घेर देना
अग्निकर्मको प्रतिज्ञा करना. हम करैं, करो सव्यहोके दोनियांके जलमें दुग्धकी आहुति हुनीं

कप्रेतपितामहादित्रयश्राद्धसंबांधिनोविश्वेदेवाः कालकामसंज्ञकाः एतान्यर्चनानिगंधाक्षत पुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलपूगीफलदक्षिणायज्ञोपवीतवासांसि वो नमः ॥ अर्चनविधौ सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ सव्यापसव्याभ्यांजलेनमंडलंकृत्वा अग्नौकरणमहंकरिष्ये कुरुष्व सव्ये नैवपुटकजलेपायसेनजुहुयात् अनेनमंत्रेण ॥ ॐअग्नयेकव्यवाहनायस्वाहा इदमग्नयेक व्यवाहनाय ॥ सोमायपितृमतेस्वाहा इदंसोमायपितृमते ॥ कव्यवाहनाय वैवस्वतायतूष्णीं शेषमन्नंपितृपात्रेणमेलयेत् । अपसव्येन इदमन्नंभूस्वामिपितृभ्योनमः ॥ ततःसव्यंकृत्वा

इति मंत्र करके देना ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनायेति हाथमें बचिजाई सो पितृबर्तनमें मिलाइदेना ॥ ॥५६॥

अपसव्यहोके इदमन्नेति पढके फिर सव्य होके आचमन करके अन्नका संकल्प करना
मधुपात्रेति वाक्य पढके मधुमय अन्न विश्वेदेवके पात्रमें रखे पात्र आलंभन करके पृथ्वीति पढै

चम्य ततोन्नसंकल्पः मधुमयान्नंविश्वेदेवपात्रेपरिवेष्य पात्रमालभ्य पृथ्वीतेपात्रंद्यौ
रपिधानमिति इदंविष्णुरिति इदमन्नमिमा आपः इदमाज्यमिदमैक्षवमेतत्सव हाविरिति
अपहताइति ॥ अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेअद्यामुकगोत्राः पिता
महप्रपितामहवृद्धप्रपितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनो विश्वेदेवाः कालकामसंज्ञका इदमन्नं
सोदकंसोपस्करणंविश्वेदेवावोनमः इतिदेवकार्यंनिर्वर्त्य ततोपसव्यम् ॥ अद्यामुकगोत्रामुक
प्रेतइदंकौशमासनंतेमयादीयतेतवोपातिष्ठताम् ॥ सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य
प्रेतकार्यंकृत्वासर्वत्राचम्य पुनरपसव्यन मोटितकुशत्रयमादाय अद्यामुकगोत्र अमुक
पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहा अमुकामुकशर्माणः अमुकप्रेतसपिंडीकरणश्राद्धे इदं

फिर दैवकार्यसे निवृत्त होके फिर अपसव्यहोके अद्यामुकगोत्रेति वाक्यको पढके कुशासन

देना सव्यहोके हाथ पांव धोइके प्रेतकर्मको करके सब आचमन करना फिर अपसव्य होके मोटक ३ कुशलेके अद्यामुकेति पढिके त्रेधाविभज्य युष्मभ्यंतेस्वधा पढके प्रेत छोडके पिताम

कौशमासनंत्रेधाविभज्य युष्मभ्यंस्वधा प्रेतंवर्जयित्वा पितामहाद्यावाहनम् । ततस्ति लमादाय अद्यामुकगोत्रानमुकपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहान् अमुकामुकशर्म णःआवाहयिष्ये आवाहयेत्यनुज्ञातः ॥ ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशंतः समिधीमहि ॥ उशंनुशतआवहपितॄन्हविषेअत्तवे इतितिलानवकीर्य ॥ आयंतुनः पितरः सोम्यासोग्निष्वा त्ताःपथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदंतोधिब्रुवंतुतेऽवंत्वस्मान् ॥ इतिपठित्वातिला नवकीर्य ततःप्रेतार्घंदद्यात् ॥ कर्मपात्रजलेनशन्नोदेवीत्यादिसमस्तमंत्रैः प्रेतहस्तार्घसंपा द्य प्रेतार्घपात्रमादाय वामहस्ते कृत्वातूष्णींपवित्रादिकं प्रेतब्राह्मणकरेदत्त्वा यादिव्ये

हादिक अद्यामुकेति आवाहन करना तिल लेके पढके आवाहन करे ॐ उशंतस्त्वानिधीमहीति वाक्य पढे तिलको छोडना फिर प्रेतार्घ देना प्रेतार्घ बायें हाथ लेके मौनहोके पवित्रादिक प्रेत

ब्राह्मणके हाथमें देना. यादिव्येति पढके प्रेतार्घपात्र बायें हाथमें लेके जलका चौथा भाग लेके अद्यामुकेति पठित्वा चौथा भाग जल अन्नपात्रके ऊपर देकर पात्रको भूमिमें धरै सव्य होके हाथपांव धोइके आचमन करके पुनः अपसव्य होके फिर पितामहादिक हस्तार्घपात्र ३ तीनिऊं

पठित्वा प्रेतब्राह्मणकरेजलंपवित्रकंचदत्त्वा जलचतुर्थभागमादाय अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धेएषहस्तार्घस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ चतुर्थ भागजलमन्नपात्रोपरि दत्त्वा पात्रंभूमौनिधाय सव्यंकृत्वा हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचम्यपुन रपसव्यम् ॥ ततः पितामहादिहस्तार्घपात्रत्रयंपृथक्पृथक्स्थापयेत् ॥ कर्मपात्रजलेनश न्नोदेवीति समस्तमंत्रैरर्घपात्राणि संपाद्य पूरयेत् ॥ ततः प्रेतार्घपात्रावशिष्टजलभागत्रयं कृत्वा पितामहादिपात्रत्रयेपृथक्पृथङ्मेलयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ येसमानाः समनसः पितरोयम

अलग अलग धरना. कर्मपात्रजलकरके शन्नोदेवीति मन्त्रपढके अर्घपात्र पूरण करना फिर प्रेतार्घपात्र जलको तीनि भाग करके पृथक् पृथक् योजना, यह मन्त्र करके येसमानाः

॥५८॥ समनसः इत्यादि और अस्मिँल्लोके शतᳫसमाइति वाक्य पढके तीसरा भाग जलका पिता महके पात्रमें छोडना. एषवोनुगतेति वाक्य पढके दूसरा भाग जल प्रपितामहके पात्रमें छोडना

राज्ये तेषांलोकेस्वधानमोयज्ञोदेवेषुकल्पताम् ॥ येसमानाःसमनसोजीवाजीवेषुमामकाः तेषां श्रीर्मयि कल्पतामास्मिँल्लोके शतᳫ समाः सृजंत्वापः पृथिवी वायुरग्निः प्रजापतिः संसृजध्वंपूर्वाभिः पितृभिःसह ॥ समानीवआकूतीः समानाहृदयानिवः॥ समानमस्तुवोमनो यथावःसुसहासति॥संगच्छध्वंसंवदध्वंसंवोमनांसिजानताम् ॥ देवाभागंयथापूर्वेसंजानाना उपासते ॥ इत्यैतैर्मंत्रैःपितामहपात्रेतृतीयभागंजलंक्षिपेत् ॥ एषवोनुगतः प्रेतः पितरस्तं ददामिवः ॥ शिवमस्त्वितिशेषाणांजायतांचिरजीवितम् ॥ पुनर्येसमानाइतिमंत्रेणद्वितीय भागंजलंप्रपितामहपात्रेनिक्षिपेत् ॥ पुनः येसमानाइति संसृजंत्वापः०॥ एषवोनुगतइत्यादि पठित्वा प्रेतार्घपात्रस्थतृतीयभागंजलंवृद्धप्रपितामहपात्रेक्षिपेत् । सव्येनाचम्य ततोपस

पुनः येसमानेति वाक्य पढके तीसरा भाग जल वृद्धप्रपितामहके पात्रमें छोडना भाग है ॥५८॥

फिर सव्य होके आचमन करके फिर अपसव्यहोके पितामहपात्रको बाँये हाथमें लेना कुश अन्नके पात्रभर धरदेना यादिव्या इसको पढके अद्यामुकगोत्रेति वाक्य उच्चारण करके एष हस्तार्घस्तुभ्यं स्वधा इति ऐसे प्रपितामह वृद्धप्रपितामहकोभी हस्तार्घ देना

ऽयं पितामहापात्रंवामहस्तेकृत्वा पवित्रमन्नपात्रोपरिधृत्वा यादिव्या इति पठित्वा अद्यामुकगोत्र पितामहामुकशर्मन्नेषहस्तार्घस्तुभ्यं स्वधा एवं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोरपिहस्तार्घंदद्यात् ॥ प्रेतहस्तार्घपात्रंप्रेतब्राह्मणवामपार्श्वेन्युब्जीकृत्यप्रेतायस्थानमसीतितदुपरिकुशान्निक्षिप्य ततः सव्येनाचम्य अपसव्येन पितृपात्रंपितामहादिद्विजवामपार्श्वेन्युब्जी

प्रेतहस्तार्घ पात्रको प्रेतब्राह्मणके बाँये बगल अधोमुख करके कुशऊपर धरदेना. फिर सव्यहोके आचमन करना. फिर अपसव्य होकर पितृपात्रको पितामहादि ब्राह्मणके वामबगलमें अधोमुख करके धरना. अब जल दूध दही घी चावल तिल सरसों ३ कुश फूल दिया

इत्यादि आचमन हस्तार्घपर्यंत स्वधा पढके देना उचित है फिर पूजना ॥ नमोस्त्वनंतायेति वाक्यको पढके प्रेतसंज्ञक ब्राह्मणको गंधादिक करिके पूजन करना. अक्षय्यतृप्तिहेतु

कृत्याधोमुखंनिवेशयेत् ॥ अथजलक्षीरदधिघृततंडुलतिलसर्षपकुशत्रयाणिपुष्पाणिदीपं चइतिविशेषः आचमनंहस्तार्घपर्यंतंप्रेतपितरंस्वधापितृभ्योदद्यात् ॥ ततोर्चनम् । नमोस्त्व नंतायेतिगंधपुष्पादिभिः प्रेतब्राह्मणंसंपूज्य अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यसपिंडीकरणश्राद्धे गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनीदमर्चनंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम्॥सव्यम् आचम्य हस्तौ पादौप्रक्षाल्य ततोऽपसव्यंपितामहादिब्राह्मणंगंधादिभिःसंपूज्य अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेत स्यसपिंडीकरणश्राद्धेअमुकगोत्राःपितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहाअमुकामुकशर्माणःइद मर्चनमेतान्यत्रपत्राक्षतगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनियथाभागंवासांसिअस्याक्षय्यतृप्तिहेतो स्त्रिधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा ततोमधुमयान्नपात्रमालभ्य ततोऽपसव्येनप्रेतायान्नंदद्यात् ॥

धेभज्ययुष्मभ्यंस्वधा. फिर मधुमिलित अन्नके पात्रमें लेकरके अपसव्य होके प्रेतको

अन्नदे दना, मंडलधारके पतरीधारिके अन्न परोशि देना, वाक्य पढिके, निगाह करना अद्या मुकेति पढिके सव्य होके हाथ पांव धोइके हरिको स्मरण करना ॥ फिर अपसव्य होके पिता

ततोमण्डलं विधाय तदुपरिपत्रावलिं दत्त्वान्नं परिवेष्य पृथिवीतेपात्रमितिपठित्वावगाहनं कृत्वाअद्यामुकगोत्रामुकप्रेतइदमन्नंसोपस्करणं मयादीयतेतवोपतिष्ठतां सव्येन हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचम्यहरिंस्मरन् ततोऽपसव्यं पितामहादिपात्रेअन्नपरिवेष्य पृथिवीतेपात्रमितिपात्र मालभ्यइदंविष्णुरिति इदमन्नमिमाआपःइदमाज्यमिदमैक्षवमेतत्सर्वंहविःअपहताअसुराइति अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धे अद्यामुकगोत्राः पितामहप्रपि तामहवृद्धप्रपितामहाःअमुकामुकशर्माणः इदमन्नंसोपस्करणंत्रेधा।विभज्य युष्मभ्यंस्वधाइदं तेप्रत्यापोशानंयथासुखंजुषध्वम् । आपोशानंदद्यात् ततःसव्येनमधुवातादिपठनम्॥ॐमधु

महादिपात्रमें अन्न परोसिके आगेलिखित वाक्य करके करना योग्य है ॥ अपहतासुरेति अद्यामुकगोत्रस्येति वाक्य पढके आपोशन प्रतिआपोशन सुखपूर्वक आपोशन देना उचि

तहै, फिर सव्यहोके मधुवातेति पढना और मधुमधुमधु अन्नके संकल्पसिद्धिहो तब सहस्रशीर्षा पढना और ध्यान करना, और अपसव्यहोके विकिरके आसन देना, दक्षिण ओर बृहस्पतिके

वाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवः ॥ माध्वीर्नःसंत्वोषधीः॥मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳरजः॥मधुद्यौरस्तुनःपिता॥मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाꣳअस्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गावोभवंतुनः॥ मधु ३ अन्नसंकल्पसिद्धिरस्तु । सहस्रशीर्षापठनंध्यानंचकृत्वा अपसव्येनदक्षिणस्यांदिशिविकिरासनंदद्यात् ॥ तथाचबृहस्पतिः ॥ आभ्युदयिकेपूर्वस्यात्पार्वणेपश्चिमेभवेत् ॥ तीर्थादावुत्तरेकुर्यात्प्रेतश्राद्धेतुदक्षिणे ॥ असंस्कृतप्रमीतानामित्याद्यासनम् ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवाइत्यादिविकिरदानम् ॥ सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्यद्विराचम्यहरिंस्मृत्वा अपसव्यं प्रेत

प्रमाण देतहैं कि, अभ्युदयमें पूर्वमें और पार्वणमें पश्चिमको प्रेतश्राद्धमें दक्षिण असंस्कृत इस वाक्यको पढके आसन देना अग्निदग्धेति इस मन्त्रकारिके विकिरदान देना, सव्य होके

दुइवार आचमन करिके हरिको स्मरण करके अपसव्य होके प्रेतब्राह्मणसे पूँछना और गंडूष भरि जलदेना स्वादिष्ट है ? है, फिर पितामहादि द्विजनको जलदेना तृप्तहो ऐसा पूंछना तो बोलैं हम सब तृप्त हैं शेष बचा जो अन्न है सो अपने मित्र सुहृदयुक्त भोजनकरे पिंडदान हम

ब्राह्मणायपृष्ट्वागंडूषजलंदद्यात् । स्वदितामितिपृच्छेत् स्वदितामिति ॥ ततःपितामहादिद्विजान्प्रतिजलादानं तृप्ताः स्थेतिपृच्छेत् तृप्ताःस्मः शेषमन्नंकिंक्रियतामिष्टैःसहभुज्यतां पिंडदानमहंकरिष्ये कुरुष्वेत्यनुज्ञातः स्थानद्वये पूर्वापरेवेदीकृत्वा पूर्वदक्षिणोत्तरायतां प्रेतवेदिमपरेपूर्वपरायतांपितामहादिवेदिंच कृत्वा अपहता असुरारक्षाꣳसिवेदिषदइतिवेद्यां रेखाकरणम्॥उभयोरुपर्यंगारंभ्रामयित्वायेरूपाणिप्रतिमुंचमानाऽसुराःसंतःस्वधयाचरंति॥ परापुरोनिपुरोयेभरंत्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥इत्युल्मुकभ्रामणम्॥अयोध्यामथुरामा

करैं करो ऐसा बोलै दोनों स्थानमें वेदी करै. पूर्वमें परमेंभी. पूर्व दक्षिण उत्तर लंबी प्रेतवेदीकरै. अवर पूर्वा परा पितामहादि वेदी रचके फिर अपहता असुरारक्षाꣳसिवाक्य पढके रेखा खींचन

तहै, फिर सव्यहोके मधुवातेति पढना और मधुमधुमधु अन्नके संकल्पसिद्धिहो तब सहस्रशीर्षा पढना और ध्यान करना, और अपसव्यहोके विकिरके आसन देना, दक्षिण ओर बृहस्पतिके

वाताऋतायतेमधुक्षरंतिसिंधवः ॥ माध्वीर्नःसंत्वोषधीः॥मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवᳬं रजः॥मधुद्यौरस्तुनःपिता॥मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाᳬंअस्तुसूर्यः ॥ माध्वीर्गावोभवंतुनः॥ मधु ३ अन्नसंकल्पसिद्धिरस्तु । सहस्रशीर्षापठनंध्यानंचकृत्वा अपसव्येनदक्षिणस्यांदिशिविकिरासनंदद्यात् ॥ तथाचबृहस्पतिः ॥ आभ्युदयिकेपूर्वस्यात्पार्वणेपश्चिमेभवेत् ॥ तीर्थादावुत्तरेकुर्यात्प्रेतश्राद्धेतुदक्षिणे ॥ असंस्कृतप्रमीतानामित्याद्यासनम् ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवाइत्यादिविकिरदानम् ॥ सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्यद्विराचम्यहारिंस्मृत्वा अपसव्यं प्रेत

प्रमाण देतहैं कि, अभ्युदयमें पूर्वमें और पार्वणमें पश्चिमको प्रेतश्राद्धमें दक्षिण असंस्कृत इस वाक्यको पढके आसन देना अग्निदग्धेति इस मन्त्रकारिके विकिरदान देना, सव्य होके

दुइवार आचमन करिके हरिको स्मरण करके अपसव्य होके प्रेतब्राह्मणसे पूँछना और गंडूष भरि जलदेना स्वादिष्ट है ? है, फिर पितामहादि द्विजनको जलदेना तृप्तहो ऐसा पूंछना तो बोलैं हम सब तृप्त हैं शेष बचा जो अन्न है सो अपने मित्र सुहृदयुक्त भोजनकरे पिंडदान हम

ब्राह्मणायपृष्ट्वागंडूषजलंदद्यात् । स्वदितामितिपृच्छेत् स्वदितामिति ॥ ततःपितामहादिद्विजान्प्रतिजलादानं तृप्ताः स्थेतिपृच्छेत् तृप्ताःस्मः शेषमन्नंकिंक्रियतामिष्टैःसहभुज्यतां पिंडदानमहंकरिष्ये कुरुष्वेत्यनुज्ञातः स्थानद्वये पूर्वापरेवेदीकृत्वा पूर्वदक्षिणोत्तरायतां प्रेतवेदिमपरेपूर्वपरायतांपितामहादिवेदिंच कृत्वा अपहता असुरारक्षाꣳसिवेदिषदइतिवेद्यां रेखाकरणम् ॥ उभयोरुपर्यंगारंभ्रामयित्वायेरूपाणिप्रतिमुंचमानाऽसुराःसंतःस्वधयाचरंति ॥ परापुरोनिपुरोयेभरंत्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ इत्युल्मुकभ्रामणम् ॥ अयोध्यामथुरामा

करैं करो ऐसा बोलै दोनों स्थानमें वेदी करै. पूर्वमें परमेंभी. पूर्व दक्षिण उत्तर लंबी प्रेतवेदीकरै. अवर पूर्वा परा पितामहादि वेदी रचके फिर अपहता असुरारक्षाꣳसिवाक्य पढके रेखा खींचन

दोनोंरेखापर अंगार घुमावै. येरूपाणि प्रतिमुंचेति वाक्य पढना अयोध्यामथुरामायेति पढिके
वेदी सींचना. मूलहीन कुश रेखापर धरना सव्यहोके आचमन करके देवताभ्य इति पढके
फिर अपसव्यहोके प्रेतापिंडासनपर जलदेना अवनेजन दोनियां भरके धरना अद्यामुकगोत्र

येतिवेदिकासेचनं छिन्नमूलकुशास्तरणं सव्यमाचम्य देवताभ्यइतिजपित्वा ततोऽपसव्येन
प्रेतपिंडासनावनेजनजलंदद्यात् । अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गा
द्युत्तमलोकप्राप्तिकामः इदंपिंडासनावनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । सव्येनहस्तौ
पादौप्रक्षाल्याचम्य पुनरपसव्यं पितामहादिभ्यः पिंडासनावनेजनजलंदद्यात् अद्यामुकगो
त्रपितामहामुकशर्मन्निदंपिंडासनावनेजनजलम् अत्रावनेनिक्ष्वतेस्वधा एवंप्रपितामहवृद्ध
प्रपितामहयोः पिंडासनंदद्यात् ॥ अथापिंडदानम् ॥ अद्यामुकगोत्रपितरमुकप्रेतप्रेतत्ववि

पढके फिर सव्य होके हाथ पांव धोइके आचमन करके फिर अपसव्य होके पितामहादिका
पिंडका आसन कुशके अवनेजनजल दोनियांसे देना योग्य है अब पिंडदान कहतेहैं अद्यामुक

गोत्र पिताऽमुकशर्मेति वाक्य पढके पितर छठे पिंड देना लेपभाजादि करना. सव्य होके आचमन करके फिर अपसव्यहोके अक्षत लेके उत्तरमुखहोके सूर्यसदृशपितरनको ध्यान करना

मुक्तिपूर्वाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः एषपिंडः अमृतस्वरूपः अक्षयतृप्तिहेतोस्तेमया दीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ लेपभागादिकंकरप्रोक्षणंदद्यात् ॥ सव्येनाचमनम् अपसव्यम् अक्षतान्गृहीत्वाउदङ्मुखीभूयभास्वरमूर्तिंपितरंध्यायेत् । अत्रप्रेतमादयध्वम् । यथाभागमा वृषायिषत पिंडोपरि अक्षतान्दद्यात् ॥ ततः पिंडप्रत्यवनेजनजलं दद्यात् । अद्या मुकगोत्रामुकप्रेतइदंपिंडप्रत्यवनेजनजलंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् । सव्येनहस्तौपादौ प्रक्षाल्याचम्य ततोऽपसव्येन पितामहादीनां पिंडं दद्यात् । अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धे अद्यामुकशर्मन् पितामहएष।पिंडोऽमृतस्वरूपः अक्षय्यपितृतृप्तिहे

अत्र प्रेतमादयध्वमिति पढिके पिंडोंके ऊपर अक्षत छोड देना. फिर अवनेजन दोनियांका जल पिंडोंपर छोडना । फिर सव्य होके हाथ पांव धोइके आचमन करके फिर अपसव्य होके

पितामहादिकको पिंड देना, पहिलेकी अनुसार मूलपुरुषेभ्योनम इत्यादि पढके फिर लेपभाग और करप्रोक्षण करना, सव्यहोके अक्षतलेके उत्तरमुख होके श्वासजीतिके पितरनको ध्यान करना,

तोस्तुभ्यंस्वधा ॥ एवंपितामहवृद्धप्रपितामहयोरपिपिंडंदद्यात् । मूलपुरुषेभ्योनमः अग्निविभागेइत्यादिलेपभागभुजस्तृप्यन्तु इतिकरप्रोक्षणम् ॥ सव्येनाचम्याक्षतान्गृहीत्वो दङ्मुखीभूयश्वासंनियम्यपितरंध्यायेत् । अत्रपितरोमादयध्वम् यथाभागमावृषायिषत ॥ अथसव्येनदक्षिणाभिमुखोभूत्वाअमीमदंतपितरोयथाभागमावृषायिषत । इत्यक्षतान्पिंडोपरिदद्यात् । ततः पिंडप्रत्यवनेजनजलंदद्यात् । अद्यामुकगोत्रपितामहामुकशर्मन् इदंपिंडप्रत्यवनेजनजलंतुभ्यंस्वधा एवंप्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोरप्यवनेजनजलंदद्यात् । ततोनीवीविस्रंसनम्॥ततःप्रेतपिंडार्चनम्।अथसूत्रदानम् ॥नमस्तेप्रेतरसायप्रेतोवासःकुमारः पुष्करस्रजं यथेहपुरुषोसत् इतिसूत्रदानम् ॥ प्रेतापिंडंगंधादिभिःसंपूज्यअद्यामुकगोत्रस्य

फिर दक्षिण मुखहोके अपसव्य होके अक्षत पिंडपर छोडना फिर अवनेजनजलको छोडना एही

तरह पितामह प्रपितामहादिकनको करना टेटेका कुश निकारिदेना. पिंडोंका पूजन करना नमस्तेति पढके सूत्र चढावना. दूध; चाउर, धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, पान, सुपारी, वस्त्र, सुवर्ण, रत्नादि

पितुरमुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धेइदंपिंडार्चनम् । अत्रगंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यादीनिवासांसितेमयादीयन्तेतवोपतिष्ठंताम्॥दुग्धेनोर्जंदद्यात्॥सव्यंहस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य ततोऽपसव्येनापितामहादिपिंडार्चनंगन्धादिभिः॥अथसूत्रदानम्॥ नमोवःपितरोरसायेतिपठित्वापिंडोपरिसूत्रंदत्त्वा गन्धाद्यैः संपूज्य। अद्यामुकगोत्रस्यपितुरमुकप्रेतस्यप्रेतत्वाविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामः सपिण्डीकरणश्राद्धे अद्यामुकगोत्राः पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहाअमुकामुकशर्माणः इदंपिंडार्चनमत्रगन्धाक्षतपष्पधूपदीपनैवेद्यादीनिवासांसिचत्रेधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा ॥ अथाद्यंप्रेतपिंडांत्रिधाकृत्वास्वर्णरजतक्षुरैः कुशैर्वा येसमानाइतिद्वाभ्यांमन्त्राभ्यांपिंडंकल्पयित्वाप्रथमखंडंपितामहपिंडेनियोजयेत् ॥ द्वितीयंखंडंप्रपि

करके पिंडोंकी पूजा कारिके वाक्य पहिलेकी अनुसार पढि फिर प्रेतकी पिंडा त्रीणि ३ खंडकरना

सोनेके या चांदीके छूराते या कुश करके येसमाना इस वाक्यके दुइ मन्त्र पढके पिंडा रचिके पहिले पितामहके पिंडमें मिलावे, दूसरे खण्डको प्रपितामहके पिंडमें मिलावे, ३ तीसरा खण्ड

ताम पिंडेयोजयत् तृतीयंखण्डंवृद्धप्रपितामहपिंडेयोजयेत् ॥ ततःपितामहादिपिंडत्रयंप्रेत पिंडभागेनवर्तुलंकृत्वामंत्रंपठेत् तत्रमंत्रः ॥ ॐयेसमानाःसमनसःपितरोयमराज्यंतेषांलोकः स्वधानमोयज्ञोदेवेषुकल्पताम् ॥ येसमानाःसमनसोजीवाजीवेषुमामकाः ॥ तेषांश्रीर्मयिक ल्पतामस्मिँल्लोकेशतꣳसमाःसंसृजंतुत्वापृथिवीवायुरग्निः प्रजापतिः॥संसृजध्वंपूर्वेभिस्त्रिभिश्च पितृभिःसह ॥ समानीवआकूतिःसमानाहृदयानिवः॥समानमस्तुवोमनोयथावःसुषहासति संगच्छध्वंसंवदध्वंसंवोमनांसिजानताम्॥देवाभागंयथापूर्वेसंजानानाउपासते॥एषवोनुगतः प्रेतःपितरस्त्वांददामिवः॥शिवमस्त्वतिलोकानांजायतांचिरजीविनाम्॥इतिमंत्रद्वयेनत्रयेणवा

वृद्धप्रपितामहके खण्डमें मिलावे फिर पितामहादि ३ तीनों पिंडा गोलियाइकै यह मन्त्र पढै येसमाना समनसेत्यादि शिवमस्तुकरि चिरंजीवे दुइ मन्त्र या तीनि मन्त्र पढके एक एक पिंडा

पितामहादि सरूपकगोलियाइके अर्घादि करिके पूजके नमोस्त्वनंतायेति पढके गंधादि करके पूजन करके फिर सव्य होके आचमन करके विश्वेदेव आदि जो ब्राह्मणके हाथ कुश ३ तीनि देकर सुप्रोक्षितमस्तु इत्यादि वाक्य पठन करि लिखित विधिसे करना फिर अपसव्यहोके पितामहादिक ब्राह्मणके हाथमें कुश देके पूर्वोक्त विधि करना. फिर अक्षत जलका देना. अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मण इत्यादि पढना फिर सव्य होके अघोराः पितरः संतु इस

प्रत्येकंप्रेतपिंडभागेनपितामहादिपिंडंसमवर्तुलंकुर्यात् ॥ प्रत्येकमर्घादिभिरभ्यर्च्य नमोस्त्वनंतायेतिगंधादिभिः संपूज्य सव्येनाचम्य विश्वेदेवादिब्राह्मणकरेषुकुशत्रयंदत्त्वा सुप्रोक्षितमस्तु शिवा आपः संतु सौमनस्यमस्तु अक्षतंचारिष्टंचास्तु । पुनरपसव्येनपितामहादिकब्राह्मणंप्रतिसुप्रोक्षितमस्त्वित्युक्त्वापार्वणवत् तेजोमूर्द्धाभिषेकः । अस्मत्कुलेदीर्घमायुरस्तुशांतिरस्तुपुष्टिरस्तुवृद्धिरस्त्वितिकुशोदकसहितेनमूर्धानमभिषिंचेत् ॥ सव्यम् । अपांमध्येस्थितादेवाःसर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणस्यकरेन्यस्ताःशिवाआपोभवंतुमे ॥ लक्ष्मीर्वस

मंत्रको पढके अन्नादिकदान अक्षय्यहेतु करे, फिर अपसव्यहोके स्वधा वाचन करना दोनोंके

तिपुष्पेषुलक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मीर्वसति गोष्ठेषुसौमनस्यंसदास्तुमे ॥ अथाक्षय्योदक
दानम् ॥ अमुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्मणः दत्तैतदन्नपानादिकंयद्दीयमानमुदकंतदक्षय्यमस्तु
अद्यामुकगोत्रस्यपितामहस्यामुकशर्मणः अत्रश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकं यद्दीयमानमुद
कंतदक्षय्यमस्तु । एवंप्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोः षष्ठ्येकवचनेनाक्षय्योदकंदद्यात् ॥
ततः सव्यम् ॥ ॐअघोराःपितरःसंतु।गोत्रन्नोवर्द्धतां दातारोनोभिवर्धन्तां वेदाःसंततिरेवच ॥
श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्तु॥अन्नंचनोबहुभवेदतिथींश्चलभेमहि ॥याचितारश्चनःसंतु
माचयाचिष्मकंचन ॥ इत्येवाशिषःसंतु॥ततोऽपसव्यंस्वधावाचनम् । पुटकमध्येतिलजलप
वित्रकंगृहीत्वा स्वधांवाचयिष्ये ॥ अमुकगोत्रायामुकशर्मणेपित्रेस्वधोच्यतामस्तुस्वधा
अद्यामुकगोत्रायामुकशर्मणेपितामहायस्वधोच्यतामस्तुस्वधा । एवंप्रपितामहवृद्धप्रपिताम

मध्यमें तिल यव कुश लेके स्वधा पढे अमुकगोत्रेति फिर ऊर्जं वहंतीरमृतेति मंत्रको पढके

दुग्ध चढाना फिर पिंड उठाइके सूंघिके पृथक् करिदेना और सव्य होके शंखचक्र लिख के पूजन करना और गयायां पितृरूपेणेति पढके दोनियां सब उत्तान करिदेना ब्राह्मणको

हाभ्यांदद्यात् ॥ ततऊर्जदानम्–ॐ ऊर्जंवहंतीरमृतंघृतंपयःकीलालंपरिश्रुतम् ॥ स्वधास्थत र्पयतमेपितॄन् ॥ इत्यूर्जंदत्त्वा पिंडाः संपन्नाः सुसंपन्नाभवंतु पिंडानुत्थापयामि पिंडानुत्था प्याघ्रायचालयेत् । सव्येनशंखचक्रंलिखित्वा पूजनंचविधाय तदुपरिगयायांपितृरूपेणेति स्थापयेत् ॥ अर्घपात्रोत्थापनंकृत्वादक्षिणांदद्यात् ॥ अद्येहकृतैतत्सपिंडीकरणश्राद्धांगभू तपितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिकालकामसंज्ञकविश्वेदेवश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दक्षिणांहिरण्यम ग्निदैवतं तन्मूल्योपकल्पितं द्रव्यं वा अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ततोऽपसव्येनपित्रर्घपात्रमुत्तानीकृत्य अमुकगोत्राणांपितामहप्रपितामहवृद्धप्र

दक्षिणा देना. अद्यकृतैतत्सपिंडीकरणेति वाक्य पडके अपसव्यहोके पितृअर्घ पात्रको उत्तान करी देना और दिवा बुझाइ देना और विसर्जन करना. सव्यहोके

विश्वेदेवेति वाक्य करके विसर्जन करना और कर्मपात्रके जलसे प्रदक्षिणा करके आचमन करके और ब्राह्मणसे पूंछै श्राद्धमें जो कियाहो सो अच्छी भई ब्राह्मणके वचनसे संपूर्ण अच्छी भई और सव्य होके आचमन करके हरिको स्मरण करिके आयुः प्रजां

पितामहानाममुकामुकशर्मणां विश्वेदेवपूर्वककृतैतत्सपिंडीकरणश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंदक्षिणांरजतंचंद्रदैवतंतन्मूल्योपकल्पितंद्रव्यं वा अमुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ दीपनिर्वापणंकुर्यात्॥विसर्जनम्॥सव्येनविश्वेदेवादिकान्विसर्जयेत् ॥ वाजे वाजेवतवाजिनोनोधनेषुविप्रा अमृताऋतज्ञाः ॥ अस्यमध्वः पिबतमादयध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः॥आमावाजस्यप्रसवोजगम्यादाद्यावापृथिवीविश्वरूपे ॥ आमागंतांपितरामातराचामासोमोअमृतत्वेनगम्यात् ॥ इतिकर्मपात्रोदकेनप्रदक्षिणीकृत्वाचामेत् ॥ अत्रश्राद्धेयत्कृतं तत्सुकृतमस्तु

धनेति वाक्य पढके आसीस करना वर्षके अंतमें नित्यश्राद्धप्रकार वाक्य कहतेहैं अद्यामुकगोत्रेति वाक्य पढना और सर्व वस्तु देना । अब सपिंडीकरणके अन्तमें तेरह

वेंदिन पदकदान कहतेहैं. तैसा गरुडसे भी श्रीकृष्ण भगवान् कहतेहैं. छाता, उपानह, कपडा, रुपया और कमण्डलु, आसन, बर्तन सात वस्तु पद कहावताहै सर्व वस्तु देना अच्छी अच्छी
यन्नकृतंतत्सर्वंब्राह्मणवचनात्परिपूर्णमस्तु ॥ सव्येनाचम्यहरिंस्मृत्वा आयुःप्रजांधनंविद्यां स्वर्गंमोक्षंसुखानिच ॥ प्रयच्छंतुमहाराज्यंप्रीतास्तुभ्यंपितामहाः॥इत्याशिषःसन्तु॥अथाब्दांतेनित्यश्राद्धप्रकारवाक्यम् ॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यापितुरमुकशर्मणः अक्षय्यस्वर्गाद्युत्तमलोकवासकामनयाद्वादशाहमारभ्यआब्दिकपर्यंतमिदं षष्ट्यधिशतत्रयकौशिकाजलपूर्णघटैकसहितंतिलतंडुलदुग्धजलैर्युतं महापथोपशांत्यर्थमामान्नश्राद्धंतुभ्यंस्वधामयादीयतेतवोपातिष्ठतामितिकोचित् ॥ अथसपिंडीकरणांतेत्रयोदशाहेपददानम् । तथाचगरुडेकृष्णवाक्यम्।छत्रोपानहवस्त्राणिमुद्रिकाचकमंडलुः ॥ आसनंभाजनंचवपदंसप्तविधंस्मृतम्॥ १॥देयानिसर्ववस्तूनिवारिष्टानित्रयोदशे ॥ योददातिमृतस्येहजीवन्वाप्यात्महेतवे ॥२॥
तरहकी देना उचित है मृतकके वास्ते या अपने हेतुको सपिंडीके अन्तमें हवनविधि कहतेहैं वेद पढते

सन्त ब्राह्मणके घरजाके पूर्वमुख बैठके घडा ली आइके कुंकुम हरदीआदि करके गणेशको स्थापन करे पहिले हाथ जोरिके गणेशका ध्यान करना और संकल्प पढना 'श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य' इत्या दिवाक्य पढके संकल्प

अथसापिंडचन्ते हवनविधिः ॥ वेदान्पठन्ब्राह्मणः गृहंगत्वा पूर्वमुखोपविष्टःतत्रघटमानीय कुंकुमादिनागणपतिंस्थापयेत् ॥ प्रथमस्त्वंजलिंवद्धा गणपतिंध्यायेत ॥ अथ संकल्पः श्रीमद्भगवतोमहापुरुषस्य ॐ विष्णुः ३ अद्योन्नमः परमात्मनेइत्यादिपठित्वा ॥ मासानांमासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे यथानक्षत्रयो गलग्नमुहूर्तकरणान्वितायामसुकगोत्रोत्पन्नामुकशर्मामुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्मणः कृतैत त्सपिंडनांते हवनकर्मकर्तुंपृथ्वीगौरीगणेशकलशस्थापनं नवग्रहाद्यावाहनपूजनंयथासामग्री भिःप्रतिज्ञामहंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्पः ॥ ततः स्वस्त्ययनं ततोभूमिस्पर्शनम् गौरीस्पर्शः कलशकरणम् कलशगणपत्यादीनावाह्यपूजयेत् ॥ नवग्रहाणामावाहनादिकंचकुर्यात् ॥

करना स्वस्त्ययन पढना भूमिस्पर्श करना गौरीस्पर्श कलशबनावना कलश नवग्रहादिक पूजन करना तदन्तमें

ब्राह्मणका वरण करना तदंतमें पलंग दान देना पूजाविधान करना, अद्यकृतैतत्० अमुकगोत्रेति वाक्य पढके छाता पनही इत्यादि ब्राह्मणको देना, और जल घडा द्रव्य शक्कर सहित नाना

तदंतेब्राह्मणवरणम्॥तदंतेशय्यादानंपूजादानादिसर्वंविधेयम्॥पददानेहवनंचेतिकिंवा हवनं पददानंवेतिकेचित् ॥ अथत्रयोदशाहेपददानेपूजांविधाय प्रथमंवरणं पश्चात्पददानम्॥अद्ये त्यादिपठित्वा अमुकगोत्रोत्पन्नोमुकशर्मामुकगोत्रस्यपितुरमुकशर्मणः कृतैतत्सपिंड नांतशुद्धश्राद्धानंतरेत्रयोदशाहेअमुकगोत्रप्रवरवेदाध्यायिनंब्राह्मणममुकशर्माणंहवनकर्मकर्तु मेभिर्गंधाक्षतपुष्पादियज्ञोपवीतद्रव्यवस्त्रादिभिस्त्वामहंवृणे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनं ब्राह्म णोवदेत् इतिवरणम् ॥ अथपददानम् ॥ ॐतत्सदद्यामुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्मामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः सपिंडनशुद्धश्राद्धानंतरे त्रयोदशाहे अक्षय्यस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामो भूरिभोगभोजनार्थमेतानिच्छत्रोपानहवस्त्रमुद्रिकाकमंडल्वासनभाजनानिसप्तविधपदानि त्र

नामगोत्र अनेक ब्राह्मणोंको भाग अलग अलग एक एक ब्राह्मणको देना, परोक्षे दातुमहमुत्सृ

जेइति वाक्यको पढे और दक्षिणा देना, अद्यकृतैतत्पददानेति पढना। और ब्राह्मण स्वस्ति वाक्य
पढै ॥ इति श्रीप्रेतमंजरीभाषाटीका समाप्ता ॥ भाद्रमासे सिते पक्षे सप्तम्यां चंद्रवासरे ॥
कृतेयं गुणसंयुक्ता भाषायां प्रेतमंजरी ॥ १ ॥ अयोध्यादक्षिणे चैव प्रयागादुत्तरे तथा ॥ वाराणस्याः

योदश अन्यदपि व्यजनसजलकुंभद्रव्यशर्करासहितानि समुदायेभ्यो नानाना
मगोत्रप्रवरवेदाध्यायिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाभागं विभज्य प्रत्येकं यथानामगोत्रप्रवरवेदाध्या
यिनेब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे॥परोक्षेदातुमहमुत्सृजेइतिवाक्यंपठेत्॥दक्षिणांचअद्यकृतैतत्प
ददानसांगतासिद्ध्यर्थमित्यादि स्वस्तीतिप्रतिवचनंब्राह्मणोवदेत्॥इति प्रेतमंजरी समाप्ता॥

पश्चिमे च सिन्दिकाख्यानदीतटे ॥ २ ॥ भगवत्पुराख्यग्रामस्य द्विजोऽहं विष्णुसेवकः ॥ लक्ष्मीप्रपन्न
नामाहं ग्रंथोक्तं लिखितं मया ॥ ३ ॥ इति प्रेतमंजरीभाषाटीका समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

॥ इति भाषाटीकासहिता प्रेतमञ्जरी सम्पूर्णा ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS